بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

विश्व में अहमदिया मुस्लिम जमाअत की प्रमुख प्रगतियाँ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

अंक 51-52

मूल्य 600 रुपए

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

वर्ष 7

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

Postal Reg. No. GDP 45/2020-2022 | 22-29 फ़तह 1401 हिज्री कमरी | 22-29 दिसम्बर 2022 ई. | 27 जमादिऊल अव्वल 5 जमादिउल सानी 1444 हिज्री कमरी

मैं बड़े दावे और दृढतापूर्वक कहता हूँ कि मैं सत्य पर हूँ और ख़ुदा तआला की कृपा से इस मैदान में मेरी ही विजय है

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

मैं बड़े दावे और दृढतापूर्वक कहता हूँ कि मैं सत्य पर हूँ और ख़ुदा तआला की कृपा से इस मैदान में मेरी ही विजय है और जहां तक मैं दूरदर्शिता से काम लेता हूँ समस्त संसार को अपनी सच्चाई के कदमों के नीचे देखता हूँ और निकट है कि मैं एक महान विजय प्राप्त करूं क्योंकि मेरी ज़ुबान के समर्थन में एक और ज़ुबान बोल रही है तथा मेरे हाथ की दृढ़ता के लिए एक और हाथ चल रहा है जिसे संसार नहीं देखता परन्तु मैं देख रहा हूँ। मेरे अन्दर एक और रूह बोल रही है जो मेरे एक-एक शब्द और एक-एक अक्षर को जीवन प्रदान करती है और आकाश पर एक जोश और उबाल पैदा हुआ है जिसने इस मुट्ठी भर मिट्टी को एक मूर्ति की भांति खड़ा कर दिया है। प्रत्येक वह व्यक्ति जिस पर तौबा (पाप से पश्चाताप) का द्वार बन्द नहीं वह शीघ्र ही देख लेगा कि मैं अपनी ओर से नहीं हूं। क्या वे नेत्र द्रष्टा हैं जो सच्चे को पहचान नहीं सकते, क्या वह भी जीवित है जिसे इस आकाशीय आवाज़ का आभास नहीं।

(इज़ाला औहाम, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 3 पृष्ठ : 403)

तिथि 1 अक्तूबर 2022 को मस्जिद फ़तह अज़ीम (अमरीका)
के उद्घाटन समारोह के अवसर पर हुज़ूर अनवर ख़िताब फ़रमाते हुए

मस्जिद फ़तह अज़ीम (अमरीका) के उद्घाटन समारोह के अवसर पर
ज़ायन शहर के मेयर हुज़ूर अनवर की सेवा में शहर की चाबी प्रदान करते हुए

मस्जिद फ़तह अज़ीम (ज़ायन, अमरीका) की एक सुंदर तस्वीर

हुज़ूर अनवर मस्जिद फ़तह अज़ीम (ज़ायन, अमरीका) का उद्घाटन फ़रमाते हुए

मस्जिद बैतुल इकराम (डैलस, अमरीका) की एक सुंदर तस्वीर

तिथि 8 अक्तूबर 2022 को मस्जिद बैतुल इकराम (अमरीका)
के उद्घाटन समारोह के अवसर पर पर हुज़ूर अनवर ख़िताब फ़रमाते हुए

तिथि 1 अक्तूबर 2022 ई. को हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़
Lake County News-Sun Prior के प्रतिनिधि को इंटरव्यू देते हुए

तिथि 7 अक्तूबर 2022 ई. को हुज़ूर अनवर
मस्जिद बैतुल क़य्यूम (फोर्ट वरथ, अमरीका) का उद्घाटन फ़रमाते हुए

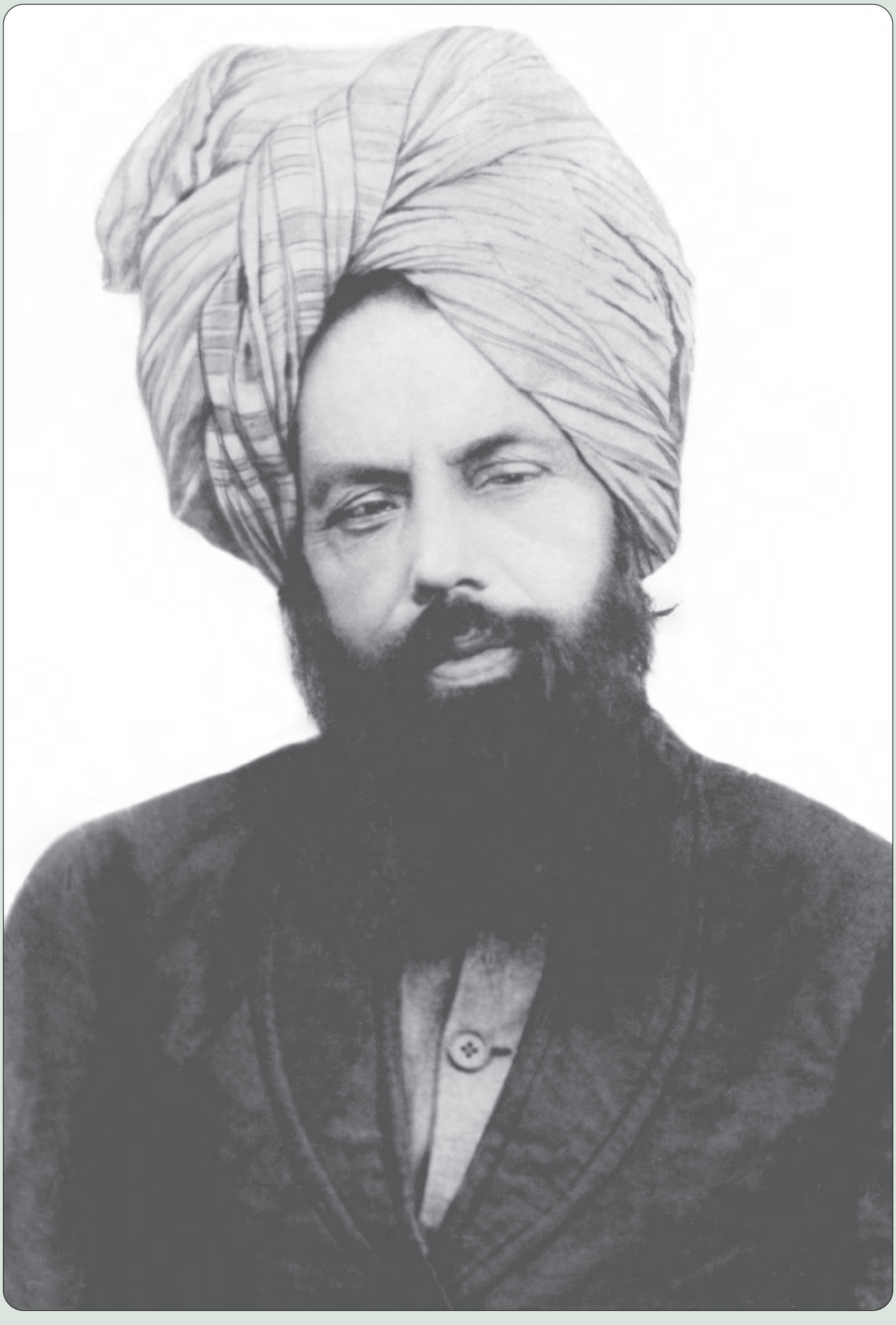

Hazrat Mirza Ghulam Ahmad [as]
The Promised Messiah And Mahdi

Hazrat Mirza Masroor Ahmad[aba]
The Fifth Khalifa After The Promised Messiah.

بسم اللہ الرحمن الرحیم

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّی عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ

وَعَلٰی عَبْدِهِ الْمَسِیْحِ الْمَوْعُوْدِ

خدا کے فضل اور رحم کے ساتھ

ھوالنّاصر

ख़ुदा तआला ने मुझे बार-बार सूचना दी है कि वह मुझे बहुत श्रेष्ठता देगा और मेरा प्रेम हृदयों में बिठाएगा और मेरे सिलसिले को समस्त पृथ्वी पर फैला देगा और प्रत्येक क़ौम इस झरने से पानी पिएगी और यह सिलसिला ज़ोर से बढ़ेगा और फैलेगा यहां तक कि पृथ्वी पर छा जाएगा

आज दुनिया का कोई मुल्क नहीं जिस में मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत नहीं और कोई मज़हब नहीं जिसमें से उसने अपना हिस्सा वसूल नहीं किया

निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त, इस्लामी शरीयत का एक प्रमुख भाग है, धार्मिक तरक़्क़ी बग़ैर ख़िलाफ़त के हो ही नहीं सकती, खिलाफत के निज़ाम के साथ जुड़ कर दुनिया में तौहीद को कायम करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की प्यारी जमाअत के लिए असंख्य खुशखबरियां हैं और इन शा अल्लाह प्रगति और विजय के द्वार सदैव खुलते चले जाएंगे

सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का बदर के पाठकगणों के लिए संदेश

इस्लामाबाद यू.के

MA 18-10-2022

प्यारे साप्ताहिक बदर क़ादियान के पाठकगणों

अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाही व बरकातहू

अल्लहमदो लिल्लाह कि अख़बार बदर को "संसार में जमाअत अहमदिया की महान प्रगतियाँ" के शीर्षक पर एक विशेष अंक प्रकाशित करने की तौफ़ीक़ मिल रही है। मुझ से इस अवसर पर संदेश भिजवाने का निवेदन किया गया है। मेरी दुआ है कि अल्लाह तआला इसे प्रत्येक दृष्टि से बाबरकत फ़रमाए। आमीन।

अल्लाह तआला क़ुरआन शरीफ़ में फ़रमाता है :

اَلَمۡ تَرَ کَیۡفَ ضَرَبَ اللّٰہُ مَثَلًا کَلِمَۃً طَیِّبَۃً کَشَجَرَۃٍ طَیِّبَۃٍ اَصۡلُہَا ثَابِتٌ وَّ فَرۡعُہَا فِی السَّمَآءِ ○ تُؤۡتِیۡۤ اُکُلَہَا کُلَّ حِیۡنٍۭ بِاِذۡنِ رَبِّہَا۔

(इब्राहीम : 25 से 26)

अर्थात (हे संबोधित!) क्या तूने देखा नहीं (कि) अल्लाह ने किस तरह एक पवित्र कलाम के विषय में वास्तविकता को वर्णन किया है वह एक पवित्र वृक्ष की तरह होता है जिसकी जड़ (मज़बूती के साथ) क़ायम होती है और उसकी प्रत्येक शाख़ आसमान की बुलंदी में (पहुंची होती) है। वह प्रत्येक वक़्त अपने रब के आदेश से अपना (ताज़ा) फल देता है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो इस आयत की तफ़सीर करते हुए फ़रमाते हैं :

"रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में जिस तरह सामर्थ्य से बढ़ कर निशानात आपके लिए और आपका अनुसरण करने वालों के लिए ज़ाहिर हुए। दूसरा उदाहरण नहीं रखते और आपके बाद भी कुरआन-ए-करीम पर सच्चे तौर पर अनुकरण करने वाले लोगों के साथ निशानात-ए-ईलाही का सिलसिला इस तरह जुड़ा चला आया है कि हर अक़्लमंद इससे आसानी के साथ समझ सकता है कि क़ुरआन-ए-करीम के साथ किसी ऐसी हस्ती का संबंध है जो प्रकृति के नियमों पर हाकिम है और जिस पर ख़ुश होती है। इसके लिए ग़ैरमामूली सामानों से सहायता के सामान पैदा कर देती है। इस वक़्त भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम सिलसिला अहमदिया के संस्थापक जिन की बरकत से इस आयत के इस क़दर बड़े अर्थ खुले हैं। इस बे-इज़्ने रब्बेहा بِاِذۡنِ رَبِّہَا वाले नतायज का ताज़ा उदाहरण हैं और आपके बाद आपकी जमाअत से भी अल्लाह तआला का यही सुलूक है और इसी सुलूक के अधीन बावजूद शदीद विरोध के वह प्रतिदिन तरक़्क़ी कर रही है। سُبۡحَانَ اللّٰہِ وَالۡحَمۡدُ لِلّٰہِ وَاللّٰہُ اَکۡبَرُ۔" (तफ़सीर-ए-कबीर पृष्ठ : 475)

अल्लाह तआला के फ़ज़्लों पर एक सरसरी सी नज़र भी डालें तो हमें एक लंबी सूची शुक्रिया के लिए तैयार खड़ी नज़र आती है, या हमसे मुतालिबा करती है कि हम शुक्रिया अदा करें। कहीं रिपोर्टस सुन कर और पढ़ कर हमें जमाअत के अधीन चलने वाले स्कूलों और हस्पतालों की तरक़्क़ी शुक्रगुज़ारी पर विवश करती है। कहीं हमें हस्पतालों से शिफ़ा पाने वाले ग़रीबों के सुकून वाले चेहरे और जमाअत के लिए दुआ के शब्द शुक्रगुज़ारी की ओर ध्यान दिलाते हैं। कहीं ख़िदमत-ए-इन्सानियत के अधीन ग़रीबों को पीने का पानी उलब्ध होने पर ग़रीब बच्चों के चेहरों की ख़ुशी अल्लाह तआला की प्रशंसा की ओर ले जाती है। सात आठ साल के इन बच्चों की ख़ुशी जो अपने घरों में प्रयोग के लिए दो तीन मील से पानी लाते थे लेकिन अब उनको उनके घरों के दरवाज़ों पर पानी उलब्ध हो गया है और इस पर वे जमाअत का धन्यवाद करते हैं तो फिर जमाअत इस बात पर अल्लाह तआला की शुक्रगुज़ार होती है। जब हम कहीं जमाअती तरक़्क़ी की रिपोर्ट सुनते हैं तो अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से जमाअत को प्रदान होने वाले मिशन हाऊसज़ और मसाजिद पर अल्लाह तआला के शुक्रगुज़ार होते हैं। कहीं

हम ईमान में तरक़्क़ी के आश्चर्य जनक वाक़ियात सुन कर अल्लाह तआला की प्रशंसा करते हुए उसके आगे सज्दा करते हैं। कभी हम तकमील-ए-इशाअत-ए-दीन के लिए अल्लाह की ओर से उपलब्ध निज़ाम से भर पूर लाभ उठाने पर अल्लाह तआला का धन्यवादी होते हैं कि इस ज़माने में उसने जमाअत को कैसी-कैसी सहूलतें मुहय्या फ़र्मा दी हैं जिसकी कल्पना भी आज से बीस तीस साल पहले संभव नहीं था। कभी हम इस बात पर अल्लाह तआला की प्रशंसा करते हैं कि अल्लाह तआला हमें प्रत्येक वर्ष कोई न कोई नया देश प्रदान फ़र्मा रहा है जहां अहमदियत का पौधा लग रहा है और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इस इल्हाम के पूरा होने को देख रहे हैं और इसके मिस्दाक़ बन रहे कि "कि मैं तेरी तब्लीग़ को ज़मीन के किनारों तक पहुंचाऊंगा"। कभी हम लाखों की संख्या में नेक रूहों के अहमदियत क़बूल करने पर सजदा शुक्र कर रहे होते हैं कि एक तरफ़ तो मुख़ालिफ़ों ने तूफ़ान-ए-बदतमीज़ी पैदा किया हुआ है, लेकिन इन्ही में से ऐसे लोग भी पैदा हो रहे हैं जिनमें से मुहब्बत के कतरे टपक रहे हैं और वे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ आपके सच्चे आशिक़ पर भी दुरूद भेज रहे हैं और कोईअत्याचार और मुख़ालफ़त इन्हें हक़ स्वीकार करने से नहीं रोक सकी। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं :

"आज दुनिया का कोई मुल्क नहीं जिस में मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत नहीं और कोई मज़हब नहीं जिसमें से उसने अपना हिस्सा वसूल नहीं किया, मसीही, हिंदू, बुध, पारसी, सिख, यहूदी सब क़ौमों में से इसके मानने वाले मौजूद हैं और यूरोपियन, अमरीकन, अफ़्रीकन और एशिया के रहने वाले लोगों में से इस पर ईमान लाए हैं अगर जो कुछ उसने समय से पूर्व बता दिया था अल्लाह तआला का कलाम न था वह किस तरह पूरा हो गया?" (दावतुल अमीर, पृष्ठ : 350) अतः इस में तो कोई संदेह नहीं कि आपको आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे आशिक और एक बहादुर पहलवान की हैसियत से जानेगी और जान रही है।
अब हम देखते हैं कि एम. टी. ए के द्वारा अल्लाह तआला दुनिया में स्वयं संदेश पहुंचा रहा है। मैं पहले भी कई बार कह चुका हूँ कि हमारे सांसारिक संसाधन कभी भी इस बात के मुतहम्मिल नहीं हो सकते थे या कम से कम उस वक़्त तक इस बात के मुतहम्मिल नहीं हैं कि हम टी.वी चैनल चलाऐं, चौबीस घंटे चलाऐं और दुनिया की बिभिन्न भाषाओं में प्रोग्राम दें और दुनिया के हर क्षेत्र में उसके प्रोग्राम पहुंच रहे हों और दुनिया के जो विभिन्न क्षेत्र हैं, उनमें प्रत्येक क्षेत्र में, मेरे खुतबों के अनुवाद पहुंच रहे हों। छः सात भाषाओं में साथ-साथ रवां अनुवाद हो रहा है। यह सब अल्लाह तआला के हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर किए गए वादों का नतीजा है। और फिर उसके द्वारा अर्थात् मेरे खुतबों के द्वारा और प्रोग्रामों के द्वारा नेक फ़ित्रत लोग अहमदियत में शामिल हो रहे हैं। मुझे कई लोग लिखते हैं कि किस तरह एम. टी. ए पर आपके प्रोग्रामों ने हम पर असर डाला और हम ने अहमदियत में दिलचस्पी ली और अल्लाह तआला ने अहमदियत क़बूल करने की तौफ़ीक़ दी।
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ख़ुदा तआला से इलम पाकर सिलसिला के शानदार भविष्य की विषय में तहरीर फ़रमाया हैं :
"परन्तु ख़ुदा तआला ने मुझे बार-बार सूचना दी है कि वह मुझे बहुत श्रेष्ठता देगा और मेरा प्रेम हृदयों में बिठाएगा। और मेरे सिलसिले को समस्त पृथ्वी पर फैला देगा और सब फ़िर्कों पर मेरे फ़िर्के को विजयी करेगा तथा मेरे फ़िर्के के लोग ज्ञान और मारिफ़त में इतना कमाल प्राप्त करेंगे कि अपनी सच्चाई के प्रकाश, अपने तर्कों और निशानों की दृष्टि से सब का मुंह बन्द कर देंगे और प्रत्येक क़ौम इस झरने से पानी पिएगी और यह सिलसिला ज़ोर से बढ़ेगा और फैलेगा यहां तक कि पृथ्वी पर छा जाएगा। बहुत सी रोकें पैदा होंगी और विपत्तियां आएंगी परन्तु ख़ुदा तआला सब को मध्य से उठा देगा और अपने वादे को पूरा करेगा। ख़ुदा ने मुझे सम्बोधित करके फ़रमाया कि मैं तुझे बरकत पर बरकत दूंगा, यहां तक कि बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूढेंगे।
अतः हे सुनने वालो! इन बातों को स्मरण रखो और इन भविष्यवाणियों को अपने सन्दूकों में सुरक्षित रख लो कि यह ख़ुदा का काम है जो एक दिन पूरा होगा।"

(तजल्लियात-ए-ईलाही, रुहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 409)

अतः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की प्यारी जमाअत के लिए बेशुमार ख़ुशख़बरियाँ हैं और इंशा अल्लाह प्रगति और विजयों के दरवाज़े हमेशा खुलते चले जाऐंगे। अब हर वे व्यक्ति जो अपने आपको हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में शुमार करता है उसका फ़र्ज़ है कि इस ईमान को अपने दिलों में बिठा कर उस पर हमेशा क़ायम रहे। यह उन मानने वालों का फ़र्ज़ है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बाद आपके तरीके पर चलने वाले निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त के साथ जुड़ कर इस ईमान के मज़हर बनते हुए उसे दुनिया के कोने-कोने में फैलाएं और तौहीद को दुनिया में क़ायम करें। जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि यह अल्लाह तआला की स्थाई सुन्नत है कि वह दो क़ुदरतें दिखाता है और हम सब अच्छी तरह जानते हैं कि यह दूसरी क़ुदरत निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त है। अतः निज़ाम ख़िलाफ़त का धार्मिक तरक़्क़ी के साथ एक प्रमुख संबंध है और इस्लामी शरीयत का यह एक प्रमुख भाग है। धार्मिक तरक़्क़ी बग़ैर ख़िलाफ़त के हो ही नहीं सकती। जमाअत की एकता ख़िलाफ़त के बिना क़ायम रह ही नहीं सकती।
अल्लाह तआला हमें हक़ीक़ी शुक्र करने वाला बनाए। हमें पहले से बढ़कर अपने फ़ज़लों और इनामों का वारिस बनाए और हर आने वाले दिन में हम तरक़्क़ी की नई से नई मंज़िले तै करते चले जाएं। आमीन।

वस्सलाम

ख़ाकसार

मिर्ज़ा मसरूर अहमद

ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ

“दुनिया के प्रत्येक देश में यह प्रथा चली है कि परिचय बढ़े हैं और लोग अहमदियत के क़रीब हो रहे हैं”

“अँधों और न देखने वालों को क्या ख़बर है कि किस अज़्मत की हद तक यह सिलसिला पहुंच गया है”

जलसा सालाना क़ादियान 2022 ई. के अवसर पर निकलने वाले अख़बार बदर के विशेष अंक के लिए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने “विश्व में अहमदिया मुस्लिम जमाअत की प्रमुख प्रगतियाँ” के शीर्षक की मंज़ूरी प्रदान फ़रमाई है। सीमित पृष्ठों में हमने कोशिश की है कि जहां तक हो सके इस शीर्षक का हक़ अदा हो, लेकिन हक़ीक़त यह है कि आज जमाअत जिस क़दर फैल चुकी है उसको कुछ पृष्ठों में समेटना असंभव है। यह ऐसा विषय है जिस पर हमेशा लिखा जाता रहेगा। हुज़ूर अनवर ने हमें वर्ष के आरंभ में ही इस शीर्षक की मंज़ूरी प्रदान फ़र्मा दी थी और यह संयोग है कि इसी विषय पर अर्थात “मैं तेरी तब्लीग़ को ज़मीन के किनारों तक पहुंचाऊंगा” जो सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का महान इल्हाम है, रोज़नामा अल्-फ़ज़्ल ऑनलाइन ने भी 21 मार्च से 26 मार्च छः अंकों में लेख प्रकाशित किए। और फिर इन समस्त लेखों को किताबी शक्ल देकर अपनी वेबसाइट www.alfazlonline.org पर भी चढ़ा दिया है, श्रीमान हनीफ़ महमूद साहिब ऐडीटर और समस्त मज़मून निगार इसके लिए निसंदेह शुक्रिया के अधिकारी हैं। पाठक इस बहुमूल्यवान कार्य से ज़रूर लाभ प्रदान करेंगे। डेली अल्-फ़ज़्ल ऑनलाइन के शुक्रिया के साथ एक ख़ूबसूरत मज़मून श्रीमान अब्दुल समी ख़ान साहब साबिक़ संपादक रोज़नामा अल्-फ़ज़्ल और वर्तमान शिक्षक जामिआ अहमदिया घाना का हम अपने इस ख़ास नंबर में शामिल कर रहे हैं।

प्यारे आक़ा सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने बावजूद अपनी बे-इंतिहा मस्रूफ़ियत के हमारी दरख़ास्त पर इस विशेष अंक के लिए बसीरत अफ़रोज़ संदेश और मुबारक दस्तख़त के साथ अपनी तस्वीर भी भिजवाई जिसके लिए हम हुज़ूर अनवर के धन्यवादी हैं और आपके लिए दुआ करते हैं

اَللّٰهُمَّ اَيِّدْ اِمَامَنَا بِرُوحِ الْقُدُس وَبَارِكْ لَنَا فِيْ عُمُرِهٖ وَاَمْرِهٖ۔

इसके साथ हम अपने लेख लिखने वालों का भी धन्यवाद करते हैं जिन्होंने मेहनत के साथ संक्षिप्त और तर्क सांगत लेख तैयार किए।

नबी अकेला आता है परन्तु अकेला रहता नहीं। बहुत जल्द एक जमाअत उसके साथ हो जाती हैं जो इस पर अपनी जान अपना माल और अपना वक़्त निछावर करने के लिए हर समय तैयार रहती है क्योंकि वह उसके चेहरे में ख़ुदा का चेहरा देखती है और जिसे ख़ुदा का चेहरा नज़र आने लगे उसे दुनिया की कोई ताक़त डरा नहीं सकती। फिर उसके मानने वाले उसकी बस्ती से निकल कर शहर में और शहर से निकल कर मुल्क में और फिर मुल्क से निकल कर पूरी दुनिया में फैल जाते हैं। और ऐसा इस नबी की भविष्यवाणी के अनुसार होता है जो अल्लाह तआला से ख़बर पाकर पहले से दुनिया को बता देता है। यह नबी की सदाक़त की एक ज़बरदस्त दलील है

विश्व में अहमदिया मुस्लिम जमाअत की प्रमुख प्रगतियाँ

क्रम	विषय सूची	पृष्ठ
1	“दुनिया के प्रत्येक देश में यह प्रथा चली है कि परिचय बढ़े हैं और लोग अहमदियत के क़रीब हो रहे हैं”	1
2	मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम के समय जो समस्त संसार पर ग़लबा होगा तो वह नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ही होगा लेकिन किस के द्वारा? मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा	2
3	ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल से इस मैदान में मेरी ही फ़तह है और जहां तक मैं दूरदर्शिता से काम लेता हूँ समस्त दुनिया अपनी सच्चाई की तहत आगे देखता हूँ। सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम ा उपदेश।	3
4	“मैं तेरी तब्लीग़ को ज़मीन के किनारों तक पहुंचाऊंगा” ख़ुदा तआला के इल्हाम की पृष्ठभूमि और संदेश मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ज़मीन के किनारों तक पहुंचने के चमत्कारिक दृश्य। (अब्दुल समीअ ख़ान, अध्यापक जामिआ अहमदिया घाना)	4
5	सुदूर पूर्व में जमाअत अहमदिया की प्रगतियां। (अनीस रईस, मुबल्लिग़ इंचार्ज जापान)	7
6	यूरोप में जमाअत अहमदिया की प्रगति। (जावेद इक़बाल नासिर, मुबल्लिग़ सिल्सिला जर्मनी)	14
7	अफ़्रीक़ा में जमाअत अहमदिया की प्रगति (चौधरी नईम अहमद बाजवा, प्रिंसिपल जामेअतुल मुबशरीन बुर्कीना फासो)	23

जिसे अल्लाह तआला ने निहायत मुख़्तसर शब्दों में इस तरह वर्णन फ़रमाया है। كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِیْ۔ । यह अटल तक़दीर है। अतः इस अटल तक़दीर के आसार बहुत नुमायां हो चुके हैं और तस्वीर साफ़ नज़र आने लगी है। आज जमाअत अहमदिया अल्लाह तआला के फ़ज़्ल-ओ-करम से 213 मुल्कों में फैल चुकी है। सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने पूरे अज़्म और कामिल यक़ीन के साथ अल्लाह तआला से ख़बर पाकर समस्त मुल्कों में अहमदियत के फैल जाने की भविष्यवाणी फ़रमाई थी। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

हे समस्त लोगो सुन रखो कि यह उसकी भविष्यवाणी है जिसने ज़मीन-ओ-आसमान बनाया है वह अपनी इस जमाअत को समस्त मुल्कों में फैलाएगा और प्रमाणों और तर्कों की दृष्टि से सब पर उनको ग़लबा प्रदान करेगा। वे दिन आते हैं बल्कि क़रीब हैं कि दुनिया में केवल यही एक धर्म होगा जो सम्मान के साथ याद किया जाएगा। ख़ुदा इस मज़हब और इस सिलसिला में अत्यधिक उच्च श्रेणी की और असीमित बरकत डालेगा और प्रत्येक को जो इसको समाप्त करने का फ़िक्र रखता है नामुराद रखेगा और यह ग़लबा हमेशा रहेगा यहां तक कि क़ियामत आ जाएगी।

(तज़करह तुस-शहादतैन, रूहानी खज़ायन भाग : 20 पृष्ठ : 66)

बहुत ही महान रंग में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इस भविष्यवाणी को हम पूरा होते देख रहे हैं। और वे दिन भी दूर नहीं जब दुनिया का कोना-कोना और चप्पा-चप्पा इस भविष्यवाणी के

शेष पृष्ठ 27 पर

मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम के समय जो समस्त संसार पर ग़लबा होगा तो वह नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ही का होगा लेकिन किस के द्वारा? मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा

यह एक ऐसी सूरत है कि मैं नहीं समझता कि इसको पढ़ कर किसी अहमदी का दिल धड़कने से रुक सकता है
इन्सान को जब बड़ी ख़ुशी नसीब होती है तो उसका दिल उछलना शुरू हो जाता है
चूँकि इस सूरत में हमारे अहमद अलैहिस्सलाम का और हम अहमदियों का वर्णन है इस लिए हमारा ख़ुश होना स्वभाविक बात है

يُرِيْدُوْنَ لِيُطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَاللّٰهُ مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ۝

(सूर अल् सफ़ आयत नंबर : 9)

अनुवाद : वे चाहते हैं कि अपने मूहों से अल्लाह के नूर को बुझा दें, और अल्लाह अपने नूर को पूरा करके छोड़ेगा चाहे काफ़िर (लोग) कितना ही नापसंद करें।

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो इस सूरत के बारे में फ़रमाते हैं :

यह एक ऐसी सूरत है कि मैं नहीं समझता कि इसको पढ़ कर किसी अहमदी का दिल धड़कने से रुक सकता है। इन्सान को जब बहुत बड़ी ख़ुशी नसीब होती है तो उसका दिल उछलना शुरू हो जाता है। ईसी तरह दुख के अवसर पर होता है और यह फ़ित्रत का तक़ाज़ा है, कोई इससे बहार नहीं हो सकता। चूँकि इस सूरत में हमारे अहमद अलैहिस्सलाम (ख़ुदा के हज़ारों हज़ार दुरूद इस पर हों) का और हम अहमदियों का वर्णन है इस लिए स्वभाविक रूप से हमारा ख़ुश होना एक जायज़ बात है। फ़रमाया मुझे इस सूरत के विषय में ख़ुदा तआला ने ऐसे दलायल समझाए हैं कि अगर कोई इन्साफ़ से काम ले तो हमारे दावा के सच्चा होने में उस को ज़रा भी शक-ओ-शुबा नहीं हो सकता और वह इन दलायल के सच्चा होने से हरगिज़ इन्कार नहीं कर सकता।

(अल्फ़ज़ल18 अप्रैल 1914 पृष्ठ : 5)

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो सूर सफ़ की ऊपर वर्णित आयत की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

लोग इरादा करते हैं कि अल्लाह के नूर को अपने मुँह के साथ बुझा दें लेकिन अल्लाह अपने नूर को फैलाएगा जबकि मुनकिर लोगों को बुरा ही मालूम होता रहे। यह स्पष्ट उस ज़माना के विषय में है। रसूले करीम के वक़्त लोग मूहों से इस्लाम को रोकना नहीं चाहते थे बल्कि तीर और तलवार से। उस वक़्त मुस्लमानों के मिटाने के लिए तलवार उठाई गई थी। लेकिन मुहों से मसीह मौऊद के वक़्त ही लोगों ने बुझाना चाहा है और नाकाम रहे हैं। मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी ने भी ख़्याल किया था कि एक कुफ़्र का फ़तवा लग गया तो यह सिलसिला तबाह हो जाएगा पर वे क्या कर सका। मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम के ख़िलाफ़ ही लैक्चर, ट्रेक्ट और रिसालों का सिलसिला जारी किया गया लेकिन ख़ुदा ने प्रत्येक पहलू से मुनकरीन को नीचा दिखाया।

(अल्-फ़ज़्ल 20 अप्रैल 1914 पृष्ठ 5)

هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۙ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ۝

(सूरः सफ़ आयत नंबर : 10)

अनुवादः वह ख़ुदा ही है जिसने अपने रसूल को हिदायत के साथ और सच्चा दीन देकर भेजा है ताकि उसको समस्त दीनों पर ग़ालिब करे ख़ाह मुशरिक कितना ही नापसंद करें।

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो इस आयत की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

समस्त मुफ़स्सेरीन यहां आकर कह देते हैं कि यह ज़माना मसीह का है जबकि समस्त दीन खुल जाऐंगे और यह बिल्कुल ठीक है, क्योंकि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वक़्त सिर्फ दो तीन ही धर्म थे लेकिन आजकल कई हज़ार धर्म पैदा हो गए हैं। रिलीजंज़ में हज़ारों की संख्या में धर्म लिखे जा रहे हैं। इस आयत में لِيُظْهِرَهٗ ही रखा है। अर्थात उस वक़्त जो समस्त संसार पर ग़लबा होगा तो वह नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का ही होगा लेकिन किस के द्वारा? मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा। फिर ख़ुदा तआला ने एक दलील मुझे और समझाई है कि यह आयत मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम के सम्बन्ध में है क्योंकि यह आयत क़ुरआन-ए-करीम में तीन जगह आई है और तीनों जगह मसीह का वर्णन इसके साथ किया गया है। (1) सूरः तौबा रुकू : 5 (2) सूरः फ़तह रुकू : 4 (3) और इस जगह।

इन तीनों जगहों में मसीह का वर्णन भी है । दो जगह तो साफ़ नाम है और सूरः फ़तह में इंजील का नाम लिख दिया है जिसकी वजह यह है कि मसीह ने दुबारा आना था और यह वाक़ियात उसको पेश आने थे अन्यथा कोई वजह नहीं कि यह आयत क़ुरआन-ए-करीम के मुख़्तलिफ़ हिस्सों में आए और हर जगह पर मसीह का वर्णन इसके साथ किया जाए।

(अल्-फ़ज़्ल 20 अप्रैल 1914 पृष्ठ : 5)

हज़रत मसीहमौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

ज्ञान और अध्यात्म ज्ञान भी जमाली रंग में सम्मिलित हैं और क़ुर्आन करीम की आयत لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ (अस्सफ़्फ़ : 10) में वादा था कि यह ज्ञान तथा अध्यात्म ज्ञान मसीह मौऊद को पूर्ण रूपेण दिए जाएंगे क्योंकि समस्त धर्मों पर विजयी होने का माध्यम ख़ुदाई ज्ञान सच्चे अध्यात्म ज्ञान में और दीन की विजय का इन्ही पर आधार है।

(अरबईन नम्बर 4 पृष्ठ 14 हाशिया)

संभवतः बीस वर्ष की अवधि गुज़री है कि मुझे इस क़ुर्आनी आयत का इल्हाम हुआ था। और वह यह है

هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ

और मुझे इस इल्हाम के यह अर्थ समझाए गए थे कि मैं ख़ुदा तआला की ओर से इसलिए भेजा गया हूं ताकि मेरे हाथ से ख़ुदा तआला इस्लाम को समस्त धर्मों पर विजयी करे। और इस स्थान पर स्मरण रहे कि पवित्र क़ुर्आन में यह महान भविष्यवाणी है जिसके बारे में अन्वेषक उलेमा की सहमति है कि यह मसीह मौऊद के हाथ पर पूरी होगा तो जितने वली और अब्दाल मुझ से पहले गुज़र गए हैं उनमें से किसी ने स्वयं को इस भविष्यवाणी का पात्र नहीं ठहराया और न यह दावा किया कि इस उपरोक्त कथित आयत का मुझे अपने पक्ष में इल्हाम हुआ है। किन्तु जब मेरा समय आया तो मुझ को यह इल्हाम हुआ और मुझ को बताया गया कि इस आयत का पात्र तू है और तेरे ही हाथ से और तेरे ही युग में इस्लाम धर्म की महानता दूसरे धर्मों पर सिद्ध होगी।

(तिर्याक़ुल क़ुलूब, पृष्ठ : 47)

जैसा कि ख़ुदा तआला ने मसीह मौऊद की यह अलामत क़ुरआन शरीफ़ में वर्णन फ़रमाई थी कि لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ वह अलामत मेरे हाथ से पूरी हो गई। (तिर्याक़ुल क़ुलूब, पृष्ठ : 53)

शेष पृष्ठ 28 पर

ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल से इस मैदान में मेरी ही फ़तह है और जहां तक मैं दूरदर्शिता से काम लेता हूँ समस्त दुनिया अपनी सच्चाई की तहत आगे देखता हूँ सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम का उपदेश

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"मैं बड़े दावे और दृढतापूर्वक कहता हूँ कि मैं सत्य पर हूँ और ख़ुदा तआला की कृपा से इस मैदान में मेरी ही विजय है और जहां तक मैं दूरदर्शिता से काम लेता हूँ समस्त संसार को अपनी सच्चाई के कदमों के नीचे देखता हूँ और निकट है कि मैं एक महान विजय प्राप्त करूं क्योंकि मेरी जीभ के समर्थन में एक और जीभ बोल रही है तथा मेरे हाथ की दृढ़ता के लिए एक और हाथ चल रहा है जिसे संसार नहीं देखता परन्तु मैं देख रहा हूँ। मेरे अन्दर एक और आत्मा बोल रही है जो मेरे एक-एक शब्द और एक-एक अक्षर को जीवन प्रदान करती है और आकाश पर एक जोश और उबाल पैदा हुआ है जिसने इस मुट्ठी भर मिट्टी को एक मूर्ति की भांति खड़ा कर दिया है। प्रत्येक वह व्यक्ति जिस पर तौबा (पाप से पश्चाताप) का द्वार बन्द नहीं वह शीघ्र ही देख लेगा कि मैं अपनी ओर से नहीं हूं। क्या वे नेत्र दृष्टा हैं जो सच्चे को पहचान नहीं सकते, क्या वह भी जीवित है जिसे इस आकाशीय आवाज़ का आभास नहीं।?"

(रुहानी ख़ज़ायन, भाग 3 इज़ाला औहाम, पृष्ठ : 303)

"ख़ुदा तआला ने मुझे बार-बार सूचना दी है कि वह मुझे बहुत श्रेष्ठता देगा और मेरा प्रेम हृदयों में बिठाएगा। और मेरे सिलसिले को समस्त पृथ्वी पर फैला देगा और सब फ़िर्कों पर मेरे फ़िर्के को विजयी करेगा तथा मेरे फ़िर्के के लोग ज्ञान और मारिफ़त में इतना कमाल प्राप्त करेंगे कि अपनी सच्चाई के प्रकाश, अपने तर्कों और निशानों की दृष्टि से सब का मुंह बन्द कर देंगे और प्रत्येक क़ौम इस झरने से पानी पिएगी और यह सिलसिला ज़ोर से बढ़ेगा और फैलेगा यहां तक कि पृथ्वी पर छा जाएगा। बहुत सी रोकें पैदा होंगी और विपत्तियां आएंगी परन्तु ख़ुदा तआला सब को मध्य से उठा देगा और अपने वादे को पूरा करेगा। ख़ुदा ने मुझे सम्बोधित करके फ़रमाया कि मैं तुझे बरकत पर बरकत दूंगा, यहां तक कि बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूढेंगे।

अतः हे सुनने वालो! इन बातों को स्मरण रखो और इन भविष्यवाणियों को अपने सन्दूकों में सुरक्षित रख लो कि यह ख़ुदा का काम है जो एक दिन पूरा होगा मैं अपने नफ़्स में कोई नेकी नहीं देखता और मैंने वह कलाम नहीं किया जो मुझे करना चाहिए था। और मैं अपने आप को केवल एक अयोग्य मज़्दूर समझता हूं। यह केवल ख़ुदा की कृपा है जो मेरे साथ हुई। अतः उस सामर्थ्यवान और कृपालु ख़ुदा का हज़ार-हज़ार धन्यवाद है कि इस मुट्ठी भर धूल को उन समस्त गुणहीनताओं के बावजूद उसने स्वीकार किया।"

(तजल्लियात-ए-इलाहिया, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 20 पृष्ठ 408 से 410)

"सुनो! वह जिस ने यह कलाम नाज़िल किया वह क्या कहता है। उसने मुझे सम्बोधित करके फ़रमाया कि मैं अपनी चम्कार दिखलाऊँगा अपनी क़ुदरत-नुमाई से तुझ को उठाऊँगा। दुनिया में एक नज़ीर आया पर दुनिया ने उसको क़बूल न किया लेकिन ख़ुदा उसे क़बूल करेगा और बड़े ज़ोरावर हमलों से उसकी सच्चाई ज़ाहिर कर देगा।

अतः ज़रूरी है कि यह ज़माना गुज़र न जाए और हम दुनिया से कूच न करें जब तक ख़ुदा के वे समस्त वादे पूरे न हों।"

(नज़ूलुल मसीह, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 18 पृष्ठ 463 से 467)

" ख़ुदा तआला अपनी ताईदात और अपने निशानों को अभी ख़त्म नहीं कर चुका। और उसीकी ज़ात की मुझे क़सम है कि वह बस नहीं करेगा जब तक मेरी सच्चाई दुनिया पर ज़ाहिर न कर दे। अतः हे समस्त लोगो जो मेरी आवाज़ सुनते हो। ख़ुदा का ख़ौफ़ करो और हद से मत बढ़ो। अगर यह मन्सूबा इन्सान का होता तो ख़ुदा मुझे हलाक कर देता और इस समस्त कारोबार का नाम-ओ-निशान न रहता। मगर तुमने देखा कि कैसी ख़ुदा तआला की नुसरत मेरे शामिल-ए-हाल हो रही है और इस क़दर निशान नाज़िल हुए जो शुमार से ख़ारिज हैं। देखो किस क़दर दुश्मन हैं जो मेरे साथ मुबाहला करके हलाक हो गए। हे बंदगान-ए-ख़ुदा कुछ तो सोचो क्या ख़ुदा तआला झूठों के साथ ऐसा मुआमला करता है?"

(ततिम्मा हकीकतुल वह्यी, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 22 पृष्ठ 554)

इस्लाम के लिए फ़तह और नुसरत का वक़्त फिर आगया है

(हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं :

"इस ज़माना में भी जबकि इस्लाम बहुत कमज़ोर है, ख़ुदा तआला ने अपने एक फ़िरिस्तादा के द्वारा से यह ख़ुशख़बरी दुबारा सुनाई है कि उसकी तरफ़ से इस्लाम के लिए फ़तह और नुसरत का वक़्त फिर आ गया है और लोग फ़ौज दर फ़ौज इस्लाम में दाख़िल होंगे और फिर इस्लामियों में वही रूहानियत फूंकी जाईएगी। मुबारक वह जो तकब्बुर न करें और ख़ुदा के काम की इज़्ज़त करें ताकि उनके वास्ते भी इज़्ज़त हो।"

(हक़ायकुल फ़ुरकान, भाग 4 पृष्ठ 532)

अहमदियत दुनिया पर ग़ालिब आएगी और ज़रूर ग़ालिब आकर रहेगी।

(हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो)

एक अवसर पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो ने श्रीमान बशीर अहमद आ रिचर्ड साहिब को मुख़ातब करते हुए अपनी तक़रीर में फ़रमाया :

"इस वक़्त बेशक तुम नामालूम और ग़ैर-मारूफ़ हो लेकिन वह ज़माना आएगा जब कौमें तुम्हारे नाम पर गर्व करेंगी और तुम्हारे कारनामों को सराहेंगी। अतः तुम अपनी हरकात व कार्यों को मामूली न समझो और यह न समझो कि ये हरकात सिर्फ मेरी हैं बल्कि ये सारी अंग्रेज़ क़ौम की हैं वे लोग जो बाद में आएँगे वे तुम्हारी हर हरकत की नक़्ल करेंगे और तुम्हारे हर लफ़्ज़ की पैरवी करेंगे।

इस ज़माना में जब अहमदियत दुनिया पर ग़ालिब आएगी और ज़रूर ग़ालिब आकर रहेगी और कोई ताक़त उसे रोक नहीं सकती उस वक़्त लोगों के दिलों में तुम्हारी अज़मत बहुत बढ़ जाएगी यहाँ तक कि बड़े से बड़े वज़ीर-ए-आज़म से भी ज़्यादा होगी।"

(अल्-फ़ज़्ल 6 मई 1947 ई.)

समस्त देश और अक़्वाम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मुहब्बत से सरशार हो जाएँगी (हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह तआला

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह तआला फ़रमाते हैं :

"इस वक़्फ़ शैतान दजल की शक्ल में हक़ के ख़िलाफ़ तैयार खड़ा है

शेष पृष्ठ 28 पर

"मैं तेरी तब्लीग़ को ज़मीन के किनारों तक पहुंचाऊंगा"
खुदा तआला के इल्हाम की पृष्ठभूमि और संदेश मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ज़मीन के किनारों तक पहुंचने के चमत्कारिक दृश्य

(अब्दुल समीअ ख़ान, अध्यापक जामिआ अहमदिया घाना)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मजमूआ इल्हामात "तज़करः" से मालूम होता है कि अल्लाह तआला ने हुज़ूर को अल्लाह की नुसरत और आलमी ग़लबा की कसरत से बशारात दी हैं और इतने रंगों में उनको दोहराया है कि किसी प्रकार का संदेह बाक़ी नहीं रहता। इन इल्हामात में से एक यह भी है कि "मैं तेरी तब्लीग़ को ज़मीन के किनारों तक पहुंचाऊंगा।" आपका यह इल्हाम 1898 ई. का है अर्थात आज से 124 वर्ष पहले का। और यह अकेला इल्हाम ही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सदाक़त साबित करने के लिए काफ़ी है। इस इल्हाम से मिलते-जुलते इल्हाम और क़रीब तरीन शब्द जो दूसरे इल्हामात में मिलते हैं वे ये हैं कि

* मैं तुझे ज़मीन के किनारों तक इज़्ज़त के साथ शौहरत दूँगा।

(तज़करः पृष्ठ 149 क़ादियान 2008 ई.)

* ख़ुदा तेरी दावत को दुनिया के किनारों तक पहुंचा देगा।

(इश्तेहार 20 फ़रवरी 1886 तज़करः पृष्ठ : 112)

* ख़ुदा ने इरादा किया है कि तेरा नाम बढ़ावे और आफ़ाक़ मैं तेरे नाम की ख़ूब चमक दिखावे। (तज़करः, पृष्ठ : 282)

* वह तेरे सिलसिला को और तेरी जमाअत को ज़मीन पर फैलाएगा और उन्हें बरकत देगा और बढ़ाएगा और उनकी इज़्ज़त ज़मीन पर क़ायम करेगा।

(तौह्फा-तुन्नद्वा, रुहानी ख़ज़ायन भाग 19 पृष्ठ : 97)

अरबी में है कि "وعدنی انی سینصرنی حتی یبلغ امری مشارق الارض ومغاربها" (तज़करः, पृष्ठ : 260)

अर्थात अल्लाह ने मुझ से वादा किया है कि वह मेरी मदद करेगा यहां तक कि मेरा मामला ज़मीन के प्रत्येक पूरब और प्रत्येक पश्चिम में पहुंच जाएगा।

* इंग्लिश में है

i shall give you a large party of islam

(तज़करः, पृष्ठ : 80)

(1) इस इल्हाम के वक़्त हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मुख़ालेफ़त की क्या सूरत-ए-हाल थी?

(2) इल्हाम के वक़्त हुज़ूर का पैग़ाम कहाँ-कहाँ तक पहुंच चुका था?

(3) ज़मीन के किनारों से क्या मुराद है?

(4) ज़मीन के किनारों तक हुज़ूर की तब्लीग़ पहुंचने के चमत्कारिक दृश्य।

इल्हाम की पृष्ठभूमि

इल्हाम की पृष्ठभूमि का जायज़ा लेने के लिए हम इस से 4 वर्ष पहले अर्थात 1894 ई. से लेकर 1897 ई. के हालात पर नज़र डालते हैं। तारीख़ से मालूम होता है कि उम्मत-ए-मुहम्मदिया जिस मह्दी की मुद्दतों से मुंतज़िर थे उसकी अलामात में से एक कुसूफ़-ओ-ख़ुसूफ़ का निशान था। यह मार्च, अप्रैल 1894 ई. में ज़ाहिर हुआ। कुछ सईद रूहों ने उसे देखकर हुज़ूर को क़बूल किया परन्तु आम तौर पर उम्मत-ए-मुस्लिमा ने इस निशान को खण्डित कर दिया। उल्मा ने तरह-तरह के बहाने ईजाद किए। हदीस को हदीस मानने से इन्कार कर दिया। रिवायत को झूठा क़रार दे दिया और चंद्रग्रहण सूर्यग्रहण के लिए वे तारीखें तजवीज़ कीं जो क़ानून-ए-क़ुदरत को जड़ से उखाड़ने के लिए काफ़ी हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उनके उत्तर में बहुत दलायल पेश किए, कई पुस्तकें लिखीं, असंख्य चैलेंज दिए परन्तु मानने वाले बहुत कम और इंकार करने वाले हज़ारों गुना की संख्या में थे। 1890 ई. में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने वफ़ात मसीह का इल्हामी ऐलान किया था जिसकी वजह से आम तौर पर मुस्लमान भ्रम थे परन्तु 1895 ई. में हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने यह इन्केशाफ़ भी फ़र्मा दिया कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की क़ब्र श्रीनगर कश्मीर में मौजूद है। इस ऐलान ने मुस्लमानों और ईसाइयों दोनों की दुखती रग पर हाथ रख दिया और वे दोनों कौमें शोला, जवाला बन गईं। 1896 ई. में हुज़ूर ने एक तब्लीग़ी पत्र काबुल के वली अमीर अब्दुर्रहमान के नाम लिखा जो हज़रत मौलवी अब्दुर्रहमान साहिब शहीद लेकर गए थे जिस पर अमीर ने उत्तर दिया कि ईं जाबिया। अर्थात काबुल में आकर दावे करो तो मालूम हो जाएगा। मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी इसके बाद काबुल गए और उन्होंने अमीर को ख़ूब भड़काया और वापस आकर कहा कि मिर्ज़ा साहिब काबुल जाएं तो ज़िंदा वापस नहीं आ सकेंगे। (अहमदियत, भाग 1 पृष्ठ : 548)

इसके बाद अमीर ने हज़रत मौलवी अब्दुर्रहमान साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो को शहीद कर दिया और 1903 ई. में हज़रत साहिबज़ादा अब्दुल लतीफ़ साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो को भी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर ईमान लाने के जुर्म में संगसार कर दिया। 1896 ई. में ही हुज़ूर ने हिन्दुस्तान के समस्त उल्मा और सज्जादा नशीनों को मुबाहला का चैलेंज दिया जिसके नतीजा में उनके मुरीदों में नफ़रत की लहर और भी बुलंद हो गई। वाक़िया यह है कि 1906 ई. तक इन मुख़ालिफ़ उल्मा की अक्सरियत का ख़ातमा हो चुका था और जो ज़िंदा थे वह किसी न किसी विपत्ति में गिरफ़्तार थे। (तारीख़-ए-अहमदियत, भाग 1 पृष्ठ : 551)

पादरी अब्दुल्लाह आथम से हुज़ूर का मुबाहिसा (जंग-ए-मुक़द्दस) 1893 ई. में हुई थी जिसके आख़िर पर हुज़ूर ने अब्दुल्लाह आथम की हलाकत की भविष्यवाणी की मगर वे दिल में रुजू करके ख़ुदा के फ़ौरी ग़ज़ब से तो बच गया परन्तु सच्चाईके छुपाने के जुर्म का मुर्तक़िब होता और 27 जुलाई 1896 ई. को अंततः हाविया में जा गिरा। इस वाक़िया ने ईसाई दुनिया को अपनी तपिश और नफ़रत में और भी बढ़ा दिया और अंततः इसी मौत के बदला के तौर पर अगस्त 1897 ई. में पादरी मार्टिन क्लार्क ने हुज़ूर के ख़िलाफ़ इक़दाम-ए-क़तल का मुक़द्दमा दायर कर दिया। 1897 ई. में नायब सफ़ीर सुलतान तुर्की हुसैन कामी क़ादियान आए। वह तुर्की की काल्पनिक ख़िलाफ़त उस्मानिया के लिए अंग्रेज़ों के मद्द-ए-मुक़ाबिल हुज़ूर की ताईद हासिल करने के मुतमन्नी थे। परन्तु हुज़ूर को स्वप्न में बताया गया कि सलतनत-ए-तुर्की की हालत अच्छी नहीं और उन हालतों के साथ अंजाम बख़ैर नहीं है। इस पर उसने वापस जा कर हुज़ूर के ख़िलाफ़ अख़बार में एक ग़ज़बआलूद मज़मून शाय करवाया और कसरत से चर्चा भी किया। इस तरह गोया हुज़ूर ने मुस्लमानों की ताक़तवर सलतनत उस्मानिया से दुश्मनी भी मोल ले ली।

हुज़ूर ने 1893 ई. में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को गाली देने वाले लेखराम की 6 साल में हलाकत की भविष्यवाणी की थी। 6 मार्च 1897 ई. को जब यह भविष्यवाणी अज़ीमुश्शान रूप में पूरी हुई तो हिंदू और आर्या आपकी जान के दुश्मन हो गए। इल्ज़ाम लगाया कि आपने उसे क़तल करवाया है। आपके घर की तलाशी ली गई और तलाशी

लेने वाले थानेदार ने कहा कि मिर्ज़ा हमेशा बचता रहा है अब मेरा हाथ देखेगा। आपके क़तल की साज़िशें की गईं और क़ातिलों के लिए इनाम निर्धारत किए गए। मौलवी बटालवी साहिब ने लिखा कि मैं कसम खाने को तैयार हूँ कि लेखराम के क़तल में मिर्ज़ा साहिब शरीक हैं। इस सिलसिला में गिरफ़्तारी की कोशिशें भी की गईं।

(तारीख़-ए-अहमदियत, भाग 1 पृष्ठ 598)

1898 ई. के शुरू में एक मौलवी मुल्ला मुहम्मद बख़्श जाफ़र ज़टुल्ली ने एक इश्तेहार प्रकाशित करके हुज़ूर की वफ़ात की झूठी ख़बर प्रसिद्ध कर दी। (तारीख़-ए-अहमदियत, भाग 2 पृष्ठ 9)

बीच 1898 ई. में हुज़ूर अलैहिस्सलाम पर हकूमत-ए-पंजाब ने इन्कम टैक्स अदा न करने और सरकारी ख़ज़ाना को नुक़्सान पहुंचाने का मुक़द्दमा दायर किया। 1898 ई. के आख़िर पर मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी की मुख़्बिरी पर हुज़ूर के ख़िलाफ़ हिफ़्ज़-ए-अमन का मुक़द्दमा दायर हुआ और मौलवी-साहब ने वर्णन किया कि मिर्ज़ा साहिब मुझे क़तल करा देंगे।

यह भी याद रहे कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर बराहीन-ए-अहमदिया की इबतेदाई जिल्दों की इशाअत के बाद कुफ़्र का फ़तवा लग गया था।

(आलमी फ़ित्ना तकफ़ीर के विषय में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी, दोस्त मोहम्मद शाहिद, पृष्ठ 16 डेनमार्क)

इसके बाद 1890 में मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी ने हिन्दुस्तान में घूम कर 200 उल्मा से कुफ़्र के फतावे हासिल किए और ग़लीज़ तरीन गालियां दीं। (हयात-ए-तय्यबा पृष्ठ 102 शेख़ अब्दुल क़ादिर)

ये वाक़ियात चीख़-चीख़ कर ऐलान कर रहे हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जान माल और इज़्ज़त सख़्त ख़तरे में थी और मुख़ालेफ़ीन ने हर तरफ़ से गोया मुहासरा कर रखा था। इन हालात में किसी का यह सोचना कि वह दुश्मन के उपद्रव से बच जाएगा, मुख़ालेफ़ीन नाकाम-ओ-ना-मुराद होंगे, और वे ज़मीन के किनारों तक इज़्ज़त और शौहरत पाएगा और क़बूल किया जाएगा दुनिया की नज़र में एक दीवाने की बड़ से ज़्यादा हैसियत नहीं रखती। क्या ऐसी ही नहीं जैसे अपनी क़ौम के ज़ुलम से तंग आकर ख़ुदा के एक अज़ीम फ़िरिस्तादा का पीछा करने वाले का यह कहना कि किसरा के कंगन तेरे हाथों में पहनाए जाऐंगे।

पैग़ाम कहाँ-कहाँ पहुंच चुका था

इस इल्हाम के वक़्त अभी जमाअत का कोई नाम नहीं था और नवजात शक्ल में थी। इसलिए हिन्दुस्तान में अहमदी तो मौजूद थे परन्तु कोई निज़ाम-ए-जमाअत नहीं था। अहमदी माली क़ुर्बानी भी करते थे परन्तु चंदों का कोई बाक़ायदा निज़ाम नहीं था। हुज़ूर अलैहिस्सलाम हस्ब-ए-ज़रूरत तहरीक करते और अहबाब लब्बैक कहते। कोई मुबल्लिग़, कोई मुरब्बी नहीं था। कोई अख़बार या रिसाला नहीं था। अलहकम अख़बार 1897 ई. के आख़िर पर हफ़्तरोज़ा के तौर अमृतसर से जारी हुआ और रिव्यू आफ़ रीलीजज़ 1902 ई. में जारी हुआ।

हिन्दुस्तान से बाहर सबसे ज़्यादा हुज़ूर का वर्णन बर्तानिया में होगा क्योंकि हिन्दुस्तान पर अंग्रेज़ हुकमरान थे और इंडिया की सारी ख़बरें वहां पहुँचती थीं। मई 1897 ई. में हुज़ूर ने तोहफ़ा केसरिया के नाम से एक तब्लीग़ी ख़त मलिका विक्टोरिया इंग्लिस्तान को भिजवाया परन्तु इस पर भी कोई ख़ास रद्द-ए-अमल सामने नहीं आया।

हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला की तरफ़ से मामूर होते ही इश्तेहरात के द्वारा आलमगीर निशान नुमाई का ऐलान किया था और दुनिया के बड़े-बड़े लीडरों और मज़हबी राहनुमाओं को अपने पैग़ाम से अवगत किया। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

“ये दावा अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मुक़ाबले के मैदान में करोड़ों मुख़ालिफ़ों के सामने किया गया है और क़रीब तीस हज़ार के इस दावा के दिखलाने के लिए इश्तेहारात तक़सीम किए गए और आठ हज़ार अंग्रेज़ी इश्तेहार और पत्न अंग्रेज़ी रजिस्ट्री करा कर मुलक हिंद के समस्त पादरियों और पंडितों और यहूदियों की तरफ़ भेजे गए और फिर इस पर इकतेफ़ा न कर के इंग्लिस्तान और जर्मन और फ्रांस और यूनान और रूस और रुम और अन्य देशों यूरोप में बड़े-बड़े पादरियों के नाम और शहज़ादों और वज़ीरों के नाम रवाना किए गए। इसलिए उनमें से शहज़ादा प्रिंस आफ़ वेल्ज़ वली अहद तख़्त इंग्लिस्तान और हिन्दुस्तान, और गलीड स्टोन वज़ीर-ए-आज़म और जर्मन का शहज़ादा बिसमारक है। इसलिए समस्त साहिबों की रसीदों से एक संदूक़ भरा हुआ है”

(मक्तूब-ए-अहमदिया, भाग प्रथम, पृष्ठ : 649)

इस से मालूम होता है कि दुनिया के समस्त मशहूर लीडरों तक हुज़ूर का दावे पहुंच गया था लेकिन उनमें से किसी ने क़बूलियत की ख़ाहिश ज़ाहिर नहीं की और न ही ईः कहा जा सकता है कि उनकी सारी क़ौमों तक भी हुज़ूर का पैग़ाम पहुंच गया। क्योंकि इन सब क़ौमों की ज़बानों तक ही रसाई के लिए एक बहुत बड़ा निज़ाम दरकार था।

दुनिया के किनारों से क्या मुराद है

“Verdens Ende” The End of the earth

ज़मीन तो प्रचलित भाषा में गोल है, और गोल चीज़ का कोई किनारा नहीं होता। इस लिए इस इल्हाम में दुनिया के किनारों से मुराद हर जगह हो सकती है यानी ज़मीन के चप्पे-चप्पे पर तेरी तब्लीग़ पहुँचेगी।

वे प्रसिद्ध मुक़ामात जिन्हें दुनिया का किनारा कहा जाता है जहां आबादियां ख़त्म हो जाती हैं और समुंद्र का इलाक़ा शुरू हो जाता है।

नार्वे के शहर शून् के उत्तर में एक मुक़ाम End of the world कहलाता है।

क़ुतब-ए-शिमाली के क़रीब स्थित मुल्क फिनलैंड को दुनिया का आख़िरी सिरा कहा जाता है। इसी तरह अमरीका, रूस, और कैनेडा के उत्तरी इलाक़ों को भी आख़िरी किनारा कहा जाता है। तथा क़ुतब-ए-जुनूबी और बर्र-ए-आज़म एंटारकटिका को भी दुनिया का आख़िरी किनारा समझा जाता है। वहां सिर्फ़ चंद साईंसदान रहते हैं जो साईंसी तहक़ीक़ात करते हैं।

फिजी जहां से डेड लाईन गुज़रती है और दुनिया को दो हिस्सों में तक़सीम करती है, उसे भी किनारा कहा जाता है।

कहते हैं कि दुनिया में सबसे पहले सूरज जापान में तलूअ होता है।

बहर-ए-अल्-काहिल में मौजूद रियासत सामवा ने दिसंबर 2021 ई. में अपने मयारी वक़्त को तबदील कर दिया है और इस तरह यह रियासत दुनिया में सबसे पहले सूरज तलूअ होता देखती है।

अगर आप नक़्शे पर उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक नज़र दौड़ाइ जाए तो जितने देश और ख़ित्ते साहिल समुंद्र पर मौजूद हैं वे सब ज़मीन के किनारे कहला सकते हैं। उनकी भारी अक्सरियत में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का पैग़ाम पहुंच चुका है। हो सकता है कि कुछ द्वीप ऐसे हूँ जो अभी इस नूर से मुनव्वर नहीं हुए, कोई बईद नहीं कि चंद वर्षों में वहां भी हुज़ूर अलैहिस्सलाम का पैग़ाम पहुंच जाए।

पैग़ाम पहुंचने से सम्बन्धित ग़ैरमामूली दृश्य

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को जब यह वादा दिया गया कि मैं तेरी तब्लीग़ को ज़मीन के किनारों तक पहुंचाऊंगा का तो इस में लाज़िमन इस तरफ़ भी संकेत था कि ख़ुदा तआला की विशेष सहायता तुम्हारे साथ होगी और यह भी कि इलाही सुन्नत के मुताबिक़ भविष्यवाणी को पूरा करने के लिए इलाही जमाअत की मेहनत और काविश भी ज़रूरी होगी। इसलिए उस के ऐन मुताबिक़ जमाअत अहमदिया जान, माल, वक़्त, इज़्ज़त और औलादों की क़ुर्बानी करके इस मुक़द्दस पैग़ाम को दुनिया के किनारों तक पहुंचा रही है। इस मार्ग में शहादतें भी हुईं, बहुत

दुख सहे, बीवी बच्चों को छोड़ा, भूख प्यास बर्दाश्त की, ज़ख़्म खाए, क़ैद-ओ-बंद की सऊबतें बर्दाश्त कीं मगर कोई कमी नहीं छोड़ी और ख़ुदा ने अपने वादों के मुताबिक़ क़ुर्बानियों का बेहतरीन फल और सिला अता किया परन्तु इसका एक ईमान अफ़रोज़ पहलू यह भी है कि बहुत सी ऐसी जगहों पर जमाअत का पैग़ाम इस तरह भी पहुंचा कि इस के लिए कोई ख़ास मेहनत और जद-ओ-जहद नहीं करनी पड़ी बल्कि केवल अल्लाह तआला की ख़ास तक़दीर और तजल्ली के तुफ़ैल इन मुल्कों में अहमदियत बुनयाद पड़ी उदाहरणतः :

* घाना में इबतेदाई तब्लीग़ के लिए कोई बाक़ायदा मंसूबा बंदी नहीं की गई थी। घाना में क़स्बा इक्राफ़ो के एक मुस्लमान यूसुफ़ नयार साहिब yousuf nyarko ने 1920 ई. में ख़ाब में देखा कह ह एक सफ़ैद आदमी के साथ नमाज़ पढ़ रहे हैं। उन्होंने अपनी ख़ाब का ज़िक्र मिस्टर अब्दुर्रहमान पेड्रो (abdul rahman pedro) साहिब के साथ किया जो नाईजेरिया के रहने वाले थे। अब्दुर्रहमान साहिब ने उन्हें बताया कि मैंने एक मुस्लिम मिशन के विषय में पढ़ा है जिसका मर्कज़ हिन्दुस्तान में है और एक ब्रांच लंदन में भी है। यूसुफ़ साहिब ने अपने ख़ाब की सूचना जब चीफ़ मह्दी आपा को दी तो उन्होंने मुस्लमानों की एक मीटिंग मुनक़िद की जिस में फ़ैसला किया गया कि अहमदियत के मर्कज़ को एक ख़त लिखा जाए कि इन के लिए कोई मुबल्लिग़ भिजवाया जाए। पहले घानीन अहमदी चीफ़ मह्दी आपा ने कैप कोस्ट के एक शामी मुस्लमान ताजिर से हज़रत डाक्टर मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो जो उस वक़्त लंदन में थे का पता लिया और उनसे ख़त-ओ-किताबत की और कुछ रक़म जमा कर के सफ़ैद मुबल्लिग़ मंगवाने के लिए लंदन मिशन को भेज दिया। इसलिए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो के हुक्म मार्च 1921 ई. में हज़रत मौलाना अबदुर्रहीम नय्यर साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो लंदन से घाना पहुंचे।

* गेम्बया का मिशन भी इसी तरह क़ायम हुआ। गेम्बया की एक लड़की आला तालीम के लिए सीरालियोन गई। वहां उसे किसी दुकान पर नमाज़ की एक किताब मिली जिसमें अरबी ज़बान के साथ अंग्रेज़ी अनुवाद भी था। इस लड़की ने अपने मुल्क में कभी ऐसी किताब नहीं देखी थी। उसने वह किताब ख़रीद ली और गेम्बया में अपने एक अज़ीज़ को भिजवा दी। यह किताब सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान की शाय शूदा थी। एक नौजवान मिस्टर बारह अंजाए (bara injoy) ने क़ादियान में जमाअत से सम्पर्क किया और मज़ीद दीनी कुतुब के लिए निवेदन किया। उसे जमाअत ने मज़ीद कुतुब इरसाल कीं और बताया कि आपके क़रीबी मुल्क नाईजेरिया में हमारा मिशन है। वहां राबिता करके मज़ीद लिटरेचर और मालूमात हासिल कर सकते हैं। इस ज़माना में श्रीमान नसीम सैफ़ी साहिब नाईजेरिया के मिशनरी इंचार्ज थे। सबसे पहले नाईजेरिया से एक मुअल्लिम श्रीमान हमज़ा सुनी अलू साहब गेम्बया तशरीफ़ लाए और तक़रीबन एक साल तक बांजूल में तब्लीग़ करते रहे। उनके बाद घाना से एक लोकल मुअल्लिम श्रीमान सईद जिब्रील कुछ माह के लिए तशरीफ़ लाए उस ज़माना में चूँकि गेम्बया में बाक़ायदा जमाअत क़ायम नहीं हुई थी इस लिए श्रीमान सईद साहिब अपने गले में एक बैग डाले रखते थे जिस पर अहमदियत लिखा हुआ था और घूम फिर कर लोगों को अहमदियत का पैग़ाम पहुंचाते रहते। इस तरह पढ़े लिखे नौजवानों का मर्कज़ अहमदियत क़ादियान के साथ बज़रीया ख़त-ओ-ख़िताबत अच्छा ख़ासा राबिता क़ायम हो गया और वहां से अख़बारात और रसायल भी बाक़ायदगी के साथ आने शुरू हो गए।

(अर्ज़ बिलाल अज़ मुनव्वर अहमद ख़ुरशीद सिलसिला)

* इंडोनेशिया के 4 नौजवान 1923 ई. में दीनी तालीम के लिए हिन्दुस्तान आए तो क़ादियान आकर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो से दीनी तालीम की दरख़ास्त की। इसी दौरान उन्होंने अहमदियत क़बूल कर ली और वहां से अपने मुल्क में तब्लीग़ शुरू कर दी।

* जापान में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ज़िंदगी में हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो के तब्लीग़ी ख़ुतूत के द्वारा इस्लाम का पैग़ाम पहुंच चुका था लेकिन मिशन 1935 में सूफ़ी अब्दुल कदीर नयाज़ साहिब के द्वारा क़ायम हुआ।

* मशरिक़ बईद में जो सईद रूहें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ज़िंदगी में अहमदियत से मुशर्रफ़ हुईं उनमें से चंद नाम ये हैं हांगकांग और चीन में हज़रत क़ारी ग़ुलाम मुजतबा साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो और क़ारी ग़ुलाम हम साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो। आस्ट्रेलिया में हज़रत सूफ़ी हुस्न मौसी साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो ने सितंबर 1903 में बैअत की। न्यूज़ीलैंड से हज़रत प्रोफ़ैसर कलीमेनट रेग साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो ने मई 1908 में हुज़ूर अलैहिस्सलाम की ज़ियारत की और वापस जा कर बैअत कर ली। फ़िजी के पहले अहमदी हाजी मुहम्मद रमज़ान साहिब थे जो 1959 जमाअत में शामिल हुए।

* चीन में हमारे पहले मुबल्लिग़ सूफ़ी अब्दुल गफ़ूर साहिब 1935 में पहुंचे परन्तु अहमदियत का पैग़ाम 1924 में पहुंच चुका था और मालूम होता है कि कई अहमदी थे मगर उनका राबिता मर्कज़ से नहीं था।

(ख़ुतबात-ए-महमूद भाग 8 पृष्ठ 312)

* अमरीका को भी नई दुनिया कहा जाता है और एक लिहाज़ से वह दुनिया का किनारा भी है। अमरीका में अलेग ज़ेनडर हुज़ूर अलैहिस्सलाम की ख़त-ओ-किताबत के नतीजा में मुस्लमान हो गए और उन्ही के द्वारा मिस्टर एंडरसन 1904 में अहमदी हुए जिनका नाम हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने अहमद तजवीज़ फ़रमाया।

* रूस के क़ुतब-ए-शिमाली के इलाक़े भी दुनिया के किनारे कहलाते हैं। रूस के मुफ़क्किर और अज़ीम नावल निगार टाल्स्टाइ के साथ हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो की मार्फ़त ख़त-ओ-ख़िताबत होती रही और जब उनको इस्लामी उसूल की फ़िलोसफ़ी का अनुवाद भेजा गया तो उसने इस पर बड़ा ख़ूबसूरत तबसरा किया।

यह केवल कुछ उदाहरणे हैं और इस बात का काफ़ी सबूत मुहय्या करती हैं कि यह वादा ख़ुदा की तरफ़ से था जो तमाम न मुसायद हालात में पूरा हुआ। बीसियों ऐसे वाक़ियात हैं जहां सिर्फ़ और सिर्फ़ ख़ुदा तआला की मशीयत ही नज़र आती है। अल्-ग़र्ज़ यह महज़ एक इल्हाम नहीं। यह एक अज़ीमुश्शान वादा है जिसके पूरा होने की कहानियां ज़मीन के चप्पे चप्पे पर बिखरी हुई हैं। एक भविष्यवाणी है जो हर ख़ित्ता अर्ज़ पर अपनी चम्कार दिखला रही है। एक तारीख़ है जो ख़ुदाई नुसरत-ओ-ताईद से भरपूर है। मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सदाक़त का एक खुला खुला सबूत है जिसका एक आलम गवाही दे रहा है। एक नूर से लिखी हुई तहरीर है जो दुनिया पर नक़्श की गई है। अरब को सुल्हा और अबदाल-ए-शाम भी अब उस पर दुरूद भेज रहे हैं और अजम के लोग भी इस के एक इशारा पर जानें क़ुर्बान करने पर तैयार हैं। दुनिया के 213 मुल्कों में इस का पर्चम लहराता है और हर झंडा उस का इल्हाम याद कराता है।

कहाँ क़ादियान की मामूली सी बस्ती और क़ादियान के चंद लोग और कहाँ दुनिया के दूर दराज़ द्वीप जो समुंद्रों से घिरे हो या। सरसब्ज़-ओ-शादाब इलाक़े जो फसलों से अटे हुए हैं। क़ुतब-ए-शुमाली और क़ुतब-ए-जुनूबी जो पानियों और बर्फ़ों से ढके हुए हैं। वे सहरा जो तेल की दौलत से माला-माल हैं। पुरानी दुनिया हो या नई दुनिया हो। ग़नजान आबादियां हूँ या आस्ट्रेलिया और कैनेडा की तरह साहिली और रेतले इलाक़े। सब जगह क़ादियान और उस के मुक़द्दस नबी का नाम गूँजता है और गूँजता रहेगा जब तक कि इन्सान इस कुर्राह-ए-अर्ज़ पर मौजूद है। और एक वक़्त आएगा कि اَشۡرَقَتِ الۡاَرۡضُ بِنُوۡرِ رَبِّهَا (अल् ज़ुमर : 70) सारी ज़मीन अपने रब के नूर से मुनव्वर हो जाएगी। इन शा अल्लाह।

(धन्यवाद सहित अख़बार रोज़नामा अल्-फ़ज़्ल लंदन)

★ ★ ★

सुदूर पूर्व में जमाअत अहमदिया की प्रगतियां (अनीस रईस, मुबल्लिग़ इंचार्ज जापान)

सुदूर पूर्व एक भौगोलिक शब्द है, जो मध्य-पूर्व एशिया के विपरीत यूरोप से दूर दराज़ फ़ासलों पर वाक़्य एशिया के देशों और द्वीपों के लिए प्रयोग होता है। योरपी शोधकर्ताओं के अनुसार जंग-ए-अज़ीम अव्वल से पहले तक सलतनत-ए-उस्मानिया को मशरिक़-ए-क़रीब और इससे दूर मध्य पूर्व और इसके अतिरिक्त कम-ओ-बेश अन्य समस्त एशिया के देशों को सुदूर पूर्व के नाम से नामांकित करते हैं। नए दौर की भौगोलिक तक़सीम के लिहाज़ से चीन, मंगोलिया, जापान, कोरिया, इंडोनेशिया, वैतनाम, थाईलैंड, सिंगापुर, कमबोडिया और मलेशिया समेत असंख्य देश सुदूर पूर्व कहलाते हैं। कभी कबार आस्ट्रेलिया और दक्षिण एशिया के देशों में यूरोप से दूरी पर वाक़्य होने की वजह से सुदूर पूर्व में शुमार किए जाते हैं।

क़ुरआन-ए-करीम में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि وَلِلّٰہِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ पूर्व भी और पश्चिम भी दोनों अल्लाह ही के लिए हैं। अतः ज़रूरी था कि इस्लाम का नूर-ए-सदाक़त पूर्व को भी रोशन करता और पश्चिम भी उस से मुस्तफ़ीज़ होता। आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना मुबारक में ही सरज़मीन-ए-अरब बुतपरस्ती का जामा उतार कर तौहीद के नूर से मुनव्वर हो चुकी थी और फिर देखते ही देखते इस्लाम की किरनें अरब से निकल कर दुनिया में फैलने लगीं। आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सोहबत और तर्बीयत से फ़ैज़ याफताह सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने आपकी वफ़ात के बाद इस्लाम की तब्लीग़ और प्रचार के जो कामयाब नुक़ूश दुनिया में छोड़े सुदूर पूर्व में इस्लाम का नफ़ुज़ इसकी एक प्रख्यात उदाहरण है। जिन लोगों का यह ख़्याल है कि इस्लाम दुनिया में तलवार या ताक़त के ज़ोर पर फैला, सुदूर पूर्व की अक़्वाम का क़बूल-ए-इस्लाम इस आरोप का काफ़ी-ओ-शाफ़ी उत्तर है। सुदूर पूर्व के देशों में विशेषता चीन और इंडोनेशिया के जज़ायर में इस्लाम की तब्लीग़ और प्रचार में वुसअत का ज़माना जबकि सोलहवीं सदी ईसवी क़रार दिया जाता है, लेकिन वास्तविकता यह है कि इन इलाक़ों में इस्लाम का बीज ख़िलाफ़त-ए-राशिदा के दौर में सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हो के द्वारा से हुई। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा भी इशाअत इस्लाम के वास्ते दूर दराज़ देशों में जाया करते थे। यह जो चीन के मुल्क में करोड़ों मुस्लमान हैं। इस से मालूम होता है कि वहां भी सहाबा में से कोई शख़्स पहुंचा होगा।"

(मल्-फ़ूज़ात भाग 5 पृष्ठ 482 ऐडीशन 1988 ई.)

कुछ तारीख़ी शवाहिद इस बात का सत्यापन करते हैं कि ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन के अहद मुबारक में ही मुस्लमान मुबल्लेग़ीन इस्लाम का पैग़ाम लिए चीन तक पहुंच चुके थे। इन बुज़ुर्ग सहाबा की यादगारें और पाकीज़ा नुक़ूश आज भी चीन में महफ़ूज़ हैं। बहरी रास्तों से तशरीफ़ लाने वाले इन मुबल्लेग़ीन से इस्लाम का वर्णन इन शब्दों में मिलता है।

"समुद्री रास्ता से जो लोग आए थे वे ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन के ज़माना में थे और ख़ुशकी के रास्ता जो लोग आए थे वे ख़ुलफ़ाए बनी उमय्या के ज़माना में। जबकि ये चार मुबल्लिग़ चीन में दाख़िल हुए तो उनमें शहर canton में सुकूनत इख़तेयार कर ली, दूसरे ने शहर yangchow और तीसरे और चौथे ने शहर chuangchow में। आज हम को शहर "कंटन" में एक पुरानी मस्जिद जो "दाई शन ज़ी" के नाम से मौसूम है नज़र आती है और इस में एक ऊंचा मिनारा है जिसमें अज़ान की आवाज़ आज तक गूँजती रहती है, इन दोनों चीज़ों में अरब के फ़न-ए-तामीर की झलक नज़र आती है"

(चीनी मुस्लमान अज़ बदरुद्दीन चीनी पृष्ठ 14 मुद्रित मआरिफ़ प्रैस आज़म गढ़ सन 1935 ई.)

कुछ ग़ैर मुस्तनद रिवायात के मुताबिक़ ख़लीफ़-ए-सालिस हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु अन्हो के दूत की हैसियत से हज़रत साद बिन अबी वक़ास रज़ियल्लाहु अन्हो चीन तशरीफ़ ले गए। हज़रत साद बिन अबी विक़ास रज़ियल्लाहु अन्हो की चीन आमद का वर्णन चीनी मुस्लमानों में ज़बान ज़द-ए-ख़ास औ आम होने के इलावा चीन में मुस्लमानों की तारीख़ में जा-ब-जा मिलता है। चीन के जुनूबी शहर guangzhou में वाक़्य आपसे मंसूब मज़ार-ए-मुबारक और मस्जिद-ए-साद बिन अबी वक़ास की शौहरत आपकी चीन तशरीफ़ आवरी की तरफ़ इशारा करती हैं। जबकि कि हज़रत साद बिन अबी वक़ास रज़ियल्लाहु अन्हो की चीन आमद वाली रिवायात ग़ैर मुस्तनद हैं लेकिन कम से कम इस बात पर गवाह हैं कि चीन में इस्लाम की इशाअत सहाबा किराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम की कोशिशों के कारण है।

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की पवित्र जीवन और किरदार से सुदूर पूर्व में इस्लाम का जो बीज बोया गया उसने चीन की तारीख़ पर गहरे नुक़ूश छोड़े हैं। चीन की तारीख़ पर काम करने वाले मुहक़्क़िक़ीन इस बात का बरमला एतराफ़ करते हैं कि चीन ने मुस्लमानों के उलूम वफ़नून से भरपूर लाभ प्राप्त किया। विशेषता हलाकू ख़ान के हाथों बग़दाद की तबाही और ख़िलाफ़त-ए-अब्बासिया के ख़ातमा के बाद जब इस्लामी उलूम-ओ-फ़नून की रोशनी हल्की पड़ना शुरू हुई तो जिन देशों और क्षेत्रों में यह क़ीमती विरसा महफ़ूज़-ओ-मामून रही चीन भी उन में से एक है।

(चीनी मुस्लमान, बदरुद्दीन पृष्ठ 27 प्रकाशन मआरिफ़ प्रैस आज़मगढ़ 1935 ई.)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा इस्लाम की निशात-ए-सानिया की मुहिम आपकी हयात-ए-मुबारका में ही पूर्व और पश्चिम में ज़मीन के किनारों तक जा पहुंची। एक तरफ़ दुनिया के इंतेहाई पश्चिम में वाक़्य महाद्वीप अमरीका इस्लाम अहमदियत से अवगत हो गया तो दूसरी तरफ़ दुनिया के इंतेहाई पूर्वी किनारे अर्थात् न्यूज़ीलैंड और आस्ट्रेलिया से भी सईद फ़ित्रत रूहें समय के ईमाम की आग़ोश में आने लगीं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ज़िंदगी में ही सुदूर पूर्व से अहमदियत क़बूल करने वाले कुछ ख़ुशनसीब अफ़राद के अस्मा निमंलिखित हैं :

हांगकांग और चीन

हज़रत क़ारी ग़ुलाम मुज्तबा साहिब चीनी रज़ियल्लाहु अन्हो

हज़रत क़ारी ग़ुलाम हम साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो

आस्ट्रेलिया

हज़रत हाजी मूसा हसन साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो

न्यूज़ीलैंड

हज़रत प्रोफ़ैसर कलीमनट साहिब

ख़िलाफ़त सानिया के आरंभ में चीन में अहमदियत की चर्चा

सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो 1924 ई. के एक ख़ुतबा जुमा में चीन में अहमदियत के हवाले से एक अजीब वाक़िया का वर्णन फ़रमाया है। आप रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं : "इसी साल अर्थात पिछले बारह महीनों में कई नई बातें अहमदियत के विषय में मालूम हुई हैं। इसलिए मालूम हुआ है कि चीन में अहमदिया जमाअत मौजूद है। वहां कौन गया। वे लोग किस तरह अहमदी हुए। हमें इस का

भी इलम नहीं और न उस जमाअत के विषय में कोई इलम था कि तुर्की पार्लीमैंट का एक मैंबर चीन में गया उसने अपना सफरनामा लिखा जिस में वे लिखता है कि मैंने चीन के शहर कांटन में यह झगड़ा फ़साद सुना कि अहमदी जामा मस्जिद के विषय में कहते थे यह हमारी है और दूसरे मुस्लमान कहते थे कि हमारी है।" (ख़ुतबा जुमा फ़र्मूदा 29 फ़रवरी 1924 ई. मतबूआ ख़ुतबात महमूद भाग 8 पृष्ठ 312)

फिर हज़ूर रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं : "कुछ अरसा हुआ एक तर्क एक अजीब बात चीन में अहमदियत के विषय में अपनी तसनीफ़ में लिखता है कि एक शहर में मैं गया। तो मुझे मालूम हुआ कि एक मस्जिद के विषय में झगड़ा है और कुछ लोगों को इस में नमाज़ पढ़ने से रोका जाता है। मैंने दरयाफ़्त किया तो बताया गया कि ये अहमदी लोग हैं जो हिन्दुस्तान के एक शख़्स को मसीह मौऊद मानते हैं। उनको हम मस्जिद में नमाज़ नहीं पढ़ने देते। इस से मालूम हुआ कि चीन में भी अहमदी हैं हालाँकि आज तक वहां कोई अहमदी मुबल्लिग़ नहीं गया।"

(ख़ुतबा जुमा फ़र्मूदा 29 फ़रवरी 1924 ई. मतबूआ ख़ुतबात-ए-महमूद भाग 8 पृष्ठ 312)

तहरीक-ए-जदीद के अधीन पहली तब्लीग़ी मुहिम के लिए सुदूर पूर्व का इंतेख़ाब

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो ने तहरीक जदीद के मन्सूबा का ऐलान फ़रमाया तो इस मन्सूबा के तहत मुबल्लेग़ीन का पहला वफ़्द भिजवाने के लिए आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने सुदूर पूर्व के देशों का इंतेख़ाब फ़रमाया। यह वफ़्द 6 मई 1935 ई. को क़ादियान से रवाना हुआ। पहले क़ाफ़िले में शामिल मुबल्लेग़ीन और देशों की फ़हरिस्त निमंलिखित है :

सिंगापुर
मुबल्लिग़ श्रीमान मौलाना ग़ुलाम हुसैन अय्याज़ साहिब
तारीख़ रवानगी 6 मई 1935 ई.

चीन
मुबल्लिग़ : श्रीमान सूफ़ी अब्दुल ग़फ़ूर साहिब भैरवी
तारीख़ रवानगी 6 मई 1935 ई.

जापान
मुबल्लिग़ : श्रीमान सूफ़ी अब्दुल कादिर साहिब नयाज़
तारीख़ रवानगी 6 मई 1935 ई.

सुदूर पूर्व के मुबल्लेग़ीन की केदो-बंद और ग़ैरमामूली क़ुर्बानियां

जैसा कि अर्ज़ किया जा चुका है तहरीक-ए-जदीद की स्कीम के तहत पहली तब्लीग़ी मुहिम के लिए जिस ख़ित्ता का इंतेख़ाब किया गया वह मशरिक़ बईद के देश हैं। 1935 ई. में मुबल्लेग़ीन का पहला क़ाफ़िला मैदान-ए-अमल में पहुंचा। लेकिन जापानियों और सहयोगी देशों की चुप्पी और जंग-ए-अज़ीम दोम के नतीजा में बर्र-ए-सग़ीर से ख़िदमत इस्लाम के लिए आने वाले मुबल्लेग़ीन को भी शक की नज़र से देखा जाने लगा। कुछ वर्षों में ही देखते ही देखते मशरिक़ बईद के अक्सर देश जापान के ज़ेरे नगीं आ गए और यहां ख़िदमत-ए-इस्लाम पर मामूर मुबल्लेग़ीन असीर बना लिए गए। जिन मुबल्लेग़ीन को केदो बंद की सऊबतें और ईज़ा रसानी बर्दाश्त करनी पड़ी उनमें सूफ़ी अब्दुल्कदीर साहिब नियाज़ (जापान) श्रीमान मौलवी ग़ुलाम हुसैन अय्याज़ साहिब (सिंगापुर) श्रीमान मौलवी अब्दुल वाहिद साहिब (इंडोनेशिया) श्रीमान मौलवी शाह मुहम्मद साहिब (इंडोनेशिया) श्रीमान मौलवी मुहम्मद सादिक़ समाटरी साहिब (इंडोनेशिया) और श्रीमान मलिक अज़ीज़ अहमद साहिब (इंडोनेशिया) शामिल थे। इन मुबल्लेग़ीन का वर्णन करते हुए सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि :

"तहरीक जदीद के कुछ मुबल्लेग़ीन उस वक़्त दुश्मन के हाथों में क़ैदी हैं। स्ट्रीट सेटलीमेंटस (सिंगापुर) में हमारे मुबल्लिग़ मौलवी ग़ुलाम हुसैन अय्याज़ साहिब थे। जावा, समाटरा में मौलवी शाह मुहम्मद साहिब और मलिक अज़ीज़ अहमद साहिब गए थे और ये तीनों उस वक़्त जापानियों की क़ैद में हैं, गोया ये तीन क़ैद हैं और एक उस वक़्त तक लापता हैं"

(तहरीक-ए-जदीद एक इलाही तहरीक भाग 2 पृष्ठ 451)

"आज ही बज़रीया तार मुझे सूचना मिली है कि जापानी गर्वनमैंट ने सूफ़ी अब्दुल कादिर साहिब को क़ैद कर लिया है उन पर इल्ज़ाम लगाया गया है कि वह जापानी गर्वनमैंट के मुख़ालिफ़ हैं और यह भी हमारे लिए एक नया तज्र्बा है"

(ख़ुतबा जुमा फ़र्मूदा 15 नवंबर 1937 ई. बहवाला तहरीक-ए-जदीद एक इलाही तहरीक भाग अव्वल)

परन्तु ये मुबल्लेग़ीन हर किस्म की दुखों और कष्टों और तकालीफ़ पहुंचाए जाने के बावजूद इशाअत-ए-इस्लाम की जिद्द-ओ-जहद में मसरूफ़-ए-अमल रहे और अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़्ल से मुबल्लेग़ीन की काविशों को बा-समर किया और सुदूर पूर्व के देशों को इस्लाम अहमदियत के नूर से मुनव्वर कर दिया। इन मुबल्लेग़ीन की इस्लाम अहमदियत की इशाअत के मैदान में जुर्रत और बहादुरी का वर्णन मिलता है। जापानियों के ज़माने में जब किसी की हिम्मत नहीं होती थी कि जापानियों के ख़िलाफ़ अपने घर में भी किसी किस्म की बात करे। ऐसे ख़तरनाक वक़्त में मौलवी ग़ुलाम हुसैन अय्याज़ साहिब i.n.a के कैंप में जा कर ऐलान तब्लीग़ करते और बावजूद इसके कि हर वक़्त जापानी जासूस आप के घर पर रहते आप फ़रीज़ा तब्लीग़ बजा लाते रहे।

(उद्धरित तारीख़ अहमदियत भाग 7 पृष्ठ : 209)

"ऐसे इलाक़ों में भी अहमदियत फैलनी शुरू हो गई है जहां पहले बावजूद कोशिश के हमें कामयाबी नहीं हुई थी। मिलाया में तो यह हालत थी कि मौलवी ग़ुलाम हुसैन साहिब अय्याज़ को एक दफ़ा लोगों ने रात मार-मार कर गली में फेंक दिया और कुत्ते उनको चाटते रहे और या अब जो लोग मिलाया से वापस आए हैं उन्होंने बताया है कि अच्छे-अच्छे मालदार होटलों के मालिक और मुअज़्ज़िज़ वर्ग के सत्तर अस्सी के क़रीब दोस्त अहमदी हो चुके हैं और यह सिलसिला प्रतिदिन तरक़्क़ी कर रहा है।"

(बहवाला अल्-फ़ज़्ल रब्वः18 दिसंबर 2006 ई. पृष्ठ : 18)

सुदूर पूर्व के मुबल्लेग़ीन की क़ुर्बानियों का वर्णन करते हुए मुबल्लिग़ इंडोनेशिया मौलवी मुहम्मद सादिक़ साहिब समाटरी की क़ुर्बानियां और सबर और धैर्य का मुज़ाहरा भी इस इलाक़े में ख़िदमत पर मामूर मुबल्लेग़ीन के लिए एक रोशन मिसाल है। आप क़ैद औ-बंद में थे और जापानी हुकूमत की तरफ़ से आपकी सज़ा-ए-मौत का फ़ैसला हो चुका था और सज़ा पर अमल दरआमद के अगस्त 1945 ई. के आख़िरी हफ़्ता की तारीख़ भी निर्धारित की जा चुकी थी, लेकिन क़ुदरत-ए-ख़ुदावंदी और क़बूलियत दुआ के एजाज़ के नतीजा में अगस्त में ही जंग-ए-अज़ीम दोम फ़ैसलाकुन मोड़ पर पहुंच कर अपने अंत को पहुंची और जापान की शिकस्त पर परिणाम देने वाली हुई। जंग-ए-अज़ीम के ख़ातमा के नतीजा में न सिर्फ यह कि आप को रिहाई नसीब हुई बल्कि इस इलाक़ा में इस्लाम अहमदियत का पैग़ाम मज़ीद तेज़ी से फैलने लगा। आज मशरिक़-ए-बईद के अक्सर देशों में मुख़लिस जमाअतें क़ायम हैं। बतौर मिसाल बाअज़ देशों में जमाअत के क़ियाम की तारीख़ निहायत इख़्तेसार से पेश है।

आस्ट्रेलिया में इस्लाम अहमदियत की इशाअत और मर्कज़ का क़ियाम

ख़ैरपुर सिंध से ताल्लुक़ रखने वाले पठानों की तरीन क़ौम के चशमो चिराग हज़रत सूफ़ी हुस्न मूसा ख़ान साहब रज़ियल्लाहु अन्हो न सिर्फ

आस्ट्रेलिया बल्कि पूर्वी देशों से बैअत करके समय के ईमान की आग़ोश में गिरने वाला पहला फल था। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने से सितंबर 1903 ई. में बज़रीया ख़त बैअत की सआदत हासिल की। आपकी बैअत के ख़त के उत्तर में हज़रत मौलाना अब्दुल करीम साहिब सयालकोटी रज़ियल्लाहु अन्हो ने बैअत की क़बूलियत की इत्तिला देते हुए लिखा कि

"इस बात से बेहद ख़ुशी है कि ख़ुदा तआला ने ऐसे दूर दराज़ और अजनबी मुल्क में इस सिलसिला की सच्चाई और सदाक़त को किस तरह आपके दिल-ए-पर खोल दिया है। यह महिज़ उसका फ़ज़्ल है"

(रिसाला रफ़क़ाए अहमद, भाग 2 बहवाला रोज़नामा अल्-फ़ज़्ल रब्वः 18 दिसंबर 2006 ई. पृष्ठ : 35)

ख़िलाफ़त सानिया के दौर में आस्ट्रेलिया में बाक़ायदा जमाअत क़ायम हो चुकी थी। ख़िलाफ़त साल्सा के दौर में 1980 ई. के जलसा सालाना रबवः में जमाअत आस्ट्रेलिया का पहला वफ़द डाक्टर एजाज़ुलहक़ साहिब (साबिक़ प्रिंसिपल डेंटल कॉलेज लाहौर) अमीर जमाअत आस्ट्रेलिया की सरबराही में शरीक हुआ। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह की मंज़ूरी से 1981 ई. में आस्ट्रेलिया में जमाअत अहमदिया की पहली मस्जिद की तामीर का मन्सूबा शुरू हुआ।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह सितंबर 1983 ई. में आस्ट्रेलिया तशरीफ़ ले गए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के किसी ख़लीफ़ा का यह आस्ट्रेलिया का पहला दौरा था। इसी दौरे के दौरान मस्जिद बैतुल हुदा सिडनी की संग-ए-बुनियाद रखी गई।

इस मस्जिद का इफ़्तेताह 14 जुलाई 1989 ई. को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह के दूसरे दौरा आस्ट्रेलिया के दौरान फ़रमाया।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्नद ख़िलाफ़त पर मुतमक्किन होने के बाद 2006 ई. और 2013 ई. में दो मर्तबा आस्ट्रेलिया तशरीफ़ ले गए। इन दौरों ने जमाअत अहमदिया आस्ट्रेलिया में बेदारी की एक नई रूह फूंक दी। मसाजिद की तामीर, नए मुबल्लेग़ीन की आमद, अख़बारात-ओ-रसायल के द्वारा इस्लामअहमदियत की इशाअत, इंटरनैट और सोशल मीडीया के द्वारा तब्लीग़ और तरक़्क़ी के एक नए दौर का आग़ाज़ हुआ और ना सिर्फ आस्ट्रेलिया बल्कि पूरे महाद्वीप के समस्त स्थानों मे और दूर दराज़ के जज़ायर तक इस्लाम अहमदियत का पैग़ाम आम हुआ।

जज़ायर फिजी मेंअहमदियत का आग़ाज़ और मर्कज़ का क़ियाम

ख़िलाफ़त-ए-सानिया के आरंभ से ही फिजी में ग़ैर मबाईन अफ़राद मौजूद थे और यूं यह जज़ायर एक लिहाज़ से अहमदियत से परीचित हो चुके लेकिन फिजी से अहमदियत क़बूल करके ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया के साया में आने वाले पहले वजूद श्रीमान हाजी रमज़ान साहिब जो 1959 ई. में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो के दस्त-ए-मुबारक पर बैअत कर के अहमदियत की आग़ोश में आ गए।

इस वक़्त जज़ायर फिजी में दस से ज़्यादा मसाजिद इस्लामअहमदियत के मुस्तक़िल मराकज़ की हैसियत से दिन रात ख़िदमत-ए-इस्लाम में व्यस्त हैं। एक अहमदिया स्कूल के इलावा खलिफ़ा की क़ियादत में क़ुरआन-ए-करीम के तराजुम और लिटरेचर की तैयारी तथा मर्कज़ी मुबल्लेग़ीन के इलावा दाईने इलाल्लाह की सूरत में ख़ुद्दाम-ए-ख़िलाफ़त का एक गिरोह दुनिया के इंतेहाई मशरिक़ में वाक़्य उन दूर दराज़ जज़ायर में ख़िदमत-ए-इस्लाम पर मामूर है। इशाअत-ए-इस्लाम अहमदियत की आलमगीर मुहिम की क़ियादत करते हुए हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुला 1983 ई. में और हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ 2006 ई. में फिजी तशरीफ़ ले गए और जज़ायर फिजी के के दौरे करके ज़मीन का किनारा कहलाने वाले इस ख़ित्ता अर्ज़ी तक इस्लामअहमदियत का पैग़ाम पहुंचाया।

न्यूज़ीलैंड में अहमदियत का नफ़ूज़ और मर्कज़ का क़ियाम

न्यूज़ीलैंड भी इन ख़ुश-क़िस्मत जज़ायर में शामिल है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माना मुबारक में ही इस्लाम अहमदियत से अवगत हो गया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ज़िंदगी के आख़िरी दिनों में प्रोफ़ैसर कलीमनट साहिब हिन्दुस्तान का सफ़र करते हुए क़ादियान पहुंचे और मई 1908 ई . में समय के ईमाम की ज़यारत से फ़ैज़याब हुए। न्यूज़ीलैंड वापस चले जाने के बाद आपने इस्लाम अहमदियत को क़बूल कर लिया और हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहब रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ राबते में रहे और 10 दिसंबर 1922 ई. तक अंतिम सास तक जमाअत से वाबस्ता रहे। सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने दौर-ए-न्यूज़ीलैंड के दौरान 7 मई 2006 ई. को आपकी क़ब्र पर तशरीफ़ ले गए और दुआ की।

ख़िलाफ़त राबेया के दौर में 1998 ई. में न्यूज़ीलैंड के शहर ऑकलैंड (auckland) मे जमाअत अहमदिया ने एक ज़मीन का टुकड़ा ख़रीद कर बाक़ायदा मर्कज़ इस्लाम अहमदियत की बुनियाद रखी। ख़िलाफ़त ख़ामसा के बाबरकत दौर में 2013 ई. में यहां मस्जिद बैतुल मुकीत का इफ़्तिताह अमल में आया।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ 2006 ई . और 2013 ई. में स्वयं न्यूज़ीलैंड तशरीफ़ ले गए और न्यूज़ीलैंड की पार्लीमैंट समेत मलिक के तूल-ओ-अर्ज़ के दौरे करके दुनिया के इंतेहाई मशरिक़ में वाक़्य न्यूज़ीलैंड के ख़ूबसूरत जज़ायर को इस्लाम अहमदियत का पैग़ाम पहुंचाने का फ़रीज़ा अदा किया।

न्यूज़ीलैंड में इस वक़्त एक मुनज़्ज़म जमाअत क़ायम है, ख़िलाफ़त के अधीन उस वक़्त तीन मुबल्लेग़ीन और दर्जनों दाईन इलाल्लाह देश के मुख़्तलिफ़ इलाक़ों में सरगर्म अमल हैं, अख़बारात और रसायल, टीवी और सोशल मीडीया के द्वारा मुल्क के हर वर्ग तक इस्लाम अहमदियत का पैग़ाम पहुंचाया जा रहा है। न्यूज़ीलैंड के मुक़ामी बाशिंदों की ज़बान "मावरी" में भी क़ुरआन-ए-करीम का अनुवाद शाय हो चुका है।

चीन में इस्लाम अहमदियत का क़ियाम

हज़रत मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम के ज़माना मुबारक में ही अहमदियत का पौधा लग चुका था लेकिन चीन में पहला अहमदिया मिशन सूफ़ी अब्दुल ग़फ़ूर साहिब भैरवी ने क़ायम किया जो 27 मई 1935 ई. को हांगकांग पहुंचे और मुतअद्दिद साल तक फ़रीज़ा तब्लीग़ बजा लाने के बाद वापस क़ादियान तशरीफ़ ले आए। आपके ज़माना में जमाअत अहमदिया चीन की बुनियाद पड़ी। सबसे पहले चीनी अहमदी (जिनकी इत्तिला मर्कज़ पहुंची) लीओन्फुंग leung king fung थे। जो क़स्बा kawai show ज़िला santax सूबा kawan-teeng के बाशिंदा थे।

सूफ़ी साहिब मौसूफ़ ने दौरान के क़ियाम में "इस्लामी उसूल की फ़िलोसफ़ी" का चीनी अनुवाद कराया जिस से इशाअत अहमदियत में पहले से ज़्यादा आसानी पैदा हो गई।

सूफ़ी साहिब के बाद हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो के इरशाद पर 16 जनवरी 1936 ई. को शेख़ अब्दुल वाहिद साहिब फ़ाज़िल चीन रवाना हुए। शैख़-साहब ने इस्लामी उसूल की फ़िलोसफ़ी के चीनी अनुवाद की इशाअत के इलावा कुछ तब्लीग़ी पमफ़लेट बकसरत शाय किए। आपके द्वारा भी कई सईद रूहें अहमदियत मे शामिल हुईं। आप 6 मार्च 1939 ई . को वापस मर्कज़ पहुंचे।

शैख़-साहब अभी चीन में ही इशाअत-ए-इस्लाम अहमदियत का फ़र्ज़ अदा कर रहे थे कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो ने चौधरी मुहम्मद इसहाक़ सयालकोटी साहिब को 27 सितंबर 1937 ई .

को चीन रवाना फ़रमाया और अपने क़लम से मुंदरजा ज़ैल नसाएह लिख कर दिए।

"अल्लाह तआला की मुहब्बत सब उसूलों से बड़ा असल है। इसी में सब बरकत और सब ख़ैर जमा है। जो सच्ची मुहब्बत अल्लाह तआला की पैदा करे वह कभी नाकाम नहीं रहता और कभी ठोकर नहीं खाता। नमाज़ों को दिल लगा कर पढ़ना और बाक़ायदगी से पढ़ना। ज़िक्र-ए-इलाही। रोज़ा। मुराक़बा यानी अपने नफ़्स की हालत का अध्ययन करते रहना। सोना कम। खाना कम। दीन के विषय में हंसी न करना न सुनना। मख़्लूक़-ए-ख़ुदा की ख़िदमत। निज़ाम का अदब-ओ-एहतराम और इससे ऐसी वाबस्तगी कि जान जाए इस में कमी न आए। इस्लाम के आला उसूल हैं।

क़ुरआन-ए-करीम का ग़ौर से मुताला इलम को बढ़ाता है और दिल को पाक करता है और दिमाग़ को नूर बख़्शता है। सिलसिला की क़ुतुब और अख़बारात का मुताला ज़रूरी है।

के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम उसके ख़ादिम की मुहब्बत ख़ुदा तआला की मुहब्बत का ही भाग है। न मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जैसा कोई नबी गुज़रा है। न मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम जैसा नायब सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम।

अल्लाह का संयम एक अहम चीज़ है। परंतु बहुत लोग उसके मज़मून को न समझने की कोशिश करते हैं न इस पर अमल करते हैं।

सिलसिला के मुफ़ाद को हर-दम सामने रखना। ऊंची नज़र रखना। मगलूबियत से इंकार और ग़लबा इस्लाम और अहमदियत के लिए कोशिश हमारी ज़िंदगी का नसबुल ऐन होने चाहिए।

ख़ाकसार। "मिर्ज़ा महमूद अहमद"

चौधरी मुहम्मद इ सहक साहिब करीबन साढ़े तीन साल तक चीन में अहमदियत का नूर फैलाते रहे और अप्रैल 1941 ई . को क़ादियान आ गए।

(तारीख़-ए-अहमदियत भाग 7 पृष्ठ 221 से 222)

चीन में इस्लाम अहमदियत की तब्लीग़ी काविशें लाभदायक हुईं और अल्लाह तआला ने इस सरज़मीन से ऐसी सईद फ़ित्रत रूहें जमाअत को अता कर दीं जिन्हों ने चीनी ज़बान में तब्लीग़-ए-इस्लाम की ज़िम्मेदारी को निहायत जाँ-फ़िशानी से अदा किया। जिन सईद फ़ित्रत चीनियों ने इस्लाम अहमदियत क़बूल की उनमें नुमायां नाम श्रीमान मुहम्मद उसमान चोचिंग शी साहिब का है। आप 13 दिसंबर 1925 ई . में चीन के सूबा आनखोई में पैदा हुए और ख़िलाफ़त सानिया के दौर में अहमदियत की आग़ोश में आए। आप 13 अप्रैल 2018 ई . को इंग्लिस्तान में वफ़ात पा गए। सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने आपकी वफ़ात पर ख़ुतबा जुमा में आपकी दीनी ख़िदमात और औसाफ़-ए-हमीदा का वर्णन फ़रमाया। आपने चीनी ज़बान जानने वालों के लिए इस्लाम अहमदियत के परिचय पर मुश्तमिल लिटरेचर तैयार किया। क़ुरआन-ए-करीम का चीनी ज़बान में अनुवाद किया और बाअज़ चीनी दानिशवरों और स्कालर्ज़ ने इस अनुवाद को एक शाहकार क़रार दिया है।

चीनी ज़बान में इस्लाम अहमदियत के लिटरेचर की तैयारी के लिए एक जदीद चीनी वेबसाइट का इजरा हो चुका है, तथा चीनी ज़बान में इस्लाम अहमदियत की इशाअत के लिए चीनी डैसक के क़ियाम से चीन में इस्लाम अहमदियत की तरवीज-ओ-इशाअत की मुस्तक़िल बुनियादें क़ायम हो चुकी हैं।

जापान में इस्लाम अहमदियत के मर्कज़ का क़ियाम

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पवित्र समय में ही हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो के तब्लीग़ी ख़ुतूत के द्वारा इस्लाम अहमदियत का पैग़ाम जापान तक पहुंच चुका था लेकिन इस मुल्क में एक मुस्तक़िल मर्कज़ का क़ियाम उस वक़्त अमल में आया जब श्रीमान सूफ़ी अब्दुल क़दीर साहिब 4 जून 1935 ई . को जापान के साहिली शहर "कोब्बे" पहुंचे। आप जमाअत अहमदिया की तरफ़ से जापान तशरीफ़ लाने वाले पहले मुबल्लिग़ थे। आपने जापान में क़ियाम के दौरान जापानी ज़बान सीखी, तब्लीग़ी लैक्चरज़ दिए और इस्लाम के परिचय पर मुश्तमिल कुछ लिटरेचर तैयार करवाया। जंग-ए-अज़ीम दोम के आग़ाज़ से कुछ अरसा क़बल आपको बाअज़ शकूक की बिना पर जापानी इदारों ने हिरासत में भी लिया और कुछ तफ़तीश करने के बाद रिहा कर दिया।

आप अभी जापान में ही थे कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ने 10 जनवरी 1937 ई . को मौलवी अब्दुल ग़फ़ूर साहिब को जापान रवाना फ़रमाया। आपको जापान भिजवाते हुए हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने बाअज़ नसाएह फ़रमाएं जो सुदूर पूर्व के देशों में मसरूफ़ मुबल्लेग़ीन और दाईन इलाल्लाह के लिए एक जामा लाहे अमल हैं।

(तारीख़ अहमदियत भाग 8 पृष्ठ 219 से 221)

इसके बाद जंग-ए-अज़ीम दोम की वजह से कुछ अरसा तक मुबल्लेग़ीन की जापान आमद का सिलसिला स्थतगित रहा लेकिन ख़िलाफ़त सालसा के दौर में 1969 ई . अब तक जापान में मुबल्लेग़ीन और अहबाब-ए-जमाअत ख़ुलफ़ा-ए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की राहनुमाई में इशाअत-ए-इस्लाम की ख़िदमत बजा ला रहे हैं।

ख़िलाफ़त सानिया के दौर में श्रीमान मुहम्मद उवैस कोबायाशि साहिब का क़बूल इस्लाम अहमदियत, ख़िलाफ़त सालिसा के दौर में अहमदिया सैंटर नागोया की ख़रीद, ख़िलाफ़त राबिया के दौर में जापानी अनुवाद क़ुरआन-ए-करीम की इशाअत और ख़िलाफ़त ख़ामसा के मुबारक दौर में मस्जिद बैतुल अहद की तामीर तारीख़ अहमदियत जापान के अहम बुनियाद का पत्थर हैं।

इंडोनेशिया में इस्लाम अहमदियत की तुख़्म-रेज़ी 1923 ई. में समाटरा के चार नौजवान मुहतरम मौलवी अबू बकर अय्यूब साहिब, मौलवी अहमद नूरुद्दीन साहिब, मौलवी ज़ैनी दहलान साहिब और हाजी महमूद साहिब दीनी तालीम के हासिल करने के लिए समाटरा से हिन्दुस्तान आए। ख़ुदा की तक़दीर उन्हें कलकत्ता, लखनऊ और लाहौर के बाद क़ादियान खींच लाई। अगस्त 1923 ई . में ये चारों नौजवान क़ादियान में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़िदमत में हाज़िर हुए और यह दरख़ास्त की कि हमारी दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत का इंतेज़ाम किया जाए। इसलिए हुज़ूर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनकी दरख़ास्त क़बूल फ़रमाते हुए उनकी तालीम का बंद-ओ-बस्त फ़रमाया और दौरान-ए-तालीम ही उन पर अहमदियत की हक़ीक़त-ओ-सदाक़त ज़ाहिर हुई और उन्होंने अहमदियत क़बूल कर ली। क़ादियान मैं बैअत करने वाले इंडोनेशियन नौजवानों ने बैअत के बाद फिरअहमदियत के नूर से जल्द अपने देश को भी मुनव्वर करने की कोशिश की। वहीं बैठे-बैठे क़ादियान से ही उन्होंने

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौंक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (ख़ून, मल, बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.
चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

अपने रिश्तेदारों को तब्लीग़ी ख़ुतूत लिखने शुरू कर दिए और इस तरह इंडोनेशिया में तब्लीग़ के लिए राह हमवार होना शुरू हो गई। हज़रत ख़लीफ़ सानी रज़ियल्लाहु अन्हो जब 29 नवंबर 1924 ई. को यूरोप के दौरे से वापस तशरीफ़ लाए तो हज़ूर रज़ियल्लाहु अन्हो के सम्मान में एक इस्तक़बालिया दिया गया। इस दाअवत में इन विद्यार्थियों ने जो इंडोनेशिया से आए थे हज़ूर रज़ियल्लाहु अन्हो से यह लाभ प्राप्त किया कि हज़ूर मशरिक़ के उन जज़ायर की तरफ़ भी तवज्जा फ़रमाएं। इस वक़्त हज़ूर रज़ियल्लाहु अन्हो ने वादा फ़रमाया कि इंशा अल्लाह तआला मैं ख़ुद या मेरा कोई नुमाइंदा आपके मुल्क में जाएगा। इसलिए हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत मौलवी रहमत अली साहिब का इंतेख़ाब फ़रमाया और आप को वहां भेजा जो समुंद्री जहाज़ के रास्ते सफ़र करते सितंबर 1925 ई . में इस मुल्क में पहुंचे। और सबसे पहले समाटरा में आचेया की एक छोटी सी बस्ती "तापा त्ववान" (tapatu-an) मे वारिद हुए। वहां की तहज़ीब-ओ-मुआशरत और थी। ज़बान मुख़्तलिफ़ थी। ग़ैर लोग थे। अपना जानने वाला भी कोई न था। लेकिन ये तमाम इबतेदाई मराहिल और मुश्किलात हज़रत मौलवी-साहब की हिम्मत और इरादा में फ़र्क़ न डाल सके और ज़बान सीखने के साथ साथ उन्होंने इन्फ़रादी तब्लीग़ भी शुरू कर दी। फिर उल्मा से बेहस मुबाहिसे और मुनाज़रे भी शुरू हो गए। हज़रत मौलवी-साहब को ख़ुदा तआला ने अपनी ताईद-ओ-नुसरत से नवाज़ा और चंद माह में ही ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल से इंडोनेशिया की पहली जमात क़ायम हो गई और आठ अफ़राद ने बैअत की। इसके बाद मज़ीद बैअतें होती चली गईं। हज़रत मौलवी-साहब को आग़ाज़ में मुश्किलात का सामना करना पड़ा। एक ज़बान का मसला, फिर मुख़ालेफ़तें भी शुरू हुईं और तहज़ीब इत्यादि मुख़्तलिफ़ थी, तमदुनी रिवायात मुख़्तलिफ़ थीं। लेकिन मौलवी-साहब ने इस पर क़ाबू पा लिया। उल्मा ने वहां यह फ़तवा दे दिया कि अहमदियों की कुतुब और मज़ामीन न पढ़े जाएं और न ही उनके लैक्चर सुने जाएं। जब मुक़ामी अहमदियों की संख्या बढ़ने लगी तो वहां के लोगों ने मुक़ामी अहमदियों का बाईकॉट करना शुरू कर दिया यह तक कि अख़बारात वाले भी कोई ख़बर छापने के लिए तैयार नहीं थे। कोई मज़मून छापने के लिए तैयार नहीं होते थे। मुख़ालेफ़त इस हद तक बढ़ गई कि लोगों के तीन तीन हज़ार के मजमे मौलवी-साहब की रिहायश गाह के आगे खड़े हो के नारेबाज़ी और हुल्लड़ बाज़ी करते, तरह तरह के दिल-आज़ार नारे लगाते थे और गालियां देते थे।

इसके बाद फिर हाजी महमूद साहिब भी वहां आ गए। मौलवियों ने किसी तरह ज़बरदस्ती उन से यह वर्णन लिखवा लिया कि मैं अहमदियत छोड़ता हूँ और इस पर एक इश्तेहार शाय करवा दिया और बड़ा शोर पड़ा। इसके बाद मौलवी-साहब की मुख़ालिफ़त और भी ज़्यादा शिद्दत से शुरू हो गई। लेकिन हाजी महमूद साहिब बाद में सँभल गए और उल्मा की चालों से महफ़ूज़ रहे। अल्लाह तआला ने उन्हें बचा लिया। और जब उल्मा को यह पता लगा कि हमारा मन्सूबा नाकाम हो गया है तो मुत्तफ़िक़ा तौर पर हज़रत मौलवी रहमत अली साहिब को देश से निकालने के लिए कोशिशें शुरू कर दीं। और हुकूमत के अफ़राद और नुमाइंदों तक गए। लेकिन हुक्काम ने उन्हें कह दिया कि हम मज़हबी मामलात में दख़ल अंदाज़ी नहीं करेंगे। यह सिलसिला इसी तरह रहा। दिसम्बर 1927 ई. में पडाइंग में ग़ैर अहमदी उल्मा के साथ एक मुबाहिसा हुआ जिस में बड़े उल्मा और मशायख़ और अख़बारों के ऐडीटर और हुकूमती ओहदेदार मौजूद थे। इस मुबाहिसे में जमाअत अहमदिया के मुबल्लिग़ को अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से बरतरी हासिल रही और जैसा कि मुक़द्दर था या होना ही था। मुख़ालिफ़ उल्मा को नाकामी का मुँह देखना पड़ा। इसके नतीजे में अहमदियत की तब्लीग़ की राह हमवार हो गई। इस दौरान इंडोनेशिया में तीसरी जमाअत डोकू (doko) के मुक़ाम पर क़ायम हुई।

(उद्धरित ख़ुतबा जुमा फ़र्मूदा 11 फ़रवरी 2011 ई.)

ख़ुलफ़ा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मुसलसल राहनुमाई और तवज्जा की बदौलत आज इंडोनेशिया में एक बड़ी और मुस्तहकम जमाअत का क़ियाम अमल में आ चुका है, इंडोनेशिया में जामिआ अहमदिया से तैयार होने वाले मुबल्लेग़ीन इंडोनेशिया और अन्य हमसाया देशों में ख़िदमत पर कमरबस्ता हैं, एम.टी. ए पर नशर होने वाली इंडोनेशियन सर्विस इस मुल्क में इस्लाम अहमदियत की इशाअत का द्वारा बन रही है तथा इंडोनेशियन डैसक के क़ियाम से इस्लाम अहमदियत के लिटरेचर की तैयारी और तब्लीग़ का काम एक मुस्तक़िल निज़ाम की शक्ल इख़्तेयार कर चुका है।

सिंगापुर में इशाअत-ए-इस्लाम की मुहिम

श्रीमान मौलवी ग़ुलाम हुसैन साहिब 6 मई 1935 ई. को क़ादियान से सिंगार पूर रवानगी के लिए सफ़र पर निकले। आप 15 साल तक सिंगापुर और इससे जुड़े इलाक़ों में इस्लाम अहमदियत की इशाअत-ओ-तब्लीग़ में सरगर्म रहे। जंग-ए-अज़ीम दोम के दौरान कठिन हालात का सामना करना पड़ा, कुछ अरसा तक आप जापानी फ़ौज की क़ैद में भी रहे। आपकी तब्लीग़ी काविशें लाभदायक हुईं। और 1937 ई. में श्रीमान हाजी जाफ़र साहिब ने अहमदियत स्वीकार की। आप निहायत मुख़लिस और फ़िदाई अहमदी थे। 1947 में सिंगारपुर में 19 हज़ार 137 मुरब्बा फुट की ज़मीन खरीद कर इस्लाम अहमदियत की इशाअत का एक मुस्तक़िल मर्कज़ क़ायम हुआ। 1983 ई. में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह ने अपने दौरा सिंगापुर के दौरान मस्जिद ताहा की नीव रखी। यह मस्जिद जमाअत अहमदिया सिंगापुर का मर्कज़ है।

श्रीमान मौलवी ग़ुलाम हुसैन अय्याज़ साहिब की तब्लीग़ी काविशों और दिन रात की कोशिशों के नतीजा में न सिर्फ सिंगापुर बल्कि मलाका, जोहर बारू और इंडोनेशिया और मलेशिया के अन्य द्वीप पर भी इस्लाम अहमदियत के पैग़ाम से अवगत हुए और कई सईद लोग अहमदियत में शामिल हो गए।

ख़ुलफ़ा-ए-अहमदियत की मशरिक़-ए-ब'ईद की यात्राएँ

जमात अहमदिया के क़ियाम के आरम्भ से ही सुदूर पूर्व में तब्लीग़-ए-इस्लाम की सरगर्मीयां जारी व सारी हैं। ख़िलाफ़त सानिया के दौर से ही सुदूर पूर्व में बाक़ायदा मुबल्लेग़ीन भिजवा कर इशाअत-ए-इस्लाम के एक मरबूत मन्सूबा की बुनियाद रखी जा चुकी थी। लेकिन इन कोशिशों की पूर्ति वह तारीख़ी दौरे हैं जब इशाअत इस्लाम की आलमगीर मुहिम की क़ियादत करते हुए ख़ुलफ़ा मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम स्वयं मशरिक़-ए-ब'ईद के देशों में पधारे। ख़ुलफ़ा कराम के मशरिक़-ए-ब'ईद के दौरों की फ़हरिस्त निमंलिखित है।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह

(सिंगापुर) अगस्त 1983 ई.

(आस्ट्रेलिया) 25 सितंबर से 7 अक्तूबर 1983

(फिजी) सितंबर 1983 ई.

(आस्ट्रेलिया) 4 जुलाई से 18 जुलाई 1989 ई.

(जापान) 24 जुलाई से 28 जुलाई 1989 ई.

(इंडोनेशिया) 19 जून से 11 जुलाई 2000 ई.

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ :

(सिंगापुर) 5 अप्रैल से 10 अप्रैल 2006 ई.

(आस्ट्रेलिया)11अप्रैल से 25 अप्रैल 2006 ई.

(फिजी) 25 अप्रैल से 3 मई 2006 ई.

(न्यूज़ीलैंड) 4 मई से 7 मई 2006 ई.

(जापान) 8 मई से 14 मई 2006 ई.

(सिंगापुर) 21 सितंबर से 30 सितंबर 2013 ई.

(आस्ट्रेलिया) यक्म अक्तूबर से 28 अक्तूबर 2013 ई.

(न्यूज़ीलैंड) 28 अक्तूबर से 6 नवंबर 2013 ई.

(जापान) 6 नवंबर से 13 नवंबर 2013 ई.

(जापान) 16 नवंबर से 24 नवंबर 2015 ई.

ख़िलाफ़त हक़्क़ा की क़ियादत में तब्लीग़-ए-इस्लाम का मज़बूत निज़ाम

इस्लाम अहमदियत के पैग़ाम को समस्त संसार तक पहुंचाने के लिए ख़ुलफ़ा-ए-हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की निगरानी और राहनुमाई में सुदूर पूर्व के अधिकतर देशों में तब्लीग़-ए-इस्लाम का एक मरबूत निज़ाम क़ायम हो चुका है। पूर्वी देशों की बड़ी भाषाओं चीनी, जापानी, इंडोनेशियन और वेतनामी समेत असंख्य अन्य भाषाओं में क़ुरआन-ए-करीम के अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं।

मशरिक़-ए- बईद के देशों में बसने वाले हज़ारों अहमदी मुस्लमान ख़लीफ़-ए-वक़्त के सुलतान नसीर बनते हुए इस्लामअहमदियत के पैग़ाम की इशाअत में नियमित सरगर्म अमल हैं। जमाअती निज़ाम के इलावा इन देशों की ज़ेली तंज़ीमें, सोशल मीडीया टीमें, मुख़्तलिफ़ ज़बानों की वैबसाईटस और एम.टी.ए. के द्वारा इस्लाम अहमदियत का पैग़ाम दूर दराज़ द्वीपों तक पहुंच रहा है।

चीनी डैसक, इंडोनेशियन डैसक और जापानी डैसक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कुतुब के अनुवाद, ख़लीफ़-ए-वक़्त के ख़ुतबात और खिताबात समेत असर-ए-हाज़िर के तक़ाज़ों के मुताबिक़ लिटरेचर की तैयारी में व्यस्त हैं।

मर्कज़ी मुबल्लेग़ीन के इलावा जामिआ अहमदिया इंडोनेशिया से फ़ारिग़-उत-तहसील मुबल्लेग़ीन मशरिक़-ए-बईद के देशों और द्वीपों में दिनरात तब्लीग़-ए-इस्लाम की काविशों में व्यस्त हैं। तथा मशरिक़-ए-बईद के देशों को यह एज़ाज़ भी हासिल है कि इस ख़ित्ता से ऐसे मुख़्लेसीन और वाकफ़ीन ज़िंदगी पैदा हो चुके हैं और मुसलसल हो रहे हैं जो अपनी ज़िंदगियां अल्लाह तआला की राह में पेश करके ख़िदमत-ए-इस्लाम का फ़रीज़ा बजा लाने का अहृद कर चुके हैं।

मशरिक़-ए-बईद में इस्लाम अहमदियत की इशाअत के विषय में निमंलिखित वाक़ियात भी तारीख़ी में शामिल होने के योग्य हैं। मशरिक़ी अक़्वाम और एशिया के देशों में इशाअत-ए-इस्लाम की कामयाबियों के लिए दुआ की तहरीक के उद्देश्य से निहायत इख़्तेसार के साथ चंद उमूर पेश-ए-ख़िदमत हैं।

शुमाल मशरिक़ी एशिया में तामीर होने वाली पहली मस्जिद

मस्जिद बैतुल अहद जापान को यह एज़ाज़ हासिल है कि उत्तर मशरिक़ी एशियाई के देशों में तामीर होने वाली जमाअत अहमदिया की पहली मस्जिद है। सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस मस्जिद के इफ़्तिताह के अवसर पर ख़ुतबा जुमा इरशाद फ़रमाते हुए फ़रमाया कि :

"यह मस्जिद न केवल जापान बल्कि जो उत्तर मशरिक़ी एशिया के देश चीन, कोरिया, हांगकांग, ताइवान इत्यादि हैं, उनमें जमाअत की पहली मस्जिद है। अल्लाह तआला उसको बाक़ी जगहों में भी रास्ते खोलने का द्वारा बनाए और वहां भी जमाअतें तरक़्क़ी करें और मस्जिदें बनाने वाली हों।"

(ख़ुतबा जुमा फ़र्मूदा 20 नवंबर 2015 ई. मतबूआ अल्-फ़ज़्ल इंटरनैशनल 11 दिसंबर 2015 ई. पृष्ठ : 8)

बर्र-ए-आज़म आस्ट्रेलिया में पहली मस्जिद की संग-ए-बुनियाद

आस्ट्रेलिया के शहर सिडनी में मस्जिद बैतुल हद की बुनियाद भी इस ख़ित्ता में इस्लाम अहमदियत की इशाअत-ओ-नफ़ुज़ के लिए ग़ैरमामूली एहमीयत रखती है। इस मस्जिद की नीव रखे जाने से पूर्व हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह ने फ़रमाया कि

"अभी चंद दिन तक इन शा अल्लाह हम मशरिक़ के दौरा पर पाकिस्तान से रवाना होंगे और इस दौरा में महाद्वीप आस्ट्रेलिया में सबसे पहली अहमदिया मस्जिद की बुनियाद रखने का सबसे बड़ा फ़रीज़ा अदा करना है। यह मस्जिद की बुनियाद भी होगी और मिशन हाऊस की बुनियाद भी होगी। अर्थात इस मस्जिद के साथ एक बहुत ही उम्दा मिशन हाऊस की इमारत भी तामीर होगी जहां मुबल्लिग़ अपने हर किस्म के फ़रायज़ पूरे कर सकेगा। इस लिहाज़ से यह जमात अहमदिया की तारीख़ में एक बहुत ही अहम मस्जिद है कि एक नए द्वीप में हमें इसकी बुनियाद रखने की तौफ़ीक़ मिल रही है। इस से पहले आस्ट्रेलिया ख़ाली पड़ा था और जमाअत यह तो कह सकती थी कि दुनिया के हर क्षेत्र में हमने अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से इस्लाम का पैग़ाम पहुंचाया है। लेकिन महाद्वीप आस्ट्रेलिया में अगर पैग़ाम पहुंचाया तो संयोग से इन्फ़िरादी कोशिश से पहुंचा। जमाअत की तरफ़ से कोई बाक़ायदा मिशन नहीं बनाया गया और कोई मस्जिद नहीं बनाई गई थी।" (ख़ुतबा फ़र्मूदा 2 सितंबर 1983 ई. प्रकाशन रोज़नामा अल्-फ़ज़्ल रब्वाह 18 दिसंबर 2006 ई. पृष्ठ : 37)

आस्ट्रेलिया की रुहानी दरयाफ़त का पहला दिन

जब कि आस्ट्रेलिया में अहमदियत का संदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माना मुबारक में पहुंच चुका था। लेकिन सिडनी में मस्जिद बैतुल हुदा का निर्माण इस ख़ित्ता के लिए एक तारीख़ी वाक़िया था। इस दिन की एहमीयत और अज़मत को वर्णन करते हुए हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह फ़रमाते हैं :

"आप आस्ट्रेलिया वालों जो उस वक़्त मेरे सम्बोधन में हैं शायद अपनी तारीख़ के हवाला से मेरी बात को आसानी से समझ सकें। इस लिए आईए अब मैं आपको यह बताऊं कि आस्ट्रेलिया की साबिक़ा तारीख़ की पृष्ठभूमि में आज के दिन की क्या हैसियत है। मेरे नज़दीक यह दिन आस्ट्रेलिया की रुहानी और मज़हबी दरयाफ़त का पहला दिन है। जबकि आज हमने आपको आला मज़हबी और रुहानी इक़दार सिखाने की ग़रज़ से फिर से दरयाफ़त किया है। अतः उस दिन को इस दिन से एक गोना मुनासबत है जिस दिन कैप्टन जेम्ज़ किक ने आस्ट्रेलिया को फिर से दरयाफ़त किया था।"

(रोज़नामा अल्-फ़ज़्ल रब्वाह 18 दिसंबर 2006 ई. पृष्ठ : 34)

सुदूर पूर्व के देशों जापान से तहरीक जदीद के 80वे साल का ऐलान

मशरिक़ बईद के ख़ित्ता को यह एज़ाज़ भी हासिल है कि तहरीक जदीद के 80वें साल का ऐलान इसी स्थान के अहम मुल्क अर्थात सरज़मीन जापान से हुआ। तिथि 8 नवंबर 2013 ई. को नागोया में ख़ुतबा जुमा इरशाद फ़रमाते हुए हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने तहरीक जदीद के नए साल का ऐलान फ़रमाया। जुमा का यह मुबारक दिन इस लिहाज़ से भी यादगार था कि इसी ख़ुतबा जुमा के द्वारा हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने जापान में जमाअत अहमदिया की पहली मस्जिद की तामीर का ऐलान फ़रमाया। हुज़ूर अनवर ने मस्जिद के लिए पेश की गई माली क़ुर्बानी का वर्णन करते हुए फ़रमाया कि :

"जब आपको तवज्जा दिलाई गई कि नया मर्कज़ ख़रीदें तो जैसा कि पहले मैं वर्णन कर चुका हूँ, जमाअत जापान ने माली क़ुर्बानियां कीं और अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से यह जगह ख़रीद ली। छोटी सी जमाअत है, लेकिन अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से बड़ी क़ुर्बानी की है, इस लिहाज़ से बहुत से लोगों ने बड़ी-बड़ी रकमें अदा की हैं। बच्चों ने अपने जेब ख़र्च

अदा किए, औरतों ने अपने ज़ेवर अदा किए और कुछ ने अपने पाकिस्तान के घर बेच कर रकमें अदा कीं या कोई जायदाद बेच कर रक़म अदा की। बाअज़ ने अपने क़ीमती और अज़ीज़ ज़ेवर, पुराने बुज़ुर्गों से मिले हुए ज़ेवर बेच कर मस्जिद के लिए क़ीमत अदा की। उद्देश्य कि माली क़ुर्बानीयों में अल्लाह तआला के फ़ज़ल से एक दूसरे से बढ़कर क़ुर्बानी करने की आपने कोशिश की और पेश कीं। अल्लाह तआला ये सब माली क़ुर्बानियां क़बूल फ़रमाए और आप लोगों के अम्वाल में बे इंतिहा बरकत अता फ़रमाए।"

(अल्-फ़ज़ल इंटरनैशनल 29 नवंबर 2013 ई. पृष्ठ : 8)

इंडोनेशियन अहमदियों जैसा ख़ुलूस और प्यार करने की नसीहत

पूर्वी देशों में स्थित, द्वीप का मजमूआ जिसे माज़ी में जज़ायर शिर्क़ अल हिंद कहा जाता था, आजकल इंडोनेशिया कहलाता है। ये दुनिया में मुस्लिम आबादी वाला सबसे बड़ा देश है। गोया इंडोनेशिया बाद में आकर पहलों से मलने वालों का मज़हर है। इस्लाम की निशात सानिया के दौर में पाक और हिन्द से बाहर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का पैग़ाम जिस अंदाज़ से इंडोनेशियन क़ौम ने क़बूल किया है इस की नज़ीर दीगर मुस्लिम ख़तों में मिलना मुश्किल है। इंडोनेशियन अहमदी मुस्लमानों में अहमदियत क़बूल करने के बाद जो पाक तबदीलीयां पैदा हुईं उनको ख़िराज-ए-तेहसीन पेश करते हुए हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे अपने दौरा इंडोनेशिया के बारे में फ़रमाया :

"मैंने जो ख़ुलूस, प्यार इंडोनेशिया की जमाअत में देखा है, मैंने दुनिया में किसी जमाअत में ऐसा ख़ुलूस और प्यार और प्रेम नहीं देखा। जो लोग बाहर से आए हैं उन्होंने भी ख़ुद अपनी आँखों से देख लिया है कि किस तरह इंडोनेशिया की जमाअत अपने इख़लास में सबसे आगे है। उनकी आँखों से किस तरह आँसू जारी हैं। छोटे बड़े सबकी आँखों से किस तरह आँसू बहते हैं। बाहर से आने वाले ये पैग़ाम याद रखें और वापस जा कर अपने मुल्कों में यह संदेश दें कि इंडोनेशिया जैसा ख़ुलूस और प्यार अपने अंदर पैदा करो और उन जैसे बनो।"

(बहवाला रिपोर्ट दौरा इंडोनेशिया, प्रकाशित अल्-फ़ज़ल इंटरनैशनल 21 जुलाई 2000 ई. पृष्ठ : 2)

सदी के अंत से पूर्व मशरिक़-ए-बईद का मुलक इंडोनेशिया सबसे बड़ा अहमदी मुस्लिम मुलक होगा (इन शा अल्लाह)

सुदूर पूर्व में इस्लामअहमदियत की बकसरत इशाअत की ख़बर देते हुए दौरा इंडोनेशिया के दौरान हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह ने फ़रमाया कि "जमात इंडोनेशिया के लंबे सब्र और दुआओं के बाद आज वह वक़्त आया है कि ख़लीफ़तुल मसीह आप में मौजूद है। हुज़ूर ने फ़रमाया कि मैं आपको यक़ीन दिलाता हूँ कि नई सदी के अंत से पूर्व इंडोनेशिया सबसे बड़ा अहमदी मुस्लिम मुलक होगा। इन शा अल्लाह" (बहवाला रिपोर्ट दौरा इंडोनेशिया मतबूआ इंटरनैशनल 7 जुलाई 2000 ई. पृष्ठ : 2)

चीनी क़ौम के लिए दुआऔ की अपील

मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू.के के इफ़्तिताह के बाद अगले जुमा के अवसर पर सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने चीनी क़ौम को इस्लाम अहमदियत का पैग़ाम पहुंचाने की ख़ातिर दुआइया तहरीक करते हुए फ़रमाया

"बुनियाद इस मस्जिद की श्रीमान उसमान चीनी साहिब ने रखी थी और इस तरह हम कह सकते हैं कि अल्लाह तआला के फ़ज़ल से चीनी क़ौम का भी इस में हिस्सा है और इसलिए हमें दुआ करनी चाहिए कि अल्लाह तआला चीन में भी इस्लाम को जल्द फैलाने की हमें तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। श्रीमान उसमान चीनी साहिब की बड़ी ख़्वाहिश थी, हर वक़्त इस फ़िक्र में रहते थे कि चीन में किसी तरह अहमदियत और इस्लाम का हक़ीक़ी पैग़ाम पहुंच जाए। हमें जहां उनके दर्जात की बुलंदी के लिए दुआ करनी चाहिए वहां चीन में भी और दुनिया के हर मुल्क में भी अहमदियत और हक़ीक़ी इस्लाम के फैलने के लिए बहुत दुआएं करनी चाहिए। अल्लाह तआला इसकी तौफ़ीक़ दे।"

(अल्-फ़ज़ल इंटरनैशनल 10 जून 2019 पृष्ठ : 9)

जापान को पूर्वी एशिया में इस्लाम अहमदियत की इशाअत का मर्कज़ बनाने की इच्छा

जापानी क़ौम को इस्लाम अहमदियत से अवगत करवाना हज़रत मसीह मौऊद मौउद अलैहिस्सलाम की इच्छा थी। इसी मंशा की तामील में सरज़मीन जापान ख़ुलफ़ा ए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ग़ैरमामूली दुआओं और तवज्जा का मर्कज़ रही। सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो ने जापान में अहमदियत की इशाअत को मशरिक़ी एशिया में अहमदियत की गूंज के मुतरादिफ़ क़रार देते हुए फ़रमाया है कि :

"जापान कितना महान देश है, अगर हम वहां मिशन खोल दें और ख़ुदा करे, वहां हमारी जमाअत क़ायम हो जाएगी तोअहमदियत की आवाज़ सारे मशरिक़ी एशिया में गूँजने लग जाएगी।"

(ख़ुतबा जुमा फ़र्मूदा 19 नवंबर 1954 ई.)

सुदूर पूर्व के देशों में ख़ुलफ़ाए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़ेर-ए-साया इस्लाम अहमदियत की इशाअत की यह निहायत मामूली सी झलक पेश की गई है और बतौर मिसाल चंद देश का वर्णन किया गया है। इन देश के इलावा आज मलाईशीया में भी इस्लाम अहमदियत की तरवीज व इशाअत के मुस्तक़िल मरकज़ क़ायम हैं, महाद्वीप फ़िलपायन में भी एक मुख़लिस जमाअत ख़िलाफ़त से वाबस्ता है, थाईलैंड, कमबोडिया और वैतनाम में भी इस्लाम अहमदियत का पौधा लग चुका है, कोरिया में भी जमाअत क़ायम है और प्रशांत महासागर, और हिंद महासागर के दौर दराज़ के जज़ायर भी इस्लाम अहमदियत के नूर से मुनव्वर हो चुके हैं और खलिफ़ा की क़ियादत व राह नुमाई में इशाअत-ए-इस्लाम अहमदियत की अभियान तरक़्क़ी पज़ीर है।

अल्लाह तआला का वादा है कि मशरिक़ में भी इस्लाम अहमदियत की इशाअत होगी और सूरज की किरनों से दुनिया में सबसे पहले रोशनी पाने की तरह यह ख़ित्ता अर्ज़ी इस्लाम अहमदियत के नूर से भी मुनव्वर होगा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

واوحی الی ربی ووعدنی انہ سینصرنی حتی یبلغ امری مشارق الارض ومغاربھا۔ تتموج بحور الحق حتی یعجب الناس حباب غواربھا

अनुवाद :अल्लाह तआला ने मुझ पर वह्यी की और मुझ से वादा फ़रमाया कि वह मेरी मदद फ़रमाएगा यहां तक कि मेरा कार्य को पूरब और पश्चिम तक पहुंच जाएगा और सच्चाई के समुंद्र मौजें मारेंगे यहां तक कि उनकी बुलंद मौजों के बुलबुले लोगों को हैरान कर देंगे।

(लुज्जतुन नूर, रुहानी ख़ज़ायन भाग 16 पृष्ठ : 40)

★ ★ ★

यूरोप में जमाअत अहमदिया की प्रगति
(जावेद इक़बाल नासिर, मुबल्लिग़ सिल्सिला जर्मनी)

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का लाया हुआ पैग़ाम आप अलैहिस्सलाम की वसीयत के मुताबिक़ आप अलैहिस्सलाम के जानशीन और खुलफ़ा किराम आप अलैहिस्सलाम के बाद मख़लूक़-ए-इलाही को पहुंचाते रहे और क़ियामत तक पहुंचाते रहेंगे। इन शा आलला। इस दूसरी क़ुदरत ने महाद्वीप यूरोप में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मिशन को पहुंचाने की भरपूर कोशिशें कीं और इस मैदान में हर तौर-ओ-तरीक़े अपनाए। कहीं तो मुबल्लेग़ीन को भिजवाया गया और कहीं मसाजिद की तामीर का आग़ाज़ हुआ। बाअज़ जगह मिशन हाऊसज़ के लिए प्लाट ख़रीदे गए और कुछ स्थानों पर बने बनाए हाऊसज़ इस मक़ासिद लिए हासिल किए गए। जहां पैग़ाम-ए-हक़ को पहुंचाने के लिए दौरा-जात किए गए वहां पर अहमदी अहबाब की तालीम-ओ-तर्बीयत के लिए मज्लिस सवाल-ओ-जवाब भी मुनाक़िद की गईं। रुहानी तरक़्क़ी के लिए जलसा सालाना शुरू किए गए जबकि जस्मानी कुव्वतों की मज़बूती के लिए इज्तेमाआत को आयोजित किया। किसी जगह तब्लीग़ दावत इलाल्लाह के लिए फ़्लायर्स के हुक्म सादर किए गए और किसी मुल्क में लिटरेचर का बड़े पैमाने पर प्रकाशनत करने का मश्वरा दिया जाता रहा। एक तरफ़ उन देशों में क़ुरआन-ए-करीम के अनुवाद उनकी लोकल भाषा में करने के लिए भाषाओँ के विशेषज्ञ की मदद ली गई और दूसरी तरफ़ मुबल्लेग़ीन को यूरोपियन देशों की भाषाएँ सीखने की ख़ास हिदायात जारी की गईं। अल्लाह तआला की एक महान नेअमत मुस्लिम टेलीविज़न का आग़ाज़ भी आप अलैहिस्सलाम के चौथे खलीफ़ा के द्वारा दुनिया ने देखा और उसके चैनल्ज़ पांचवें जांनशीन के हाथों से यूरोप की सरज़मीन से शुरू होते हुए देखे गए जैसा कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं :

"एम.टी.ए के द्वारा से दुनिया के समस्त देशों में इस्लाम का हक़ीक़ी पैग़ाम पहुंच रहा है। पहले एक ज़बान में था और एक चैनल था। इस वक़्त दुनिया में एम.टी.ए के आठ मुख़्तलिफ़ चैनल काम कर रहे हैं। दुनिया के मुख़्तलिफ़ देशों में एम.टी.ए स्टूडीयोज़ बन गए हैं जहां से एम.टी.ए के प्रोग्राम जारी रहते हैं। अब एक जगह स्टूडियो नहीं हर जगह बन चुके हैं, हर जगह तो नहीं लेकिन कई जगह अफ़्रीक़ा में भी और नॉर्थ अमरीका में भी और यूरोप में भी बन चुके हैं। अगर हम अपने वसायल को देखें तो यह मुम्किन ही नहीं है। सोशल मीडीया के द्वारा भी इस्लाम का हक़ीक़ी पैग़ाम पहुंच रहा है।"

(ख़ुतबा जुमा फ़र्मूदा 28 मई 2021 ई., मतबूआ अल्-फ़ज़ल इंटरनैशनल 18 जून 2021 ई. पृष्ठ 8 से 9)

यूरोप की सरज़मीन को यह विशेषता और फ़ख़र भी हासिल है कि यहां से हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ वर्चुअल मुलाक़ात के नज़्ज़ारे भी दुनिया देख रही है। हुज़ूर अक़्दस इस बारे में यूं फ़रमाते हैं :

"अल्लाह-तआला ने ख़िलाफ़त से ताल्लुक़ क़ायम करने के लिए एक नया रस्ता भी समझा दिया है। जो ऑनलाइन (online)मुलाक़ात या वर्चूअल (virtual) मुलाक़ात के द्वारा से इस कोविड की बीमारी की वजह से सामने आया। इस के द्वारा से मीटिंगें भी हो रही हैं। मुलाक़ातें भी हो रही हैं जिससे बराह-ए-रस्त जमाअतों से राबिता हो रहा है। लोग ख़लीफ़-ए-वक़्त से बराह-ए-रास्त राहनुमाई ले रहे हैं। मैं यहां लंदन से कभी अफ़्रीक़ा के किसी मुल्क से, कभी इंडोनेशिया से, कभी आस्ट्रेलिया से, कभी अमरीका से मुलाक़ात कर लेता हूँ तो यह सब ख़ुदा तआला की सहायता के नज़्ज़ारे हैं। अतः हमें कभी नहीं भूलना चाहिए कि अल्लाह तआला जो अपने फ़ज़्लों के नज़्ज़ारे दिखा रहा है और ख़िलाफ़त के इनाम से जो हमें नवाज़ा हुआ है इस का हमने हमेशा हक़ अदा करने वाला बनना है।"

(ख़ुतबा जुमा फ़र्मूदा 28 मई 2021 ई., प्रकाशन अल्-फ़ज़ल इंटरनैशनल 18 जून 2021 ई. पृष्ठ : 9)

जर्मनी जमाअत को सौ मसाजिद बनाने का एक जलीलुल क़द्र टार्गेट दिया तो गया हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह की ज़बान-ए-मुबारक से लेकिन इस की तकमील होगी इंशाअल्लाह तआला हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के दौर मुबारक में। यूरोप में कब्बडी के मैच खेलने और देखने को मिले तो इसी मुबारक दौर में। क्रिकेट के खिलाड़ियों ने अपने शौक़ पूरे किए तो इसी दूसरी क़ुदरत के ज़ेर-ए-साया। मज्लिस मुशावरत का इबतेदा यूरोप में हुआ तो इसी ख़िलाफ़त के ज़ेर-ए-साया। असायलम लेने वालों को यूरोप में पनाह मिली तो इसी की बरकत से। दूर अज़ क़ियास बातें नज़दीक होती हुई यूरोप की दुनिया ने देखीं तो इसके तुफ़ैल। मुख़्तलिफ़ ज़बानों के माहिरीन के डैसक यूरोप में बनाएगे तो उन्ही के हाथों से। क़ुरआन-ए-करीम के अनुवाद यूरोपीयन देशों की ज़बानों में शाय होने का कारनामा जो हुआ वह भी उन्ही बुज़ुर्गान के ज़ेर निगरानी। महाद्वीप यूरोप की ज़मीन दुआओं की क़बूलियत के बेशुमार वाक़ियात की जब गवाह बनी तो इसी वक़्त। यूरोप या दुनिया के किसी भी मुल्क में अगर नाइंसाफ़ी होती हुई नज़र आई तो आप खलिफ़ा-ए-किराम ने अपने ख़ुतबात बात में इसका खुल कर वर्णन किया और उसके ख़िलाफ़ आवाज़ उठाई। जिसकी वाज़ह मिसाल बोसनिया में होने वाला ज़ुलम है।

जब तीसरी जंग के आसार नज़र आए तो हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने यूरोप के बाअज़ देशों के पार्लीमैंट हाऊस में जाकर ख़िताब किया और उसके नुक़्सानात से दुनिया को आगाह किया। इसलिए हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने बर्तानवी पार्लीमैंट के हाऊस आफ़ कॉमनज़ में 22 अक्तूबर 2008 ई. के अपने ख़िताब में फ़रमाया

"गुज़श्ता सदी में दो आलमी जंगें लड़ी गई हैं। इनकी जो भी वजूहात थीं अगर ग़ौर से देखा जाए तो एक ही वजह सबसे नुमायां दिखाई देती है और वह यह है कि पहली मर्तबा अदल को सही रंग में क़ायम नहीं किया गया था और फिर वह आग जो बज़ाहिर बुझी हुई मालूम होती थी दरअसल सुलगते हुए अँगारे थे जिनसे अंततः वे शोले बुलंद हुए जिन्हों ने दूसरी मर्तबा सारी दुनिया को अपनी लपेट में ले लिया। आज भी बेचैनी बढ़ रही है। वे जंगें और अन्य अक़्दामात जो अमन को क़ायम करने की ख़ातिर किए जा रहे हैं एक और आलमी जंग का पेश-ख़ेमा बन रहे हैं। मौजूदा इक़्तेसादी और समाजी मसायल इस सूरत-ए-हाल में और भी ज़्यादा अबतरी का बायस बन रहे हैं। क़ुरआन-ए-करीम ने दुनिया में अमन क़ायम करने के लिए बाअज़ सुनेहरी उसूल अता फ़रमाए हैं। यह एक साबित शुदा हक़ीक़त है कि हवस से दुश्मनी बढ़ती है। कभी यह हवस तौसीअ पसंदाना अज़ायम से ज़ाहिर होती है। कभी उसका इज़हार क़ुदरती वसायल पर क़बज़ा करने से होता है और कभी यह हवस अपनी बरतरी दूसरों पर ठूंसने की शक्ल में नज़र आती है। यही लालच और हवस है जो अंततः ज़ुलम की तरफ़ ले जाती है। ख़ाह ये बेरहम जाबिर हुकमरानों के हाथों से हो जो अपने मुफ़ादात के हुसूल के लिए लोगों के हुक़ूक़ ग़सब

करके अपनी बरतरी साबित करना चाहते हों या जारहीयत करने वाली अफ़्वाज के हाथों से हो। कभी ऐसा भी होता है कि मज़लूमों की चीख़-ओ-पुकार के नतीजा में बैरूनी दुनिया मदद के लिए आ जाती है। बहर हाल इसका नतीजा जो भी हो हमें आँहज़रत ने यह सुनहरी उसूल सिखाया है कि ज़ालिम और मज़लूम दोनों की मदद करो। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने पूछा कि मज़लूम की मदद करना तो समझ में आता है लेकिन ज़ालिम की मदद किस तरह कर सकते हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उसके हाथों को ज़ुलम से रोक कर क्योंकि बसूरत-ए-दीगर उसका ज़ुलम में बढ़ते चले जाना उसे ख़ुदा के अज़ाब का मौरिद बना देगा। अतः इस पर रहम करते हुए उसे बचाने की कोशिश करो। यह वह असूल है जो मुआशरा की छोटी से छोटी इकाई से लेकर बैनुल अक़वामी सतह तक इतलाक़ है ... क़ियाम-ए-अमन के लिए सबसे ज़रूरी चीज़ अदल का क़ियाम है और उसूल-ए-अदल की पाबंदी के बावजूद अगर क़ियाम अमन की कोशिशें नाकाम साबित हो तो मिल कर उन लोगों के ख़िलाफ़ जंग करो जो ज़ुलम का मुर्तक़िब हो रहा है।"

(आलमी बोहरान और अमन की राह, पृष्ठ 15 से 16)

फिर हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने बर्तानवी पार्लीमैंट के हाऊस आफ़ कमान में 11 जून 2013 ई. को मैंबरान-ए-पार्लीमैंट से ख़िताब में जंग की होलनाक तबाही का वर्णन करते हुए फ़रमाया :

"हम सभी पिछली दो आलमी जंगों की होलनाक तबाहियों से बख़ूबी आगाह हैं। कुछ देशों की पालिसीयों की वजह से एक और आलमी जंग के आसार दुनिया के उफ़ुक़ पर नमूदार हो रहे हैं। अगर आलमी जंग छिड़ गई तो मग़रिबी दुनिया भी इस के देर तक रहने वाले तबाहकुन नतायज से प्रभावित होगी। आएं ख़ुद को इस तबाही से बचा लें। आएं अपनी आइन्दा आने वाली नसलों को जंग के मोहलिक और तबाहकुन नताइज से महफ़ूज़ कर लें क्योंकि यह मोहलिक जंग ऐटमी जंग ही होगी और दुनिया जिस तरफ़ जा रही है इस में यक़ीनी तौर पर एक ऐसी जंग छिड़ने का भय है।''

(आलमी बोहरान और अमन की राह, पृष्ठ : 129)

इसी तरह 4 दिसंबर 2012 ई. को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने यूरोपीयन पार्लीमैंट बरसल्ज़ बेलजियम में अपने ख़िताब में नफ़रत और जंग से दूर रहने की तलक़ीन करते हुए फ़रमाया :

"मज़ालिम को ख़त्म करना चाहिए क्योंकि अगर उन्हें फैलने दिया गया तो नफ़रत के शोले लाज़िमन समस्त दुनिया को अपनी लपेट में ले लेंगे और फिर यह नफ़रत इस हद तक बढ़ जाएगी कि दुनिया वर्तमान आर्थिक बोहरान से पैदा होने वाले मसायल को भी भूल जाएगी और इस की जगह पहले से भी बढ़ कर होलनाक सूरत-ए-हाल का सामना होगा। इस क़दर जानें ज़ाए होंगी कि हम अंदाज़ा भी नहीं कर सकते। अतः यूरोपियन देशों, जो दूसरी जंग-ए-अज़ीम में बड़े नुक़्सान देख चुके हैं, उनका फ़र्ज़ है कि वे माज़ी के अपने तजुर्बा से सबक़ हासिल करें और दुनिया को तबाही से बचाएं।"

(आलमी बोहरान और अमन की राह, पृष्ठ : 96)

ह्यूमैनिटी फ़रस्ट यूरोप के ग़रीब देशों में ख़िदमत करके अपने उरूज को पहुंची तो उन्हें की मुशावरत और दुआओं से पार्लीमैंट में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह की आवाज़ को यूरोप के हुकमरानों ने सुना तो इसी ज़माना में। अफ़्रीक़ा के बादशाह जलसा सालाना में शमूलीयत कर के ख़िलाफ़त की बरकत से फ़ैज़याब हुए तो इसी जगह। ख़लीफ़ा वक़्त की आवाज़ के सीधे अनुवाद को मुख़्तलिफ़ देशों के लोगों तक पहुंचाने का सहरा भी इसी दौर को हासिल है। जलसा सालाना और जमाअती प्रोग्रामज़ के लिए बड़े-बड़े प्लॉट्स की रजिस्ट्री जमाअत के नाम हुई तो इस अरसा में। मुबल्लेग़ीन को तैयार करने के लिए जमिआत खुले तो भी इस ज़माने के मसीह मौऊद आ के खलिफ़ा के ज़रीया। इस्लाम का पैग़ाम यूरोप के कोने-कोने तक फैलाने के मंसूबे बने तो हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम के जांनशीन के हाथों। तहरीक जदीद और वक़्फ़ जदीद को यूरोप में पज़ीराई हुई तो भी ख़िलाफ़त की आवाज़ से। वसीयत के निज़ाम में एक नई जान पड़ी और मोसियान की संख्या में जो इज़ाफ़ा देखने को मिला वह भी इन्ही हस्तियों की कोशिशों से। वाकफ़ीन नौ की स्कीम का पौधा जो लगा और इस की शाख़ें जो मुख़्तलिफ़ देशों में फलें और फूलें वह ख़िलाफ़त की मर्हूने मिन्नत तोहें ही लेकिन उसकी शुरूआत भी इस ख़ित्ता के हिस्सा में आई। बड़े- बड़े जलसों के नज़्ज़ारे दुनिया ने जो अपने घरों में बैठ कर देखे इन की जो शुरूआत जो हुई वह भी यूरोप से। इसी तरह का एक सालाना 2001 ई. में जर्मनी में हुआ। जब 2001 ई. में बर्तानिया में फूट ऐंड माऊथ (foot & mouth) की बीमारी फैल जाने के बायस जलसा सालाना बर्तानिया का आयोजन मुम्किन न रहा तो हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह ने फ़ैसला फ़रमाया कि इस साल जर्मनी में मर्कज़ी जलसा सालाना मुनाक़िद हो। इस अवसर पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह जर्मनी तशरीफ़ लाए और इस जलसा को रौनक़ बख़्शी। यह जलसा मन हाईम की मई मार्कीट में आयोजित हुआ और इस में 60 से ज़ायद देशों के 48 हज़ार छः सौ लोगों ने शिरकत की। इस अवसर पर पहली मर्तबा सरज़मीन जर्मनी पर आलमी बैअत की तक़रीब भी अमल में आई।

(उद्धरित अल्फ़ज़्ल इंटरनैशनल 7 सितंबर 2001 ई., पृष्ठ अव्वल)

अल्-फ़ज़्ल को जब ये एज़ाज़ मिला कि वे ऑनलाइन छपे और बर्क़ रफ़्तार लहरों के द्वारा दुनिया के घरों में पहुंचे तो यह मोजिज़ा भी यूरोप को नसीब हुआ। जैसा कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने रोज़नामा अल्-फ़ज़्ल ऑनलाइन के इजरा के अवसर फ़रमाया :

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web.www.alislam.org

www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE

(SINCE 1964)

(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)

contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681

e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com

HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE

"अल्-फ़ज़ल के 106 साल पूरे होने पर लंदन से अल्-फ़ज़ल ऑनलाइन ऐडीशन का आग़ाज़ हो रहा है और यह अख़बार रोज़नामा अल्-फ़ज़ल से 106 वर्ष पहले हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो की इजाज़त और दुआओं के साथ 18 जून 1913 ई. को शुरू फ़रमाया था। क़ियाम-ए-पाकिस्तान के बाद कुछ अरसा लाहौर से शाय होता रहा। फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम की क़ियादत में यह रबवः से निकलना शुरू हुआ। इस क़दीम उर्दु रोज़नामा अख़बार का लंदन से अल्-फ़ज़ल ऑनलाइन ऐडीशन इतिहास 13 दिसंबर 2019 ई. से आरम्भ हो रहा है। आज इन शा अल्लाह तआला आग़ाज़ हो जाएगा जो बज़रीया इंटरनैट दुनिया-भर में हर जगह बड़ी आसानी के साथ दस्तयाब होगा। इसकी वेबसाइट alfazlonline.org तैयार हो चुकी है और पहला शुमारा भी इस पर दस्तयाब है ... इस में अल्-फ़ज़ल की एहमियत और इफ़ादीयत के हवाले से बहुत कुछ मौजूद है जो इरशाद बारी तआला के शीर्षक के तहत क़ुरआन-ए-करीम की आयात भी आया करेंगी और फ़रमान रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के तहत अहादीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी होंगी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इर्शादात के इक़्तेबासात भी होंगे। इसी तरह बाअज़ अहमदी मज़मून निगारों के मज़मून और दूसरे जो अहम मज़ामीन हैं वे भी होंगे। नज़्में भी अहमदी कवियों की होंगी। ये अख़बार वेबसाइट के इलावा टविटर पर भी मौजूद है।" (ख़ुतबा फ़र्मूदा 13 दिसंबर 2019 ई., प्रकाशन अल्-फ़ज़ल इंटरनैशनल 3 जनवरी 2020 ई., पृष्ठ : 8)

वह फल सरसब्ज़ दरख़्त जो कि हर देश में शाख़ें और टहनियां बिखेर रहा है और उसके रंग बिरंगे फल और फूल का अनुमान करना इन्सान का काम नहीं। लेकिन सिर्फ चंद एक की तफ़सील पेश की जाती है :

यूरोप में जमाअती मिशन का आग़ाज़ और ख़ुलफ़ाए कराम के दौराजात

जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इत्तिला दी थी ऐसा ही हुआ और आपके बाद दूसरी क़ुदरत का ज़हूर आप पहले ख़लीफ़ा हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो के रंग में ज़ाहिर हुआ। इसलिए अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से जमाअत अहमदिया का पहला मिशन में 1913 ई. में शुरू किया गया जब हज़रत चौधरी फ़तह मुहम्मद स्याल साहब रज़ियल्लाहु अन्हो को तब्लीग़ की ग़रज़ से इस मुल्क में भिजवाया गया। अलहमदु लिल्लाह यूं बैरून हिंद यूरोप में पहले मिशन की बुनियाद पड़ी। इसके बाद तो अल्लाह तआला के अफ़ज़ाल इस क़दर होने लगे कि उनका शुमार करना और सबको एक मज़मून में जमा और तहरीर में लाना एक मुश्किल अमर है इस लिए सिर्फ चंद एक तब्लीग़ी मराकज़-ओ-मिशन हाऊसज़ जो कि यूरोप की सरज़मीन पर खलिफ़ा-ए-किराम के दौर में शुरू किए या प्रवान चढ़े क़लम-बंद किए जा रहे हैं। यूं तो अमरीका की सरज़मीन पर हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद आ की ज़िंदगी में ही पैग़ाम-ए-हक़ पहुंच चुका था। लेकिन 1920 ई. में बाक़ायदा अमरीका में अहमदिया मिशन ख़िलाफ़त सानिया के दौर में क़ायम हुआ। जब हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब वहां मुबल्लिग़ के तौर पर तशरीफ़ ले गए। 1924 ई. में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने यूरोप का यादगार दौरा फ़रमाया और इटली और फ्रांस होते होते बर्तानिया तशरीफ़ ले गए और उन तमाम देशों में बराह-ए-रास्त मसीह मुहम्मदी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की आवाज़ को पहुंचाया।

तहरीक-ए-जदीद के इजरा के बाद जमाअत-ए-अहमदिया तब्लीग़ के एक नए दौर में दाख़िल हो गई। 1934 ई. से लेकर 1937 ई. तक स्पेन, हंगरी, अल्बानिया, योगोसलाविया, इटली और पोलैंड में जमाअत के मिशन्ज़ का क़ियाम हुआ। इसके बाद कुछ ही अरसा में मुतअद्दिद देशों में जमाअत के मिशन्ज़ क़ायम होना शुरू हुए जिनमें फ्रांस, स्विट्ज़रलैंड,हॉलैंड, जर्मनी और स्कॉट लैंड शामिल हैं। अप्रैल 1954 ई. में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने स्विटज़रलैंड, हॉलैंड, इटली, ऑस्ट्रिया, जर्मनी और इंग्लिस्तान को दुबारा अपने दौरा से शरफ़ बख़्शा। इस दौरान आपने हर मुक़ाम पर ख़ताबात और मुलाक़ातों के द्वारा अहमदियत का पैग़ाम पहुंचाया। 1956 ई. में हुज़ूर ने scandinavia के देशों में तब्लीग़ की ग़रज़ से मुबल्लेग़ीन भिजवाए और इस तरह स्वीडन, डेनमार्क और नार्वे में अहमदियत का पैग़ाम आपके भिजवाए हुए मुबल्लेग़ीन के द्वारा पहुंचा।

जमात अहमदिया का क़दम ख़िलाफ़त सालिसा के दौर में भी आगे बढ़ता और फलता रहा "1973" में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह यूरोप तशरीफ़ ले गए जिसके दौरान इंग्लिस्तान, हॉलैंड, जर्मनी, स्विटज़रलैंड, इटली, स्वीडन और डेनमार्क का दौरा किया। 1975 ई. में हुज़ूर पुनः यूरोप तशरीफ़ ले गए। 1976 ई. में आपने अमरीका और कैनेडा का दौरा फ़रमाया जिससे वापसी पर आप इंग्लिस्तान, स्वीडन, नार्वे, डेनमार्क, मग़रिबी जर्मनी, स्विटज़रलैंड और हॉलैंड भी तशरीफ़ ले गए। 1980 ई. में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह ने वह तारीख़ी दौरा फ़रमाया जो कि तीन महाद्वीपों और 13 देशों पर मुहीत था। इन देशों में पश्चिमी जर्मनी, स्विट्ज़रलैंड, ऑस्ट्रिया, डेनमार्क, स्वीडन, नार्वे, हॉलैंड, स्पेन, नाईजेरिया, घाना, कैनेडा, अमरीका और इंग्लिस्तान शामिल थे। इसी दौरा के दौरान आप रहमहुल्लाह ने 9 अक्तूबर 1980 ई. को स्पेन में मस्जिद बिशारत की बुनियाद रखी।"

(अल्-फ़ज़ल इंटरनैशनल 22 मई 2020 पृष्ठ : 29)

वे देश जो ख़िलाफ़त राबिया के दौरान अहमदियत की सदाक़त के क़ायल हुए उनमें, यूक्रेन, तातारिस्तान, रोमानिया, बल्गारिया,

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR

Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING

OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affiliated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AIICCE-0289/Raj

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन
"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"
(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)
तालिबे दुआ
KHALEEL AHMAD
S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

मेस्सीडोनया, स्लोवेनिया, बोसनिया, चैकरिपब्लिक, कोसोवि, मालटा और अन्य कई देश शामिल थे। इसी तरह हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमाहुल्लाह अपने दौर में ख़ुद भी असंख्य दौराजात के द्वारा दुनिया वालों को सीधे इस्लाम की हक़ीक़ी तालीम से अवगत फ़रमाया। इन देशों में नार्वे, स्वीडन, डेनमार्क, जर्मनी, ऑस्ट्रिया, स्विट्ज़रलैंड, फ़्रांस, लक्समबर्ग, हॉलैंड, स्पेन, कैनेडा, बेलजियम और आयरलैंड शामिल हैं। उनमें कुछ देश ऐसे भी हैं जिनमें पहली बार किसी ख़लीफ़ ने क़दम रखा।

अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से जमाअत अहमदिया हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की क़ियादत तले तरक़्क़ी की राहों पर गामज़न है। आप के ख़िलाफ़त के दौर में जबरालटर, ईस्टोनिया, मोंटी नीग्रो, लेटोया, आयसलैंड, सर्बिया, लिथान्विया, और बाअज़ और यूरोप के देशों में इस सरसब्ज़ दरख़्त के साथ पैवंद जोड़ कर उसकी समर बार शाख़ें बनी और बनती जा रही हैं। जलसा सालाना 2019 ई. के अवसर पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि "ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल से इस वक़्त तक दुनिया के 213 देशों मेंअहमदियत का पौधा लग चुका है और अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से पिछले 35 वर्षों में 122 नए देश अल्लाह तआला ने जमाअत को अता फ़रमाए हैं।"

इस्लाम की हक़ीक़ी तालीम को दुनिया के कोने-कोने पर क़ायम करने की ख़ातिर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने ख़ुद भी बराह-ए-रास्त दौराजात किए। इन दौराजात में चंद एक यूरोपीयन देश ये हैं। जर्मनी, फ़्रांस, आयरलैंड, हॉलैंड, बेलजीयम, डेनमार्क, स्वीडन, नार्वे, स्पेन के इलावा और अन्य देश शामिल हैं।

(माख़ूज़ अज़ अल्-फ़ज़्ल इंटरनैशनल 22 मई 2020 ई., पृष्ठ : 29)

महाद्वीप यूरोप में मसाजिद की तामीर की एक झलक

ख़ुदा तआला ने जमात अहमदिया को लंदन में ख़िलाफ़त सानिया के दौर में अपनी मस्जिद तामीर करने के लिए जगह इनायत फ़रमाई। हज़ूरओ ने इस ख़ुशी के अवसर पर 9 सितंबर 1920 ई. को एक जलसा डलहौज़ी में किया और तामीर होने वाली मस्जिद का नाम "मस्जिद फ़ज़्ल" रखा। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु 22 अगस्त 1924 ई. को लंदन तशरीफ़ लाए। वेम्बले कानफ़रंस और दूसरी बहुत सारे तब्लीग़ी प्रोग्रामज़ मुनाक़िद हुए और इसी दौरान हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु ने मस्जिद फ़ज़्ल की संग-ए-बुनियाद 19 अक्तूबर 1924 बरोज़ इतवार रखी। मस्जिद फ़ज़्ल hamburg जर्मनी का संग-ए-बुनियाद हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु ने 22 फ़रवरी 1957 ई. को रखा, 22 जून 1957 ई. को इस का इफ्तेताह हज़रत चौधरी सर ज़फ़रुल्लाह ख़ान साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने किया, जुलाई 1967 ई. को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह ने डेनमार्क के शहर को पनहेगन में मस्जिद नुसरत जहां का इफ्तेतः फ़रमाया, 20 अगस्त 1976 ई. को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह ने स्वीडन के शहर göthenburg में मस्जिद नासिर का इफ्तेतः फ़रमाया 1980 ई. में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह ने नार्वे के शहर ओस्लो में मस्जिद नूर का इफ्तेतः फ़रमाया 2 अक्तूबर 1980 ई. को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह ने इंग्लिस्तान के शहर bradford मैं मस्जिद बैतुल हमद का इफ्तेतः फ़रमाया। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह ने बनफ़स-ए-नफ़ीस स्पेन तशरीफ़ ले जा कर तिथि 9 अक्तूबर 1980 ई. को यूरोप के दौरे के दौरान मस्जिद बशारत की संग-ए-बुनियाद रखी ।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह ने तिथि 10 सितंबर 1982 ई. को स्पेन के शहर पेद्रो आबाद में 700 साल बाद तामीर होने वाली "मस्जिद बशारत" का आरंभ फ़रमाया। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह ने बर्तानिया की नई और वसीअ मस्जिद के लिए 24 फ़रवरी 1995 ई. को 5 मिलियन पाऊंड की तहरीक फ़रमाई 28 मार्च 1999 ई. को हज़ूर ने बैतुल फ़तूह की मुजव्वज़ा जगह पर नमाज़-ए-ईदुल अज़्हा पढ़ाई और इसी साल 19 अक्तूबर को हुज़ूर रहमहुल्लाह ने मस्जिद बैतुल फ़तूह का संग-ए-बुनियाद रखा 16 फ़रवरी 2001 ई. को हज़ूर ने इस मस्जिद के लिए मज़ीद 5 मिलियन पाऊंड की तहरीक फ़रमाई। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 3 अक्तूबर 2003 ई. को इस का आरंभ फ़रमाया। इस मस्जिद में एक समय पर 10 हज़ार अफ़राद नमाज़ अदा कर सकते हैं। यह पश्चिमी यूरोप की सबसे बड़ी मस्जिद शुमार होती है 5 अक्तूबर 1982 ई. को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह ने इंग्लिस्तान के शहर gillingham में अहमदिया मिशन का इफ़्तिताह फ़रमाया 7 अक्तूबर 1982 ई. को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह ने लंदन के इलाक़ा कराईडन में अहमदिया मिशन बैतल सुबहान का इफ़्तिताह फ़रमाया 1985 ई. को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह ने टिललफ़ोरड इस्लामाबाद में मस्जिद बैतुल इस्लाम का इफ़्तिताह फ़रमाया और बाद में यहां ताअमीर नौ के बाद ख़िलाफ़त ख़ामसा में मस्जिद मुबारक वजूद में आई। 13 सितंबर 1985 ई. को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे ननस्पैट (हॉलैंड) में नए मर्कज़ बैतुल-नूर का इफ़्तिताह फ़रमाया 17 सितंबर 1985 ई. को जर्मनी के शहर कोलोन (köln) में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे बैतुल अंसार का इफ्तेतः फ़रमाया, 22 मई 1986 ई. को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह ने ग्लास्गो में सकाटलैंड के नए अहमदिया मिशन बैतुल रहमान का इफ़्तिताह फ़रमाया, 1992 ई. में हुज़ूर ने जर्मनी के शहर ग्रोस गैराओ (gross-gerau) मैं मस्जिद बैतुल-शकूर का आरम्भ फ़रमाया।

(उद्धरित अल् फ़ज़्ल इंटरनैशनल 21मई 2021 ई., पृष्ठ : 70)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने ख़ुतबा जुमा 21अक्तूबर 2011ई. में नार्वे की मस्जिद के विषय में फ़रमाया :

"जैसा कि आप लोगों ने ख़ुत्बे में सुन लिया है कि नार्वे में मस्जिद नस्र का इफ़्तिताह हुआ। मा शा अल्लाह बहुत ख़ूबसूरत मस्जिद है। मस्जिद बैतुल फ़तूह के बाद यक़ीनन यह मस्जिद यूरोप की सबसे बड़ी मस्जिद है। वहां की जमाअत तो बहुत छोटी है लेकिन इस मस्जिद को देख कर लगता है कि बहुत बड़ी जमाअत है या यह बहुत उमरा की जमाअत है लेकिन दोनों बातें ग़लत हैं। न ये बड़ी जमाअत है न वहां अमीर लोग ज़्यादा हैं। सिर्फ़-ए-ख़याल आने और एहसास पैदा होने की ज़रूरत थी।

(ख़ुतबा जुमा फ़र्मूदा 21 अक्तूबर 2011 ई. मतबूआ अल्-फ़ज़्ल इंटरनैशनल 11 नवंबर 2011 ई., पृष्ठ : 6)

जर्मनी में 100 मसाजिद की स्कीम का एक ख़ाका

जलसा सालाना जर्मनी 1989 ई. के अवसर पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह तआला ने जमात अहमदिया जर्मनी को सद साला जश्न तशक्कुर के हवाले से मुल्क भर में 100 मसाजिद तामीर करने का मन्सूबा अता फ़रमाया। इसलिए 100 मसाजिद स्कीम के तहत पहली बाक़ायदा तामीर होने वाली मस्जिद जर्मनी के शहर

wittlich में बनाई गई। जिस का नाम बैतुल हम्द है। इस का संग-ए-बुनियाद नवंबर 1998 ई. में रखा गया। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे 2000 ई. को इसका इफ्तेतः किया। रात यहां रौनक अफ़रोज़ हुए और अगले रोज़ तब्लीग़ी नशिस्त से ख़िताब फ़रमाया। इलावा अज़ीं मस्जिद नूरुद्दीन (डारमशटडट), मस्जिद नासिर (बरेमन) और मस्जिद ताहिर (कोबलनज़) का नीव ख़िलाफ़त राबिया के दौर में रख दी गई थी। मस्जिद नूरुद्दीन (डारमशटडट) का संग-ए-बुनियाद 11 मई 2002 ई. को रखा गया। मस्जिद नासिर (बरेमन) का संग-ए-बुनियाद नवंबर 2001 ई. में रखा गया। इसी तरह कील शहर में मस्जिद हबीब की तामीर के लिए 3 सितंबर 1999 ई. को प्लाट ख़रीद लिया गया था। ख़िलाफ़त राबिया के ज़माने में जो मज़ीद प्लाट ख़रीदे गए उनमें riedstadt में मस्जिद बैतुल अज़ीज़ के लिए प्लाट 5 अप्रैल 2000 ई., जामा मस्जिद (ओफ़नबाख) के लिए प्लाट 7 अगस्त 2000 ई., मस्जिद समीअ (हनोवर) के लिए प्लाट 20 अप्रैल 2001 ई., बैत अलीम (वर्ज़बर्ग) के लिए प्लाट 14 सितंबर 2001 ई., मस्जिद अलहदा (usingen) के लिए प्लाट 12 फ़रवरी 2002 ई. और मस्जिद बशीर (bensheim) के लिए प्लाट 9 दिसंबर 2002 को ख़रीदे गए। इन प्लाटों की मंज़ूरी हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह हासिल की गई जबकि उनकी तामीर ख़िलाफ़त ख़ामसा के समय के आरंभिक वर्षों में हुई।

(माख़ूज़ रोज़नामा अल्-फ़ज़ल लंदन ऑनलाइन 4 जून 2020 ई., पृष्ठ : 6)

जर्मनी में तामीर शुदा मसाजिद की संख्या 64 हो चुकी है। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 2022 के जलसा सालाना यू.के के अवसर पर फ़रमाया : "जर्मनी में सौ मसाजिद के मन्सूबा के तहत दौरान साल पाँच मसाजिद की तामीर मुकम्मल हुई है इस तरह उनकी मसाजिद की संख्या 64 हो चुकी है।" (माख़ूज़ अज़ ख़िताब सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बर्मो का जलसा सालाना यू.के फ़र्मूदा 6 अगस्त 2022 ई.)

तामीर शुदा मसाजिद के इलावा जर्मनी में जमाअत की कई मसाजिद तामीर के मुख़्तलिफ़ मराहिल में हैं और 100 मसाजिद के टार्गेट के पूरा होने का दिन अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से ख़िलाफ़त अहमदिया की बाबरकत क़ियादत में क़रीब-तर होता जा रहा है।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने जमात अहमदिया जर्मनी को ख़ुशख़बरी सुनाते हुए फ़रमाया "इन शा अल्लाह तआला जर्मनी यूरोप का पहला मुल्क होगा जहां के सौ शहरों या कस्बों में हमारी मसाजिद के रोशन मीनार नज़र आएँगे और जिसके द्वारा से अल्लाह का नाम इस इलाक़े की फ़िज़ाओं में गूँजेगा जो बंदे को अपने रब के क़रीब लाने वाला बनेगा।" (जुमा फ़रमूदः 16 जून 2006 प्रकाशन अल्-फ़ज़ल इंटरनैशनल 7 जुलाई 2006 ई., पृष्ठ : 6)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के मुबारक शब्दों से में अपना मज़मून ख़त्म करता हूँ। आप फ़रमाते हैं :

"अतः इन शा अल्लाह तआला यह प्रगतियाँ होनी हैं। अल्लाह तआला हमें हमेशा साबित-क़दम रखे। अल्लाह तआला करे कि सिलसिला की पूरी तरक़्क़ी के नज़्ज़ारे हम अपनी आँखों से देखने वाले हों। अल्लाह तआला हमें अपने ओहदों को पूरा करने वाला बनाए ताकि अल्लाह तआला के वादा के पूरा होने का नज़ारा हम अपनी ज़िंदगियों में देख सकें। हमारी इबादतें, हमारी नमाज़ें, हमारे अमल अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने वाले हों। हम ख़िलाफ़त का सही इदराक हासिल करने वाले हों और इस बारे में अपनी नसलों को बताने वाले हों ताकि क़ियामत तक हमारी नसलें इस नेअमत से फ़ैज़याब होती चली जाएं और जो अहमदी हैं इन सबको तौफ़ीक़ दे कि वे हक़ीक़ी रंग में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तालीम पर अमल करने वाले हों और हक़ीक़ी अहमदी बनें और वे मुस्लमान जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अभी तक पहचान नहीं रहे अल्लाह तआला उन्हें पहचानने और बैअत में आने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और तमाम दुनिया में हम जल्द से जल्द इस्लाम का झंडा और हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का झंडा लहराते हुए देखें और तमाम दुनिया में हम तौहीद को क़ायम होता हुआ देखें।"

(ख़ुतबा जुमा फ़र्मूदा 28 मई 2021 ई., मतबूआ अल्-फ़ज़ल इंटरनैशनल 18 जून 2021 ई., पृष्ठ : 9)

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमा और खिताबात, अध्यात्म्पूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँगी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे। (संस्थान)

★ ★ ★

मध्य-पूर्व एशिया में जमाअत अहमदिया की प्रगति
(शम्सुद्दीन मालाबारी, मिशनरी इंचार्ज फ़लस्तीन)

मशरिक़-ए-वसता एशिया अफ़्रीक़ा और यूरोप के मध्य का इलाक़ा है। संसार में यह एक ऐसा महत्वपूर्ण इतिहासिक और सांस्कृतिक स्थान है जहां न केवल तहज़ीबों ने जन्म लिया बल्कि उस वक़्त दुनिया के तीन महान धर्म इस्लाम ईसाईयत और यहूदियत की बुनियाद इसी मध्य-पूर्व एशिया में पड़ी और उन मज़ाहिब के मुक़द्दस तरीन मुक़ामात इसी मध्य-पूर्व एशिया में मौजूद हैं। क़ुरआन-ए-करीम में वर्णित अम्बिया के वाक़ियात इसी सरज़मीन में हुए और क़ुरआन-ए-मजीद में वर्णित समस्त फलों की रोईदगी यकजाई तौर पर इसी सरज़मीन में होती है। उद्देश्य इस वक़्त हम अगर दुनिया की हज़ारों वर्ष की तारीख़ का जायज़ा ले लें तारीख़ी तहज़ीबी और सक़ाफ़्ती एतबार से जिस क़दर माला-माल मशरिक़-ए-वुसता का इलाक़ा है इस क़दर दुनिया का कोई भी इलाक़ा नहीं है ।

मध्य-पूर्व एशिया की नसली बिरादरियों में अफ़्रीक़ी, अरब, आर्मेनियाई, आज़री, बरबर, यूनानी, यहूदी, कुरद, फ़ारसी, ताजक, तर्क और तुर्कमान शामिल हैं, मगर ख़ित्ते की सबसे ज़्यादा बोली जाने वाली भाषा निसंदेह अरबी है जबकि अन्य भाषाओं में आर्मेनियाई, आज़री, बरबर , इब्रानी, कुरद, फ़ारसी, और तुर्क भाषाएँ इत्यादि शामिल हैं।

अल्लाह-तआला के फ़ज़ल से आज इस पृथ्वी के समस्त देशों में हज़रत मसीह महमदी के प्रेमी पाए जाते हैं। कहीं कम संख्या में , कहीं ज़्यादा संख्या में, कहीं तथाकथित उल्मा के अत्याचारों का सामना करते हुए और कहीं हिक्मत-ए-अमली के तहत अपने ईमान की हिफ़ाज़त के साथ गोशा-नशीनी में अपने रब के हुज़ूर दुआ करते हुए तथा एक बड़ी संख्या कातेमीन-ए-ईमान की शक्ल में समय के इमाम की जमाअत में शामिल है।

चूँकि मशरिक़-ए-वुसता में बड़ी संख्या अरबों की है और सबसे ज़्यादा बोली जाने वाली भाषा भी अरबी है। अतः अरब के अज़ीम मुक़ाम और अरबी बोलने वालों की कसरत के कारण बिलाद अरबिया का यहां ख़ुसूसियत के साथ वर्णन किया जाता है।

अल्लाह तआला ने सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अहल-ए-अरब के क़बूल-ए-अहमदियत के विषय में जो बशारात अता फरमाई इन ख़ुदाई बिशारात का ज़हूर हज़रत मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम की अपनी ज़िंदगी में ही शुरू हुआ दयारे हबीब सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम का पैग़ाम आपकी जीवनी में ही 1890 के अशरा में पहुंच चुका था। 1891 में मक्का मुकर्रमा के एक बुज़ुर्ग हज़रत मुहम्मद बिन शेख़ अहमद अल्मक्की (साकिन मुहल्ला शौब आमिर) और हज़रत मुहम्मद अल्-सईद अल्हमीदी तुराब्लसी शामी जिन्हों ने हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम के दस्त मुबारक पर बैअत की, हर दो बुज़ुर्गान तीन सौ तेराह अस्हाब-ए-कराम में शामिल हैं जिनका वर्णन आप अलैहिस्सलाम ने अपनी तहरीरात में फ़रमाया है। उनके इलावा भी आप हयात-ए-तय्यबा में ही अरबों में से कई और सईदुल फ़ितरत शख़्सियात ने अपने चश्म-ए-इर्फ़ान से आप अलैहिस्सलाम के सिदक़ का इदराक पाया और बैअत करके सिलसिला में दाख़िल हो गए। अरब के नेकों अल्-शाम के वालियों का एक गिरोह आपकी ज़िंदगी में आपसे फ़ैज़ पाते पाते दुनिया से विदा हुआ और आगे आने वाले अरबों के लिए काबिल-ए-तक़लीद नमूने छोड़ गया ।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माने में भी अरबों में तब्लीग़ की तरफ़ ख़ास तवज्जा हुई और इसके लिए अरबी जानने वाले उल्मा तैयार किए गए। इसलिए हुज़ूर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत मौलवी ग़ुलाम नबी साहब रज़ियल्लाहु अन्हो मिस्री को मिस्र भिजवाया। फिरा 1913 में हज़रत ज़ैनुल आबैदीन वलीउल्लाह शाह साहब रज़ियल्लाहु अन्हो शेख़ अब्दुर्रहमान मिस्री बग़रज़ तब्लीग़ और तालीम मिस्र भिजवाए गए।

हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद रज़ियल्लाहु अन्हो ने ख़िलाफ़त ऊला के ज़माना में पहली दफ़ा हज की यात्रा के दौरान बाअज़ अरब देशों का सफ़र इख़्तेयार फ़रमाया और वहां तब्लीग़-ए-अहमदियत के ज़राए मालूम किए। फिर अपनी ख़िलाफ़त पर मुतमक्किन होने के बाद आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने 1922 में हज़रत शैख़ महमूद अहमद साहिब इरफ़ानी रज़ियल्लाहु अन्हो को बग़रज़ तालीम मिस्र भिजवाया और आपके द्वारा मिस्र में जमाअत क़ायम की गई। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने स्वयं बिलाद अरबिया का सफ़र इख़्तेयार फ़रमाया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़लीफ़ा हज़रत मुस्लेह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम के बिलाद अरबिया के सफ़र करने से हज़रत मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम की एक भविष्यवाणी भी पूरी हो गई । इसलिए मसीह दमिशक़ की मशरिक़ी जानिब नुज़ूल की तशरीख़ में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था : " ثُمَّ يُسَافِرُ الْمَسِيْحُ الْمَوْعُوْدُ أَوْ خَلِيْفَةٌ مِّنْ خُلَفَائِهٖ إِلٰى أَرْضِ دَمِشْق، فَهٰذَا مَعْنَى الْقَوْلِ الَّذِىْ جَآءَ فِىْ حَدِيْثِ مُسْلِمٍ أَنَّ عِيْسٰى يَنْزِلُ عِنْدَ مَنَارَةِ دَمِشْق، فَإِنَّ النَّزِيْلَ هُوَ الْمُسَافِرُ الْوَارِدُ مِنْ مُّلْكٍ آخَرَ " (हमातुल बुश्रा, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 7 पृष्ठ : 225) अर्थात फिर मसीह मौऊद ख़ुद या उसके खुलफ़ा में से कोई ख़लीफ़ा दमिशक़ जाएगा। अतः दमिशक़ के मनारे की शर्क़ी जानिब मसीह का नुज़ूल इस तरह भी है क्योंकि किसी ग़ैर मुल्क से आने वाला मुसाफ़िर नज़ील होता है।

इसलिए 1924 में जब हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने यूरोप का सफ़र इख़्तेयार फ़रमाया तब आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने आदन, पोर्ट सईद, क़ाहिरा, बैतुल-मुक़द्दस, हैफा, दमिशक़ और बेरूत इत्यादि मशहूर अरब शहरों को भी अपनी ज़ियारत से मुबारक फ़रमाया। अरब देशों के सफ़र के दौरान दिलचस्प और ईमान अफ़रोज़ वाक़िया यह हुआ कि हज़रत मुस्लेह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम अपने 12 साथियों के साथ जहाज़ में सफ़र कर रहे थे। एक साथी हज़रत डाक्टर श्मतुल्लाह साहिब का वर्णन है कि एक रोज़ जब हुज़ूर ने अपने साथियों के साथ जहाज़ के सेहन में नमाज़ बाजमाअत अदा कर चुके थे कि जहाज़ के डाक्टर ने (जो इटली का बाशिंदा था) हुज़ूर की तरफ़ इशारा करके आहिस्ता से कहने लगा "यसू मसीह और 12 हवारी" यह सुनकर मेरी हैरत की कुछ हद न रही कि ख़ुदा तआला कैसा क़ादिर है कि यूरोप की बस्ती का रहने वाला एक निहायत सच्ची और आरिफ़ाना बात रहा है।

(अहमदियत, भाग 4 पृष्ठ 437)

इस सफ़र के दौरान हज़रत मुस्लेह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम ने दमिशक़ में कुछ दिन क़ियाम फ़रमाया। दौरान-ए-मुलाक़ात वहां के एक मशहूर आलिम अदीब श्रीमान शेख़ अब्दुल क़ादिर साहिब मग़रिबी ने कहा कि एक जमाअत के सम्मानित इमाम होने की हैसियत से हम आपका इकराम करते हैं। परन्तु आप यह उम्मीद न रखें कि इन इलाक़ों में कोई शख़्स आपके ख़्यालात से प्रभावित होगा क्योंकि हम लोग अरब नसल के हैं और अरबी हमारी मात्री भाषा है और कोई हिन्दी ख़ाह वह कैसा ही आलिम हो हमसे ज़्यादा क़ुरआन और हदेस के

माने समझने की अहलीयत नहीं रखता। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने यह गुफ़्तगु सुनकर उसके ख़्याल का खंडन फ़रमाया और साथ ही तबस्सुम करते हुए फ़रमाया कि मुबल्लिग़ तो हमने सारी दुनिया में ही भेजने हैं। परन्तु अब हिन्दुस्तान वापसी जाने पर मेरा पहला काम यह होगा कि आपके मुल्क में मुबल्लिग़ रवाना करूँ और देखूं कि ख़ुदाई झंडे के अलंबरदारों के सामने आपका क्या दम-ख़म है।

(तारीख़-ए-अहमदियत भाग 4, पृष्ठ : 443)

इसलिए आपने ऐसा ही किया। सफ़र से वापसी के बाद आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत मौलाना जलालुद्दीन शमस साहिब को हज़रत ज़ैनुल आबैदीन वलीउल्लाह शाह साहब रज़ियल्लाहु अन्हो के हमराह शाम रवाना फ़रमाया और इस तरह वहां पर जमाअत की बाक़ायदा बुनियाद रखी गई। मौलाना शमस साहिब की कोशिश से शाम में जमाअत तरक़्क़ी करती गई।

हज़रत मुस्लेह मौऊद और महदी मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में कबाबीर के इलावा दमिशक़, बेरूत, बग़दाद, अरदन, अदन, मिस्र, ईरान इत्यादि में जमाअतें क़ायम हुईं जहां अहमदी मुबल्लेग़ीन जाते रहे सईद रूहें अल्लाह-तआला ने जमाअत को अता फ़रमाइ फिर सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद ने 1955 में एक-बार फिर बिलाद-ए-शाम की ज़यारत फ़रमाई जहां अपने हाथ से बोई बीज को अल्लाह-तआला आपकी ज़िंदगी में फलदार दरख़्त की सूरत में आपको दिखाया। इस तरह बिलाद-ए-अरबिया उमूमन और बिलाद शाम में विशेषता हज़रत मुस्लेह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम के द्वारा रुहानी इन्केलाब और फ़ुतूहात होने लगीं और एक मशहूर सूफ़ी वली हज़रत यहया बिन अकब रहमहुल्लाह मोअल्लिम अल् बसतीं की भविष्यवाणी ويملك محمودٌ سيَظهر بعد هذا، الشامَ بلا قِتال अर्थात इसके बाद महमूद का ज़हूर होगा जो बिलाद-ए-शाम को जंग के बग़ैर फ़तह करेगा बड़ी शान के साथ पूरी हुई। (मुकम्मल भविष्यवाणी के लिए देखें किताब शमस मारिफ़ कुबरी लिलशेख़ अहमद बिन अली अल् बूनी मोतवफ्फी 622 हिजरी)

फिर शाम में हज़रत जलालुद्दीन शमस साहब रज़ियल्लाहु अन्हु पर क़ातिलाना हमला हुआ और हज़रत मुस्लेह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम की दुआओं के तुफ़ैल मोजज़ाना रंग में अल्लाह-तआला ने आपको शिफ़ा अता फ़रमाई। फिर ख़ुदाई हिक्मत के तहत मौलाना शमस साहब रज़ियल्लाहु अन्हु को हैफा मुंतक़िल होना पड़ा। इसलिए 1928 में पहले हैफ़ा में फिर कबाबीर में जमाअत का क़ियाम अमल में आया। इस अवसर पर कबाबीर जमाअत का अजमाली रंग में कुछ वर्णन करना मुफ़ीद साबित होगा।

कबाबीर की जमाअत

कबाबीर में जमाअत अहमदिया का क़ियाम 1928 में हज़रत मौलाना जलालुद्दीन साहिब शमसऊ के द्वारा हुआ था। कबाबीर की जमाअत शुरू से सौ फ़ीसद अरब अहमदियों पर मुश्तमिल चली आरही है जिनमें से अक्सरियत बाहम रिश्तेदार भी है। 1931में यहां मस्जिद की बुनियाद रखी गई जो जमाअत अहमदिया की तारीख़ में बिलाद अरबिया में बनाई जाने वाली पहली मस्जिद है। इस मस्जिद का नाम हज़रत मुस्लेह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम की तरफ़ मंसूब "जामा सय्यदना महमूद" है जो करमिल पहाड़ के ऊपर समुंद्र से क़रीब स्थित है। 1979 ई. के बाद इस मस्जिद की तौसीअ हुई। इस मस्जिद के दो बुलंद मीनारे हैं जो तिल अबीब हैफ़ा की मेन सड़क पर बहुत दूर से नज़र आते हैं। यहां कसरत से अतिथि तशरीफ़ लाते हैं और इस्लाम अहमदियत का परिचय हासिल करते हैं तथा इस बात का इज़हार भी करते हैं कि हम इस ख़ूबसूरत मुक़ाम पर आकर ख़ूबसूरत मस्जिद में हक़ीक़ी इस्लाम की ख़ूबसूरती पाई है।

कबाबीर को आबाद करने वाली फ़ैमिली का नाम "ओदा" है। उसमानी दौर-ए-ख़िलाफ़त के अंत में 1850 के क़रीब एक शख़्स मुसम्मा ऊदा नदी साहिब ने अपने पाँच बेटों को लेकर योरोशलम के क़रीब नालैन नामी एक गांव से हिज्रत करके कर्मिल पहाड़ पर एक जगह गोशा-नशीनी इख़्तेयार की।

बाद में अल्लाह-तआला ने इसी ख़ानदान को अहमदियत क़बूल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई। इसलिए ऊदा साहिब के बेटों में से एक ने सौ साल से ज़ायद उम्र पाई और अपने बच्चों के साथ बैअत की तौफ़ीक़ पाई, जबकि बाद में मरहूम ओदा साहिब के तमाम पोते और उनके बचगान सब बैअत करके समय के इमाम की जमाअत में शामिल हुए।

सिलसिला के बुज़ुर्ग उल्मा जो यहां मुबल्लिग़ रहे हैं कबाबीर को मशरिक़-ए-वुसता का मर्कज़ बनाकर बहुत बड़े इलमी और तब्लीग़ी काम सरअंजाम दिए। 1932 में मुहतरम मौलाना अबुल अता साहिब जालंधरी के द्वारा कबाबीर से पहला अरबी रिसाला "अल् बुश्रतुल इस्लामिया अहमदिया" प्रकाशित हुआ और फिर वही रिसाला 1935 से "अल् बुश्रा" के नाम से प्रकाशित होता रहा जो अब तक जारी है। इसके बाद बच्चों की तालीम तरबियत के लिए बाक़ायदा एक दरसगाह "मदर्रसा अहमदिया" के नाम से क़ायम किया गया। फिर आहिस्ता-आहिस्ता जमाअती रिवायात की इत्तिबा में और खलिफ़ा-ए-किराम की तहरीकात पर लब्बैक कहते हुए जमाअती तक़ारीब मुन्क़िद की जाने और 1968 से यौम मुस्लेह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम, यौम मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम और यौम ख़िलाफ़त इत्यादि का इनइक़ाद होने लगा। इस सिलसिला में श्रीमान मौलाना बशीरुद्दीन अबैदुल्लाह साहिब मरहूम मुबल्लिग़ सिलसिला की कोशिश काबिल-ए-ज़िक्र है। 1986 में इस वक़्त के मुबल्लिग़ श्रीमान मौलाना मुहम्मद हमीद कौसर साहिब की कोशिश से मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया का सालाना इजतेमा यौम-ए-मुस्लेह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम के अवसर पर बाहम मिलाकर मुनाक़िद होने लगा और यह जलसे दरअसल सालाना जलसा के लिए बतौर पेश-ख़ेमा साबित हुए।

कबाबीर के इबतेदाई जलसा सालाना 1995 में कबाबीर में पहली दफ़ा बाक़ायदा जलसा सालाना का आग़ाज़ हुआ। जिसमें कबाबीर के लोगों के इलावा बाहर के इलाक़ों से भी मेहमान तशरीफ़ लाए थे। फिर अप्रैल 1996 को कबाबीर का दूसरा जलसा सालाना आयोजित हुआ। तीन रोज़ा इस जलसे में एक दिन यौम-ए-तब्लीग़ के तौर पर मनाया गया। इसी तरह अप्रैल 1997 को कबाबीर का तीसरा सालाना जलसा आयोजित हुआ। इसके बाद बाअज़ मुक़ामी न-मसायद हालात के सबब तीन साल (1998 से 2000) जलसे मुनाक़िद नहीं हुए। इसके बाद 2001 से आज तक कबाबीर में सालाना जलसों का बाक़ायदा आयोजन किया जा रहा है।

बिलाद-ए-अरबिया में ना मुसायद हालात का दौर दौरा 1948 में इसराईल का क़ियाम हुआ। हैफ़ा और अन्य इलाक़ों से मुस्लमान अरदन और सीरिया की तरफ़ हिज्रत कर गए। मगर कबाबीर वाले ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया की बरकत से ख़लीफ़ा वक़्त के इरशाद पर लब्बैक कहते हुए अपनी जगह कबाबीर से नहीं निकले और अपनी ज़मीनें यहूदियों के हाथ जाने नहीं दें, हर मुश्किल हालात का सामना करने के लिए तैयार रहे। अल्लाह-तआला ने फ़ज़ल फ़रमाया, हज़रत मुस्लेह मौऊद और महदी मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआओं और रहनुमाई में कबाबीर वाले महफ़ूज़ रहे और अपनी मस्जिद के इर्द-गिर्द नेकी वस्लाह का मुज़ाहरा करके अख़लाक़ के हथियार के द्वारा दुश्मनों को मरऊब किया और अब तक अमन-ओ-अमान के साथ रह रहे हैं। परन्तु अन्य अरब देशों का यह हाल नहीं रहा।

साठ की दहाई में अरब देशों में सयासी तौर पर बड़ी तबदीलीयां वाक़्य हुईं और सयासी अदम-ए-इस्तहकाम रौनुमा हुआ जिसका सबसे ज़्यादा

नुक़्सान जमाअत अहमदिया को हुआ। इस लिहाज़ से कि जमाअत अहमदिया की सरगर्मीयां जो बिलाद-ए-अरबिया में उरूज पर पहुंच गई थीं यकदम महिदूद हो कर रह गईं। तब्लीग़ न होने की वजह से जहां नौ मौबाईन की संख्या सिफ़र हो गई वहां पुराने अहमदी मुसलसल ज़द ओ कोब किए जाने और ज़हनी टार्चर की वजह से मर्कज़ से ताल्लुक़ क़ायम रखने में कामयाब न हो सके और यूं कुछ अरसा में इन इलाक़ों में कहीं कहीं अहमदी तो मौजूद रहे लेकिन अहमदियत का मज़बूत और फ़आल और नुमायां वजूद मंज़र-ए-आम से ग़ायब हो गया।

बिलाद अरबिया में जमाअत का पुनः आरंभ

ख़िलाफ़त राबिया में एम .टी .ए के द्वारा और विशेषता प्रोग्राम लिका माला अरब के द्वारा से अरबों में इलमी तरक़्क़ी हुई जगह-जगह जमाअत का वर्णन होने लगा। फिर अल्लाह-तआला ने ख़िलाफ़त-ए-ख़ामसा के दौर में अरबों में एक अज़ीम इन्क़लाब पैदा फ़रमाया। ख़िलाफ़त ख़ामसा का दौर अरबों की दीनी और सयासी तारीख़ में नाक़ाबिल फ़रामोश वर्णन बन कर रहना ख़ुदाई तक़दीर है। अह्द-ए-ख़िलाफ़त ख़ामसा में अरब देशों में हुई प्रगति का वर्णन बहुत लम्बा चाहता है। ख़ाकसार यहां बाअज़ अहम उमूर के तज़करः पर इकतेफ़ा करता है।

ख़िलाफ़त ख़ामसा के समय में बिलाद अरबिया में जमाअती प्रगति

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मन्सब-ए-ख़िलाफ़त पर फ़ायज़ होने के बाद एक-बार हमारे एक मुख़्लिस अरब भाई श्रीमान मुनीरुद्दीन साहिब को फ़रमाया था कि मेरे अह्द में अरबों में तब्लीग़ के लिए राह खुलेगी और अरबों में अहमदियत का नफ़ुज़ होगा और वह कसरत से अहमदियत की आग़ोश में आएँगे। इसलिए हुज़ूर अनवर के यह शब्द आज अरबों में फ़ुतूहात और जमाअत के इंतेशार की शक्ल में पूरे हो रहे हैं। एम.टी.ए 3 अरबिया भी इस सिलसिला की एक कड़ी थी। इस वक़्त एक मुस्तक़िल अरबी चैनल और इसके लिए मुसलसल प्रोग्राम तैयार करना बिल्कुल नामुमकिन बात थी मगर ख़ुदा तआला के महान ख़लीफ़ा की ख़ाहिश और इरादे क्योंकर रुक सकते हैं?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का अरबों से ख़िताब

अल् हवारुल मुबश्रा के एक प्रोग्राम में तिथि 8 जून 2008 को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अरबों को सम्बोधित करके फ़रमाया :

"अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाही व बरकातहू।" हे समस्त अरब के रहने वालो आप पर अल्लाह तआला के बेशुमार फ़ज़्ल और इनामात और एहसानात हों।आपकी संख्या उस वक़्त जबकि दुनिया की नज़र में थोड़ी है लेकिन आपके दिल उस वक़्त एक नूर से भरे हुए हैं और मुझे उम्मीद है कि यह संख्या जल्दी इंशाअल्लाह हज़ारों लाखों और करोड़ों में बदलने वाली है ... में अपने समस्त अरब अहमदी भाईयों को यह पैग़ाम देता हूँ कि आज जिस इस्लाम और जिस फ़ज़्ल से अल्लाह तआला ने आपको अवगत फ़रमाया है इसको आगे भी फैलाया और इस वक़्त तक चैन से न बैठें जब तक समस्त दुनिया को, सस्त अरब वालों को मसीह मुहम्मदी के क़दमों तले न ले आएं और यह इस लिए नहीं कि मसीह मुहम्मदी के क़दमों तले लाने में मसीह मुहम्मदी की बड़ाई है बल्कि यह हक़ीक़ी तौर पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़दमों तले लाने वाली बात है जिस को आज दुनिया भूल चुकी है। 27 मई को यौम-ए-ख़िलाफ़त के दिन मैं ने जो तमाम अहमदियों से अह्द लिया था कि आप लोग आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पैग़ाम को दुनिया में पहुंचाने और ख़िलाफ़त अहमदिया के क़ायम रखने के लिए हर क़ुर्बानी देने के लिए तैयार रहें गे और उस वक़्त तक चैन से नहीं बैठेंगे जब तक समत दुनिया पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का झंडा न लहराए।

अल्लाह तआला से दुआ है और मैं उम्मीद करता हूँ कि आप में से हर अहमदी जो अरब दुनिया में बस्ता है मेरा सुलतान-ए-नसीर बन कर इस काम में हाथ बटाएगा। अल्लाह तआला आपको उसकी तौफ़ीक़ अता आमीन।"

ينصرك رجال نوحى اليهم من السماء

एम.टी.ए अल् अरबिया के द्वारा जबकि तब्लीग़ का बेहतर से बेहतर द्वारा खुल गया परन्तु हिदायत देना तो ख़ुदा तआला के हाथ में है। इसलिए अल्लाह-तआला ने बहुत सी नेक फ़ित्रत सईद रूहों को बज़रीया रोया सादिका वक़्त से पूर्व आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आशिक़ सादिक़ हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अस्सलाम और खलिफ़ा-ए-उज़्ज़ाम की तसावीर अब दिखाएंगे और फिर बाद में एम.टी.ए के द्वारा उन्होंने इन तसावीर का ऐनी मुशाहिदा किया और ख़ुदाई रहनुमाई के तहत इस तरीक़ से हिदायत पाने वालों की संख्या बहुत है। नमूने के तौर पर एक वाक़िया निमंलिखित में पेश हैं।

कबाबीर से नशर होने वाला लाईव प्रोग्राम मजालिस अल् ज़िकर के अवसर पर मिस्र के एक दोस्त श्रीमान अबू मुहम्मद साहिब ने फ़ोन किया और रोते हुए कहने लगे, पाँच छः साल पूर्व मैंने एक रोया में देखा कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए हैं और मुझे अपने बाज़ू से लगाए, और ज़ोर से अपने से लगा कर रखा जबकि मुझे सर्दी महसूस हो रही थी। इसके बाद हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुझे बुलाकर एक ख़ाली जगह ले गए। उस वक़्त मैं किसी और कारण से बहुत ग़ुस्से की हालत में था, रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझ से फ़रमाया, हमारे सामने वाले इस मकान की तरफ़ देखो, इस पर मैंने इस मकान से एक क़बीह शैतानी शक्ल के इन्सान को निकलता हुआ देखा। इस पर हुज़ूर ने फ़रमाया, यह जो शैतान है यह ग़ज़ब की हालत में इन्सान पर मुसल्लत होता है और मैं तुम्हें नसीहत करता हूँ कि ग़ुस्सा न किया करो। इसलिए हुज़ूर ने तीन दफ़ा इस नसीहत को दुहराया। फिर मुझे अपने से लगाकर चल पड़े। मैं कहता जा रहा था कि मेरे प्यारे आक़ा मुझे नसीहत करने आए हैं।

फिर एक समय के बाद मैं टेलीविज़न पर चैनल्ज़ तबदील कर रहा था तो अपने आक़ा सय्यदना अहमद अलैहिस्सलाम को देखा और मैंने कहा बख़ुदा यही वह शख़्स है जिसको मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सूरत में देखा था। मैं ने इस से क़बल कई बार इस सूरत को ख़ाब में देखा परन्तु पहचानता नहीं था। फिर विशवास हो गया कि यह मेरे आक़ा हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादयानी अलैहिस्सलाम की शक्ल है। लेकिन बावजूद बात वाज़ेह होने के अपने पुराने अक़ायद को तर्क नहीं कर सका और इस वजह से बैअत नहीं की, यह सब बातें तक़रीबन चार साल क़बल की हैं। अब एक हफ़्ता क़बल जब मैं अपनी नींद से बेज़ार हुआ तो मुझे एक बुलंद आवाज़ सुनाई दी जो इस तरह है, तो हर चीज़ को मानता है मगर मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब को जिसे अल्लाह-तआला ने आसमान से भेजा है नहीं मानता। ख़ुदा की क़सम ऐसा ही हुआ मैं तुरंत उठा और अपनी बीवी बच्चों को कहा कि आज से तुम सब अहमदी हो और मैं तुम्हें वसीयत करता हूँ कि अहमदी हुए बग़ैर तुम पर मौत नहीं आनी चाहिए।

दारुल अमनन (वैस्ट बैंक फ़लस्तीन)

अल्लाह के फ़ज़्ल 2000 की पहली दहाई में वैस्ट बैंक फ़लस्तीन में बहुत से सईद दिल अफ़राद बैअत करके सिलसिला अहमदिया में शामिल हुए। ख़िलाफ़त-ए-ख़ामसा के पवित्र समय में अरबों में जिस क़दर तेज़ी से जमाअत का इंतेशार हुआ जमाअत वैस्ट बैंक उसकी बेहतरीन मिसाल है। जबकि कि वैस्ट बैंक के बहुत से इलाक़ों में बैअतें हुईं परन्तु शहर तोलकरम

के मुज़ाफ़ात में उनकी संख्या ज़्यादा रही। शहर तोलकरम के तहत एक गांव कुफ़्र सूर भी है जहां दौर ख़िलाफ़त राबिया के अंत में श्रीमान अब्दुल क़ादिर मुदल्लिल साहिब की फ़ैमिली ने बैअत की थी। अब ख़िलाफ़त-ए-ख़ामसा में इलाक़े के कई और दोस्तों ने भी बैअत की। इस पर श्रीमान अब्दुल क़ादिर साहिब ने अपने घर के एक हिस्सा को बतौर मस्जिद और मशन हाउज़ प्रयोग करना शुरू किया जहां अहमदी दोस्त जुमा के दिन जमा होते थे और महीने में एक-बार जलसा भी होता रहा।

फिर एम.टी. ए अल्अरबिया और मुक़ामी अहमदियों की दोस्ताना तब्लीग़ी मुहिम्मात के द्वारा इलाक़े में मज़ीद बैअतें हुईं। इस पर एक मुस्तक़िल मर्कज़ बनाने का फ़ैसला किया गया वैस्ट बांक फ़लस्तीन में मस्जिद और मिशन तैयार करना हमारी जमाअत के लिए दीगर अरब मुस्लमान मुल्कों की तरह मुश्किल बल्कि नामुमकिन कार्य था मगर अल्लाह-तआला ने फ़ज़ल फ़रमाया। मस्जिद बे-शक नहीं है मगर एक दो मंज़िला इमारत तामीर कराने की अल्लाह-तआला ने तौफ़ीक़ अता फरमाई इसलिए 18 अप्रैल 2012 को सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु की तरफ़ से अरसाल करदा मुबारक पत्थर के साथ इमारत की संग-ए-बुनियाद रखी गया और जल्द-जल्द काम होता गया। जिसके बेशतर अख़राजात लजना इमाइल्लाह कबाबीर की तरफ़ से अदा हुए,

فجزاھن اللہ خیر الجزاء۔

वैस्ट बैंक फ़लस्तीन के मिशन को सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस ने अज़ राह शफ़क़त "दारुल अमान" का नाम अता फ़रमाया है। अल्लाह के फ़ज़्ल से यह इमारत फ़लस्तीन में अमन का मर्कज़ है। मुख़्तलिफ़ वर्ग के फ़लस्तीनी लोग अपने समस्त दुनयवी उमूर को एक तरफ़ करके इस मर्कज़ में बार-बार जमा होते हैं और अमन-ओ-अमान की बातें सुनते हैं, सीखते हैं और दूसरों को सिखाते हैं।

ख़लील में जमाअत

अल्लाह के फ़ज़्ल से 2019 से जुनूबी फ़लस्तीन ख़लील में भी बाक़ायदा जमाअत क़ायम है। इसलिए सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं कबाबीर के मुबल्लिग़ सिलसिला लिखते हैं कि अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से दक्षिण फ़लस्तीन के शहर में चंद वर्षों से अहमदी तो रहते हैं लेकिन वहां मुनज़्ज़म जमाअत क़ायम नहीं थी। अल्लाह के फ़ज़्ल से इस साल के दौरान यहां बाक़ायदा जमाअत का क़ियाम अमल में आया है और अल्ख़लील जो हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलाम की जगह है और यहां हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलाम, हज़रत इसहाक अलैहिस्सलाम और हज़रत याक़ूब और उनकी अज़्वाज-ए-मुतह्हरात की क़ब्रें भी हैं, ये पुराना तारीख़ी शहर है, इस शहर में और इर्द-गिर्द के गांव हमारे 27 अहमदी अफ़राद रहते हैं, बाक़ायदा जमाअत क़ायम कर दी गई है और एक अहमदी ने अपने घर का एक हिस्सा बतौर मस्जिद के अलग किया है कि यहां नमाज़ें पढ़ा करें। ख़ुतबा जुमा 7 अगस्त 2020 ई.

मुख़्तलिफ़ असंख्य अहमदी घरों में बदल बदल कर नमाज़-ए-जुमा अदा की जाती है और इज्लासत होते रहते हैं।

मसरूर सैंटर कबाबीर

जामा सय्यदना महमूद कबाबीर का पहले वर्णन हो चुका है जिसकी तामीर के मराहल धीरे धीर होते रहे। अंततः दो बुलंद मीनारों का काम 1990 की दहाई में मुकम्मल हुआ। अब तक़रीबन पंद्रह साल बाद फिर अल्लाह तआला ने कबाबीर वालों को एक नई इमारत "मसरूर सैंटर" बनाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई है। यह एक दो मंज़िला इमारत है जिस के एक हिस्से में एम. टी. ए का स्टूडियो तैयार हुआ है जिसकी जमाअत को अशद ज़रूरत थी। अल्लाह के फ़ज़्ल से जदीद तर्ज़ पर बड़ा ख़ूबसूरत स्टूडियो तैयार हुआहै। बाक़ी हिस्सों में कान्फ्रैंस हाल, हुज्रा इस्तक़बाल, दफ़ातिर, मीटिंग हाल और कुतुब ख़ाना इत्यादि बनाए गए।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु की ज़बानी भविष्य की ख़ुशख़बरी और इस की इबतेदाई झलकियाँ

मौरख़ा 5 जून 2021को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने कबाबीर जमात से वर्चूअल मुलाक़ात में फ़रमाया "अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से जमाअत की जो तरक़्क़ी हो रही है और जमाअत जिस तरह फैल रही है, हर मुल्क में और हर मुल्क के कई शहरों में जमाअत की संख्या बढ़ रही है और जमाअत का परिचय हो गया है और दुनिया के बड़े-बड़े ऐवानों में भी जमाअत का परिचय हो गया है। तो हमें उम्मीद है कि जल्द इंशा-ए-अल्लाह आइन्दा बीस, पच्चीस साल जमाअत की तरक़्क़ी के बहुत अहम साल हैं और आप देखेंगे कि अक्सरीयत इंशा अल्लाह मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के झंडे तले आजाएगी या कम से कम मुस्लमानों में से अक्सरीयत ऐसी होगी कि जो यह स्वीकार करने वाली होगी कि अहमदियत ही हक़ीक़ी इस्लाम है।"

हुज़ूर ने फ़रमाया "इन शा अल्लाह एक दिन आएगा जब उम्मते मुस्लिमा मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के झंडे तले ख़ाना काअबा में दाख़िल होगी।"

हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु ने यह बातें कबाबीर की जमाअत के साथ मुलाक़ात के दौरान फ़रमाई थीं। उस वक़्त अल्लाह-तआला के फ़ज़्ल से मीडीया और अन्य मुख़्तलिफ़ वसायल आलाम के द्वारा हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अस्सलाम और ख़लीफ़ा वक़्त की आवाज़ अरब शरह और मध्य-पूर्व एशिया में ज़ोर से पहुंच रही है।

तंज़ीम हियुमेनिटी फ़रस्ट के द्वारा भी मशरिक़-ए-वुसता में जमाअत के द्वारा ख़िदमत-ए-इन्सानियत का काम बहुत उम्दा तरीक़ से चल रहा है। फ़लस्तीन में शहर राम अल्लाह में हाल ही में हुकूमत फ़लस्तीन की मंज़ूरी से हियुमेनिटी फ़रस्ट का दफ़्तर खोलने की हमें तौफ़ीक़ मिली।

अतः हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु के पवित्र समय में अरबिया की ज़मीन में हज़ारों मार्ग से भटके हुए लोगो ने निशान-ए-मंज़िल पा लिया और मार्ग से भटके हुए लोगों ने सदमार्ग को जा लिया। निज़ाम वसीयत में सैंकड़ों अरब शामिल हुए, अरबों से वाकफ़ीन ज़िंदगी और मुबल्लेग़ीन तैयार हुए और हो रहे हैं। तहरीक वक़्फ़ नौ में शामिल होने वालों की संख्या भी बढ़ती जा रही है।

इस महान ख़लीफ़ा की हृदय की तड़प और कलबी तमन्ना और प्रयासों को देखते हुए विश्वास है कि वह दिन दूर नहीं जब हम समस्त नबियों के सरदार ख़ातमुल अम्बिया हज़रत-ए-अरबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का झंडा दुनिया के समस्त झंडों से ऊंचा लहराता हुआ देखें। इस वक़्त समत अरब और मशरिक़-ए-वुसता के रहने वाले भी क़ुरआन-ए-मजीद की भाषा में बे-इख़्तियार बोल उट्ठेंगे

وَقُلۡ جَآءَ الۡحَقُّ وَزَهَقَ الۡبَاطِلُ اِنَّ الۡبَاطِلَ كَانَ زَهُوۡقًا اور آنکھ
یَدۡخُلُوۡنَ فِیۡ دِیۡنِ اللّٰهِ اَفۡوَاجًا

★ ★ ★

हदीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और यदि खड़े होकर संभव न हो तो बैठ कर और यदि बैठ कर भी संभव न हो तो पीठ के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family
Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya.
West Bengal

अफ़्रीक़ा में जमाअत अहमदिया की प्रगति

(चौधरी नईम अहमद बाजवा, प्रिंसिपल जामेअतुल मुबशरीन बुर्कीना फासो)

बुर्कीना फासो में जमाअत अहमदिया की प्रगति

बुर्कीना फासो में अहमदियत का परिचय

घाना के उत्तर शहर W A के एक मुख़्लिस अहमदी अल्हाज सालेह साहिब जो 1932 मे अहमदी हुए थे, के द्वारा अपरो वोल्टा की सरज़मीन पर 1950 की दहाई के इबतेदाई वर्षो मेंअहमदियत का पैग़ाम पहुंचा। उस पैग़ाम पर लब्बैक कहने वाले इबतेदाई मु ख़ललेसीन को मुस्लमानों और ईसाईयों की तरफ़ से मुख़ालिफ़त का सामना हुआ।

बुर्कीना फासो में श्रीमान अब्दुल वाहहाब बिन आदम साहिब साबिक़ अमीर जमाअत गाना की कोशिशों से 2 जनवरी 1986 को जमाअत की रजिस्ट्रेशन हुई। इस दौरान मुबल्लेग़ीन कराम यहां दौरे पर तशरीफ़ लाते रहे । पहले अमीर जमाअत बुर्कीना फासो श्रीमान मुहम्मद इदरीस शाहिद साहिब थे आप जनवरी 1990 मे यहां पहुंचे।

नौ ज़ायद जमात का स्वरूप

1990 से 2004 तक के वर्षो को इबतेदाई स्वरूप उभरने वाले साल कहा जा सकता है। इस दौरान मज्लिस-ए-शूरा का निज़ाम क़ायम हुआ और जलसा सालाना का आरंभ हुआ। इसी तरह ज़ेली तंज़ीमें क़ायम हुईं और जमाअत का पैग़ाम बुर्कीना फासो के लोगों तक पहुंचने लगा।

दौरा हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ 2004 :

1990 में श्रीमान मुहम्मद इदरीस साहिब अमीर जमाअत बुर्कीना फासो ने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस की ख़िदमत में एक ख़त भिजवाया जिसमें बुर्कीना फासो के एक अहमदी का स्वप्न लिखा। इसके उत्तर में श्रीमान अमीर साहिब के नाम ख़त में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह की तरफ़ से निमंलिखित इरशाद मौसूल हुआ

"स्वप्न मुबारक है और इस का मतलब है कि देश की मिट्टी सच्चाई को स्वीकार करने के लिए उपजाऊ है और मेरे दौरे के बाद इन शा अल्लाह सदाक़त को क़बूल कर के नूर से चमक उट्ठेगी। ख़ुदा करे ऐसा ही हो।" (ख़त श्रीमान ऐडीशनल वकील अल् तिबशीर् साहिब लंदन 1990 T. 3360,19 jun)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह तआला का दौरा बुर्कीना फासो तो नहीं हो सकता जबकि ख़ुदा तआला की तक़दीर के तहत आपके जांनशीन और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पांचवें ख़लीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सरज़मीन बुर्कीना फासो को क़दम-बोसी का शरफ़ अता फ़रमाया। इस तारीख़ी और बाबरकत दौरे के बाद बुर्कीना फासो की मिट्टी नूर हिदायत से चमक उठी और अहमदियत का क़ाफ़िला तेज़ी के साथ प्रगति की मनाज़िल तै करने लगा। 25 मार्च 2004 इस देश की तारीख़ में यादगार दिन है जब पहली बार ख़लीफ़तुल मसीह के क़दम मुबारक इस सरज़मीन पर पड़े। आपका यह दौरा 4 अप्रैल तक जारी रहा। इस बाबरकत दिनों में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने जमाअतों का दौरा किया, संग-ए-बुनियाद और उद्घाटन का समागम हुआ। अहम सरकारी इत्यादि गैर- सरकारी मुलाक़ातें कीं । जलसा सालाना बुर्कीना फासो से ख़िताब फ़रमाया। नैशनल मज्लिस-ए-आमला, ज़ेली तन्ज़ीमों की मजलिस आमिला और मुबल्लेग़ीन किराम से मीटिंगज़ कीं। अतफ़ाल-ओ-ना-स्रात ने बराह-ए-रास्त क्लास में शामिल हो कर अपने प्यारे आक़ा से फ़ैज़ पाया। और सबसे बढ़कर इस दूर-दराज़ देश के अहमदियों को अपने प्यारे इमाम का दीदार करके रुहानी तरो ताज़गी के सामान मयस्सर आए। इस दौरे की मुख़्तसर झलक है :

26 मार्च 2004 को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने बुर्कीना फासो के वज़ीर-ए-आज़म para-manga ernest yonli को शरफ़ मुलाक़ात अता फ़रमाया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि मैं बुर्कीना फासो के लोगों में मिलनसारी और मेहमान-नवाज़ी की रूह से अत्यधिक प्रभावित हुआ हूँ।

इसी रोज़ 26 मार्च 2004 सदर-ए-मुम्लिकत बुर्कीना फासो हिज़ एकसीलेंसी बलीज़ कम्पावरे his exc. blaise compaore से मुलाक़ात हुई। जब हुज़ूर अनवर सदर-ए-मुम्लिकत के दफ़्तर में तशरीफ़ ले गए तो सदर-ए-मम्लिकत हुज़ूर अनवर को ख़ुश-आमदीद कहने की लिए मुंतज़िर थे। हुज़ूर अनवर ने मुलाक़ात ने लिए सदर-ए-मुम्लिकत का शुक्रिया अदा किया तथा फ़रमाया कि वह बुर्कीना फासो के लोगों के अख़लाक़ से अज़-हद मुतास्सिर हुए हैं। सदर-ए-मम्लिकत को मश्वरा देते हुए आपने फ़रमाया "अगर आप लोग मेहनत और दयानतदारी से काम करें तो बहुत जल्द आपका शुमार की leading nations में होने लगेगा।

जलसा गाह में आमद और
बुर्कीना फासो से पहला लाईव ख़ुतबा जुमआ

26 मार्च 2004 वह तारीख़ी दिन है जब सरज़मीन बुर्कीना फ़सो से पहली दफ़ा किसी ख़लीफ़ा वक़्त का ख़ुतबा जुमा सीधे एम. टी. ए. पर प्रसारित किया गया। यह ख़ुतबा टेलीफ़ोन लाईन के द्वारा नशर हुआ। रेडीयो इस्लामिक अहमदिया बूबू जलासो से भी यह ख़ुतबा सीधे सुना गया। हुज़ूर अनवर ने यह ख़ुतबा वागादो गो मिशन में तैयार करदा जलसा गाह में इरशाद फ़रमाया उस वक़्त तेराह हज़ार से ज़ायद अहबाब जलसा गाह में मौजूद थे। 27 मार्च को हुज़ूर अनवर ने जलसा से इख़्तेतामी ख़िताब फ़रमाया और दुआ करवाई। जलसा सालाना में मुल्क की 425 जमाअतों से 13755 अफ़राद शामिल हुए। इस के इलावा नाईजेरिया, आयोरी कोस्ट और गाना से भी अफ़राद शामिल हुए। 28 मार्च को मर्कज़ी मिशन हाऊस की मस्जिद बैतुल महदी में नमाज़-ए-फ़ज्र पढ़ाई जिसके साथ इस मस्जिद का इफ़्तिताह अमल में आया। 30 मार्च 2004 को डोरी में पहले अहमदिया प्राइमरी स्कूल का संग-ए-बुनियाद रखा। हुज़ूर ने 31 मार्च 2004 को "काया" में मस्जिद हुदा का उद्घाटन फ़रमाया और मिशन हाऊस का संग-ए-बुनियाद रखा। 3 अप्रैल 2004 को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से शरफ़-ए-मुलाक़ात पाने के लिए वज़ीर-ए-सेहत मिशन हाऊस आए। इस मुलाक़ात के बाद हुज़ूर अनवर ने अहमदिया हस्पताल वागादव का इफ़्तिताह फ़रमाया। इस अवसर पर हुज़ूर अनवर के साथ वज़ीर मौसूफ़ ने भी हस्पताल के सेहन में आम का पौधा लगाया।

दौरा के महान नताइज प्रकट होंगे

इस तारीख़ी दौरे के बाद हज़रत अमीरूल मोमेनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अमीर जमाअत बुर्कीना फासो का नाम लिखा :

"ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल से बुर्कीना फासो का दौरा भी ग़ैरमामूली और ख़ुशकुन था। अलहमदु लिल्लाह अला ज़ालिक ... जमाअत के तमाम अफ़राद पुरुष महिलाएं और बच्चों ने बड़े इख़लास और फ़िदाईयत का नमूना दिखाया है ... मुझे पूरा यक़ीन है कि बुर्कीना फासो की सरज़मीन पर

अहमदियत का जो बीज बोया गया है वह जल्दी दाइमी फल लाएगा। बुर्कीना फासो के लोग हक़ीक़तन बड़े अज़ीम लोग हैं और मुझे ख़ुशी है कि खुदा ने उनको अहमदियत के नूर से मुनव्वर किया। मैंने जो बेदारी जमाअत बुर्कीना फासो के अफ़राद में देखी है वह हैरत-अंगेज़ है। उम्मीद है अगले दो तीन वर्षों में इस दौरे के अज़ीमुश्शान नतायज ज़ाहिर हों। गयावर जमाअत तेज़ी से तरक़्क़ी करेगी। इन शा अल्लाह

(T. 9653 /1. 5. 2004)

हज़रत अमीरुल मोमनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के बाबरकत दौरा के बाद जमाअत अहमदिया बुर्कीना फासो प्रगति के एक नए दौर में दाख़िल हुई। इस ज़िमन में इख़्तेसार के साथ बुर्कीना फासो में जमाअत अहमदिया पर होने वाले अफ़ज़ाल और बरकात का तज़करः किया जा रहा है। यह सारी बरकतें ख़िलाफ़त अहमदिया की शफ़क़तों, राहनुमाई और दुआओं की बदौलत हैं जिन्हों ने अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को कशीद करके इस दूर दराज़ सहराई देश की हालत बदल कर रख दी है। इस सरज़मीन पर ख़ुदाए वहिदा लाशरीक की इबादत का हक़ अदा करने वाले हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सलल्लाहों अलैहि वस्लम के दीवाने और हज़रत-ए-अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के प्रेमी पैदा हो रहे हैं। यह मु ख़लसीन हर क़ुर्बानी के लिए तैयार हैं और प्रतिदिन इख़्लास-ओ-वफ़ा में बढ़ते चले जा रहे हैं।

मसाजिद, मिशन हाऊसज़ का निर्माण और जमातों की संख्या

बुर्कीना फासो में हर साल मसाजिद और मिशन हाऊसज़ की तामीर का काम है। 2004 के बाद इस काम में ग़ैरमामूली तेज़ी आई। उस वक़्त तमाम रीजनज़ में जमाअत मौजूद हैं। साल 2022 तक मजमूई तौर पर बुर्कीना फासो में जमाअत की 493 मसाजिद हैं जब कि 132 मिशन हाऊसज़ बन चुके हैं जब कि 132 मिशन हाऊसज़ बन चुके हैं। बुर्कीना फासो में 741 जमाअतें क़ायम हो चुकी हैं।

बुस्तान-ए-मह्दी

जमात अहमदिया बुर्कीना फासो पर अल्लाह तआला के बेशुमार अफ़ज़ाल में से एक फ़ज़्ल "बुस्ताने मह्दी" की सूरत में भी है। बुस्ताने मह्दी और वागो दो शहर में 37.5 एकड़ रकबा पर मुश्तमिल जमात की मिल्कियती ज़मीन है। यह रकबा वागादो गो से गाना की तरफ़ जाने वाली शाहराह पर वाक़्य है।

इसी रास्ते से 2004 में सय्यदना हज़रत अमीरूल मोमेनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ गाना से बुर्कीना फासो तशरीफ़ लाए थे। नैशनल हाईवे पर बुस्तान-ए-मह्दी का ख़ूबसूरत बोर्ड आवेज़ां है जो हर गुज़रने वाले को मह्दी दौरां की जमाअत के क़ियाम और प्रगति के संग-ए-मील की नवीद सुनाता है। बुस्ताने मह्दी में जामेयतुल मुबाशशेरीन वाक़्य है। छोटी सी साफ़ सुथरी मस्जिद है जिसके मीनार सड़क से नज़र आते हैं। दीगर तामीरात में मसरूर आई हस्पताल, रिहायश गाहें , गेस्ट हाऊस और हियूमेनिटी फ़रस्ट का कॉलेज इत्यादि शामिल हैं। जमात अहमदिया बुर्कीना फासो की जलसा-ए-गाह भी यहीं पर वाक़्य है।

जलसा सालाना

बुर्कीना फासो में जलसा सालाना का निज़ाम मज़बूती से क़ायम हो चुका है और 1990 में पहले जलसा सालाना से लेकर हर साल इस में जमाअत के क़दम तरक़्क़ी की तरफ़ उठ रहे हैं। चंद एक वर्षों के इलावा हर साल बाक़ायदगी के साथ जलसा मुनाक़िद हो रहा है। 2016 से बुस्तान मह्दी में जलसा गाह बनादी गई है। पुख़्ता स्टेज, जलसा के स्टोरज़ और मेहमानों की सहूलत के लिए सनानघर बन चुकेहैं। साल 2022 में तीसवां जलसा सालाना आयोजित हुआ जिस में दस हज़ार से ज़ायद उश्शाक ने शिरकत की। तक़रीबन हर साल मर्कज़ी मेहमान जलसा सालाना बुर्कीना फासो में शामिल होते हैं। साल 2022 के मर्कज़ी मेहमान श्रीमान मुहम्मद शरीफ़ ओदा साहिब थे।

मज्लिस-ए-शूरा

निज़ाम मज्लिस-ए-शूरा एक बुनियादी निज़ाम की हैसियत रखता है। बुर्कीना फासो में पहले जलसा सालाना के साथ ही 1990 में मज्लिस-ए-शूरा का आग़ाज़ हो गया था। हर साल इस निज़ाम में बेहतरी आ रही है। जून 2022 में बुर्कीना फासो की 32वीं मज्लिस-ए-शूरा अपनी ख़ूबसूरत रिवायत के साथ सैंटर्ल हाऊस सौ मगांदे की मस्जिद बैतुल महदी में मुनाक़िद हुई।

अहमदियत का पहला रेडीयो स्टेशन

अलहमदो लिल्लाह दिसंबर 2002 से अहमदियत का पहला रेडीयो स्टेशन बूबू जलासो बुर्कीना फासो में शुरू हुआ। और आज तक ख़िलाफ़त अहमदिया की आवाज़ बन कर ख़िदमत-ए-इस्लाम में व्यस्त है। 2004 में सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमनीन ख़लीफ़ा ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ यहां तशरीफ़ लाए तो आपने रेडीयो अहमदिया का मुआइना भी फ़रमाया। इस अवसर पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने निमंलिखित पैग़ाम दिया जो live नशर हुआ।

"रेडीयो इस्लामिक अहमदिया के सुनने वालों को अस्सलामो अलैकुम वरहमतुलाह। अल्लाह तआला आप सबको अपनी हिफ़ाज़त में रखे।"

(अल्-फ़ज़्ल इंटरनैशनल 16 अप्रैल 2004)

इसके बाद बुर्कीना फासो में मज़ीद रेडीयो स्टेशन क़ायम हुए। इन रेडीयो के नाम के विषय में सय्यदना हज़रत अमीरूल मोमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस ने फ़रमाया कि "रेडीयो इस्लामिक अहमदिया ही हर जगह नाम रखें।" (t.10353 तिथि 7 जुलाई 2007)

इस वक़्त यहां चार रेडीयो इस्लामिक अहमदिया चल रहे हैं। यह रेडीयोज़ डोरी, लियो, दोगो और बूबू राज्य सौ में वाक़्य हैं जबकि 33 मुतफ़र्रिक़ प्राईवेट रेडीयोज़ पर जमाअत का पैग़ाम मुख़्तलिफ़ ज़बानों में दिन रात नशर हो रहा है। जलसा सालाना और अहम अवसरों पर एम.टी. ए की नशरियात, हुज़ूर के खुतबात् सीधे प्रसारित करने का एज़ाज़ भी अहमदिया रेडीयोज़ को हासिल है। जलसा सालाना बुर्कीना फासो के अवसर पर रेडीयो जलसा नसब किया जाता है इसके द्वारा समस्त अहमदिया रेडीयोज़ को लिंक कर के जलसा की तमाम कार्रवाई सीधे पूरे देश में नशर की जाती है।

सेहत के मैदान में ख़िदमात

(अहमदिया हस्पताल वागा दोगो)

1997 ई. में किराए के मकान में, हुस्न नीयत और ख़िदमत-ए-ख़लक़ के जज़्बा के तहत, एक इबतेदाई डिसपेंसरी से शुरू की जाने वाला सफ़र अब हस्पताल की शक्ल में हमारे सामने है। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से 2004 ई. से यह हस्पताल जमाअत की मिल्कियती ज़मीन और सैंटर्ल मिशन हाऊस में वाक़्य है। 2004 ई. में बुर्कीना फासो के दौरे के दौरान में हज़रत अमीरूल मोमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अहमदिया हस्पताल तशरीफ़ लाए और उद्घाटन फ़रमाया।

2021 ई. में हस्पताल की कारकर्दगी

केवल वर्ष 2021 ई. में हस्पताल की कारकर्दगी का मुख़्तसर जायज़ा इस बात का अंदाज़ा लगाने के लिए काफ़ी है कि यह हस्पताल किस क़दर ख़िदमत-ए-ख़लक़ के मैदान में आगे से आगे बढ़ रहा है। इस वक़्त 9 डाक्टरज़, 16 नर्सिंग स्टाफ़, 13 मैटरनिटी में काम करने वाले कारकुन, फार्मेसी में काम करने वाले और लेबारटरी टेक्नीशन भी बड़ी संख्या में हैं। तथा 44 विज़िटिंग डाक्टरज़ शामिल हैं। शोबा गाइनी में कुल 20772 मरीज़ों को ईलाज मुआलिजा की सहूलत फ़राहम की गई। डीलिवरी के

1273 केसिज़ हुए 106 कैंसर में बड़ा ऑप्रेशन किया गया। 1950 हामिला महिलाओं को वैक्सिन लगाई गई। 4161 नौ मौलूद बच्चों को वैक्सिन लगाई गई। दौरान साल कुल तेहत्तर हज़ार तीन सद पचासी मरीज़ों का ईलाज किया गया।

(कोरोना वैक्सीन सैंटर)

सम्पूर्ण देश में सिर्फ पाँच हस्पतालों को हुकूमत की तरफ़ से कोरोना वैक्सीन सैंटर बनाया गया। इन पाँच में से एक अहमदिया हस्पताल भी शामिल था बाक़ी चार ईसाई चर्च के हस्पताल थे।

(रक्त दान)

हर साल बुर्कीना फासो के तक़रीबन तमाम रीजनज़ में अतयात ख़ून के प्रोग्रामज़ मुनाक़िद होते हैं। आम तौर पर मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया इस अहम ख़िदमत में पेश पेश है। इस मैदान में जमात अहमदिया बुर्कीना फासो की नेक-नामी इस क़दर है कि कम-ओ-बेश हर साल मुख़्तलिफ़ हस्पतालों की तरफ़ से ज़रूरत के वक़्त जमाअत अहमदिया से अतीया ख़ून के लिए राबता किया जाता है। हर साल पाँच सद के क़रीब ख़ून के बैगज़ अतीया किए जाते हैं।

(आँखों के ऑप्रेशन)

2005 के आख़िर में श्रीमान महमूद नासिर साक़िब साहिब अमीर जमाअत बुर्कीना फासो ने सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत में बुर्कीना फासो में आँखों के पच्चास ऑप्रेशन बतौर सदक़ा करने की इजाज़त तलब की। इस पर हुज़ूर अनवर ने पच्चास के बजाय एक सौ ऑप्रेशन करने की इजाज़त अता फ़रमाई। अप्रैल 2006 तक एक सद ऑप्रेशन मुकम्मल होने के बाद फिर एक सौ की मज़ीद दरख़ास्त की गई जो मंज़ूर हुई। इसके बाद जलसा सालाना बर्तानिया के अवसर पर दफ़्तरी मुलाक़ात में सय्यदना हुज़ूर अनवर ने श्रीमान अमीर साहिब को हिदायत फ़रमाई कि ऑप्रेशन करते चले जाएं। इसके बाद से मुसलसल यह मुहिम जारी है और इस वक़्त तक पंद्रह हज़ार के क़रीब आँखों के मुफ़्त ऑप्रेशन किए जा चुके हैं।

(मसरूर आई इंस्टीटियूट)

आँखों के एक सौ मुफ़्त ऑप्रेशन करने से शुरु होने वाले सदक़ा जारीया में अल्लाह तआला ने इस क़दर बरकत अता फ़रमाई कि आँखों के बड़े हस्पताल के निर्माण की बातें होने लगीं। यह तजवीज़ सय्यदना हज़रत अमीरूल मोमनीन ने दी और उसे बुर्कीना फासो में तामीर करने की मंज़ूरी अता फ़रमाई और उसकी तामीर की ज़िम्मेदारी मज्लिस अंसारुल्लाह यू.के के हुई 2017 में इस मंसूबे का संग-ए-बुनियाद बुस्ताने मह्दी में रखा गया। मसरूर आई इंस्टीटियूट के नाम से तामीर किया जाने वाला यह हस्पताल इलाक़े भर में अपनी नौईयत का मुनफ़रद आई हस्पताल है और जदीद तरीन सहूलयात से परिपूर्ण है। बुस्ताने मह्दी में सवा तीन एकड़ रकबा इस हस्पताल के लिए मख़सूस किया गया और इस पर हस्पताल की ख़ूबसूरत इमारत तामीर की गई है।

हियूमेनिटी फ़रस्ट की ख़िदमात

बूर्कीना फासो में दहशतगर्दी की वजह से लाखों अफ़राद बे-घर हो कर हुकूमत और इमदादी इदारों के रहम-ओ-करम पर हैं। इन अफ़राद की मदद के लिए हियूमेनिटी फ़रस्ट बुर्कीना फासो कई एक प्रोग्राम बना चुकी है जिनमें ख़ुशक राशन पहुंचाना, खाना तैयार करके तक़सीम करना, कपड़े तक़सीम करना और ज़रूरत की दीगर इश्याय उन अफ़राद तक पहुंचाना शामिल है। सिर्फ दो वर्षों में कई टन अश्या खाने पीने और दीगर सामान उन अफ़राद तक पहुंचाया जा चुका है।

हियूमेनिटी फ़रस्ट सिलाई सैंटर वागा दोगो

बुर्कीना फासो के दारुल हकूमत वागा दोगो में हियूमेनिटी फ़रस्ट के तहत 2002 से सिलाई सैंटर क़ायम है। सारा साल इस सैंटर के तहत क्लासिज़ जारी रहती हैं। सैकड़ों तलबा और तालिबात इस सिलाई सैंटर से पेशावराना सिलाई का काम सीख कर बरसर-ए- रोज़गार हो चुके हैं। 2004 में हुज़ूर अनवर के दौरे के दौरान में हज़रत बेगम साहिबा वागा दोगो में पच्चास जबकि बूबू जलासो में दस मुस्तहिक़ ज़रूरतमंद ख़वातीन को सिलाई मशीनें भेंट कीं।

हियूमेनिटी फ़रस्ट का सिलाई सैंटर न सिर्फ कामयाबी से चल रहा है बल्कि तरक़्क़ी की तरफ़ गामज़न है covid-19 के दिनों में हर तरफ़ फेस मास्क की कमी हो गई जिन लोगों के पास कुछ स्टाक पड़ा था वह उसे मुँह-माँगे दामों फ़रोख़्त करने लगे। ऐसे में हियूमेनिटी फ़रस्ट ने अपने सिलाई सैंटर में फेस मास्क बनाने का काम शुरू किया और लोगों में फ़्री तक़सीम करने शुरू किए।

सैंटर के उम्दा काम मयारी पैकिंग को देखते हुए बाअज़ इदारों और फ़लाही तन्ज़ीमों ने फेस मास्क बनाने के आर्डर को दिए। सिलाई सैंटरज़ के कारकुनान ने दिन रात मेहनत कर के हज़ारों ख़ूबसूरत फेस मास्क बनाए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु ने 2004 हियूमेनिटी फ़रस्ट के कामों का जायज़ा लेने के बाद हियूमेनिटी सैंटर की वज़ीटर बुक में लिखा :

"माशा अल्लाह हियूमेनिटी फ़रस्ट के द्वारा से अच्छा काम हो रहा है। अल्लाह तआला हमेशा पहले से बढ़कर इन्सानियत की ख़िदमत की तौफ़ीक़ दे। आमीन"

इंटरनैशनल एसोसीएशन आफ़ अहमदी आर्कीटेक्टस इंजीनीयर्ज़ IAAAE

इस तंज़ीम के द्वारा बुर्कीना फासो में ख़िदमत-ए-ख़लक़ के कई एक मंसूबे चल रहे हैं। बुर्कीना फासो के दिहात में पीने के साफ़ पानी का हुसूल एक मुश्किल और कष्ट देने वाला कार्य है। वाटर फ़ार लाईफ़ प्रोग्राम के अधीन दूर दराज़ दिहात में पानी की सहूलत मुहय्या करने के लिए नियमीत नलके ठीक करने और बोर होल करके पीने का साफ़ पानी मुहय्या करने की इस तंज़ीम की तरफ़ से कोशिश जारी है।

(मॉडल विलेज)

इसी तंज़ीम के तहत मॉडल विलेज भी बनाए जा रहे हैं। इस प्रोग्राम के तहत किसी दूर दराज़ गांव को मुंतख़ब करके इस में सोलर सिस्टम के द्वारा पीने के साफ़ पानी, हर घर में बिजली, गलियों और रास्तों में बिजली मस्जिद और इबादत गांव में बिजली की सहूलत के इलावा गांव की तरक़्क़ी के अन्य छोटे-छोटे प्रोग्राम बनाए जाते हैं। मॉडल विलेज प्राजैक्ट गांव के घरों की ज़िंदगी बदल कर रख देता है।

बुर्कीना फासो में डोरी के रीजन में मह्दी गांव IAAAE का पहला मॉडल विलेज प्राजैक्ट था। इसके बाद दो मज़ीद मॉडल "सी एन ए" और "मवारापीती" में बनाए जा चुके हैं। चौथा मॉडल विलेज बनफ़ूर के रीजन के गांव "लेती फासो" को बनाने की तैयारी हो रही है।

शिक्षा के मैदान में सेवाएँ

30 मार्च 2004 को सय्यदना हज़रत अमीरूल मोमेनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के दस्त मुबारक से डोरी में पहले अहमदिया प्राइमरी स्कूल की नीव रखी गई। इसके बाद इस मैदान में जमाअत अहमदिया बुर्कीना फासो ने मज़ीद तरक़्क़ी की और अब 2022 तक निमंलिखित स्कूल और तालीमी इदारे न सिर्फ क़ायम हो चुके हैं बल्कि सैंकड़ों बच्चों को ज़ेवर तालीम से आरास्ता करने में कोशां हैं।

इस वक़्त पाँच अहमदिया प्राइमरी स्कूल डोरी, काया, लियो, बानफ़ूरा, तेंकोदो मे स्थित हैं जबकि कदगो, ददगो और बुस्तान-ए- मह्दी में कॉलेज चल रहे हैं। बानफ़ूरा में एक कॉलेज ज़र-ए-तामीर है।

ऐवान-ए-मसरूर

मर्कज़ी मिशन हाऊस सोमगांदे में मज्लिस अंसारुल्लाह यू.के की तरफ़ से ऐवान मसरूर तामीर किया गया है। ऐवान मसरूर का यह मल्टी

परपज़ हाल है। जो मुख़्तलिफ़ तक़रीबात और खेल के मुक़ाबलाजात के लिए प्रयोग होता है। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से बुर्कीना फासो में अहमदिया बैडमिंटन कलब रजिस्टर हो चुका है। इस कलब के तहत ऐवान मसरूर में बैडमिंटन के नैशनल सतह के मुक़ाबला जात आयोजित होते हैं।

जामेअतुल मुबशरीन बुर्कीना फासो

फ्रैंच देशों के लिए अपनी नौईयत का जामा 2017 में बुर्कीना फासो में क़ायम हुआ। यह मुकम्मल फ्रैंच मीडियम जामिआ है। सय्यदना हज़रत अमीरूल मोमेनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ग़ैरमामूली शफ़क़त और राहनुमाई से इस जामिआ को यह मुनफ़रद एज़ाज़ हासिल है कि फ्रैंच देशों और फ्रैंच क़ौमों ले लिए यह पहला और वाहिद जामिआ है। आरंभ में सिर्फ तीन कमरे तामीर करके जामिआ का आग़ाज़ कर दिया गया। अलहमदु लिल्लाह पहले साल ही जामेंआ बुर्कीना फासो में चार फ्रैंच देशों की नुमाइंदगी होगी और पहली क्लास फ़ारिग़-उत-तहसील हुई। अब तक तीन क्लासेज़ इस जामिआ से फ़ारिग़-उत-तहसील हो कर मैदान-ए-अमल में जा चुकी हैं । इन तीन वर्षों में बुर्कीना फासो, नाईजेरिया, बेनिन, माली, कोंगो कंशासा और कोंगो बराज़वेल से ताल्लुक़ वाले 49 मुबल्लेग़ीन इस जामिआ से पास हो चुके हैं। इस वक़्त नौ फ्रैंच देशों के आठ विद्यार्थी ज़ेर-ए-ताअलीम हैं।

सय्यदना हज़रत अमीरूल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने पहली तक़रीब अस्नाद के अवसर पर बतौर-ए-ख़ास अपना पैग़ाम भिजवाया इस में जामेअतुल मुबशरीन बुर्कीना फासो के विषय में एक फ़िक़रा यह भी इरशाद फ़रमाया

this will be great source pride not only for the members of the jamaat in french - speaking countries but for everyone in the whole world of ahmadiyyat.

अल्लाह तआला जामेअतुल मुबशरीन बुर्कीना फासो को ख़िलाफ़त की मंशा के मुताबिक़ बनादे कि समस्त संसार के अहमदियों को इस पर गर्व हो।

प्रिंटिंग प्रैस अहमदिया वागा दोगो

बुर्कीना फासो में 2008 से प्रिंटिंग प्रैस क़ायम है। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से यह प्रैस तब्लीग़ के मैदान में कुतुब और लिटरेचर मुहय्या करने में सहायक है।

ज़ेली तंज़ी में 1990 वह वर्ष है जब बुर्कीना फासो में ज़ेली तन्ज़ीमों के क़ियाम के लिए कोशिश की जा रही थी। जुलाई 1990 में ज़ेली तन्ज़ीमों के क़ियाम और उनके सदूर के इंतेख़ाब के हवाले से श्रीमान अमीर साहिब बुर्कीना फासो के एक ख़त के उत्तर में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह तालाने फ़रमाया : "सब से प्रथम पोस्टिंग करके मजालिस को तरतीब दें इंतेख़ाब की मंज़िल बाद में आएगी।}

(तारीख़-ए-अहमदियत बुर्कीना फासो, फाईल 1990)

अलहमदो लिल्लाह बुर्कीना फासो में तीनों ज़ेली तंज़ीमें अब इस मंज़िल तक पहुंच चुकी हैं और अब इन तन्ज़ीमों की मजालिस शूरा मुनाक़िद होती हैं जिन में यह अपने अपने सदूर को मुंतख़ब करती हैं।

(मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया)

बुर्कीना फासो में मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया दिन-ब-दिन मज़बूती होती चली जा रही है। तंज़ीमी ढांचा तमाम रीजनज़ में क़ायम हो चुका है। क़ायद मजलिस और इलाक़ाजात अपनी मजालिस और अपने अपने इलाक़ा में ख़ुद्दाम की बहबूद के लिए कोशां रहते हैं। रीजनल इजतेमा मुनाक़िद होते हैं।

(फ़ज़ल-ए-उम्र तर्बीयती क्लास)

ख़ुद्दाम और अतफ़ाल की तर्बीयत के लिए हर साल गरमियों की छुट्टीयों में मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया के फ़ज़ल-ए-उम्र तर्बीयत क्लास मुनाक़िद की जाती है। यह प्रोग्राम कामयाबी से जारी है। यह किलास जामेआ में दाख़िला के लिए भिजवाने जाने वाले उम्मीदवारों की इबतिदाई तर्बीयत और उनको वक़्फ़ के लिए तैयार करने का एक बड़ा मार्ग है।

(लजना इमाइल्लाह मग़रिबी अफ़्रीक़ा का रीफ़रेशर कोर्स)

2019 के अंत पर लजना इमाइल्लाह मर्कज़ की तरफ़ से सय्यदना हज़रत अमीरूल मोमेनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की मंज़ूरी से मग़रिबी अफ़्रीक़ा की लजना इमाइल्लाह की ओहदेदारान का रीफ़रेशर कोर्स रखा गया। हुज़ूर अनवर ने इस रीफ़रेशर कोर्स की मेज़बानी का अवसर बुर्कीना फासो को अता फ़रमाया। इस रीफ़रेशर कोर्स में मेज़बान बुर्कीना फासो समेत 6 देशों माली, बेनिन, नाईजर, मराको और अल्जीरिया की मुल्की आमिला लजना इमाइल्लाह की मेम्बरात पर मुश्तमिल वफ़ूद ने शिरकत की। मर्कज़ की तरफ़ से इंचार्ज मर्कज़ी डैसक लजना इमाइल्लाह (यू. के) ने इस प्रोग्राम में शिरकत की। इस रीफ़रेशर कोर्स में मजमूई तौर पर 6 देशों की 31 मुम्बरात ने हिस्सा लिया।

अज़्म-ओ-हौसले की दास्तान

ख़िलाफ़त जुबली के साल 2008 में गाना में सय्यदना हज़रत अमीरूल मोमनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की तशरीफ़ आवरी का ऐलान हुआ तो जमात अहमदिया बुर्कीना फासो के ख़ुद्दाम ने जमाती रिवायत को ज़िंदा करते हुए मुनफ़रद अंदाज़ में गाना के जलसे में शमूलीयत इख़्तेयार करने का फ़ैसला किया। इस के लिए मुख़्तलिफ़ रीजनज़ से ख़ुद्दाम को इकट्ठा किया गया और तीन सद ख़ुद्दाम का एक वफ़्द बुर्कीना फासो से साईकलों पर गाना के ख़िलाफ़त जुबली जलसे में शिरकत के लिए रवाना हुआ। यह एक बहुत मुश्किल सफ़र था। जिसके लिए हिम्मत और जुर्रत दरकार थी। साईकलों की हालत ऐसी नहीं थी कि इतने लंबे सफ़र पर ले जाई जा सकें लेकिन साइकिलों की ना-गुफ़्ता हालत ख़ुद्दाम के जोश और जज़्बे के आगे दीवार न बन सकी और यह ख़ुद्दाम अफ़्रीक़ा बल्कि अक़्वाम आलम में एक मिसाल बन कर उभरे। जब यह क़ाफ़िला मख़्सूस शर्ट्स पहने मुहब्बत का पैग़ाम देते गुज़रता तो लोगों की तवज्जा अपनी तरफ़ खींचता है। दोनों मुल्कों के मीडीया ने इस ईवंट को भरपूर कवरेज दी। और जलसा गाना के कई रोज़ बाद भी यह ख़बर मीडीया में रही।

सय्यदना हज़रत ख़लीफ़ा ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मुहब्बत के साथ इस वाक़्य का वर्णन अपने ख़ुतबा जुमा अगस्त 2008 मे फ़रमाया है। हुज़ूर फ़रमाते हैं।

"इस दफ़ा जलसा की एक रौनक और मीडीया में मशहूरी की वजह जर्मनी से आए हुए साईकल सवार भी थे। ये 100 नौजवान साईकल सवारों का ग्रुप था। ये भी इख़लास-ओ-वफ़ा का एक इज़्हार है इस मुआशरे के रहने वाले नौजवानों के दिल में है और ख़िलाफ़त अहमदिया से एक ताल्लुक़ है कि ख़िलाफ़त के 100 साल पूरे होने पर उन्हों के 100 साईकल सवारों का ग्रुप तैयार किया .. अमीर साहिब जर्मनी गो कि अपने साईकल सवारों को बड़ा प्रोटेक्ट (protect) कर रहे थे कि हमारी सड़कों पर रिश बड़ा होता है, इस लिहाज़ से उनका बड़ा कारनामा है। लेकिन बुर्कीना फासो के इन अफ़्रीकन नौजवानों का भी बड़ा कारनामा है कि वहां उनकी सड़कें भी टूटी हुई थीं और साईकल भी टूटे हुए थे बल्कि वहां के अख़बारों ने ख़बर

लगाई कि क्या ये टूटे हुए साईकल अपनी मंज़िल तक पहुंच सकेंगे। फिर बेचारों को ख़ुराक की आसानी भी पूरी तरह मयस्सर नहीं थीं। फिर गर्मी भी बे-इंतिहा थी। तो ये सारी चीज़ें अगर देखें तो उन लड़कों ने बड़ी हिम्मत की है। बहरहाल अगर दुनिया का मुक़ाबला करना है तो ख़िलाफ़त जुबली के जलसों में साईकल सवारों की शमूलीयत के लिहाज़ से नंबर एक बूकिना फासो के ख़ुद्दाम हैं।

(ख़ुतबा जुमा यक्म अगस्त 2008 ख़ुतबात मसरूर जल्द 6 पृष्ठ 312)

खाना नहीं भी मिला तो पर्वा नहीं

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने ख़ुतबा जुमा 29 मई 2020 में फ़रमाया

गाना का 2008 में दौरा था बुर्कीना फासो से भी लोग वहां आए हुए थे। दूसरे पड़ोसी देशों से आए हुए थे। मुझे पता लगा कि बुर्कीना फासो से क़ाफ़िला आया हुआ है बहुत बड़ा था उनमें कुछ लोगों को खाना नहीं मिला, तीन हज़ार के क़रीब उनकी संख्या थी। सबसे बड़ी संख्या उन्ही की थी जो वहां गई थी। तीन सौ ख़ुद्दाम साईकलों पर भी सोला सौ किलो मीटर का सफ़र करके वहां आए हुए थे। बहर हाल वहां के एक मुबल्लिग़ को मैंने कहा उनको खाना नहीं मिला उनसे क्षमा मांगे और भविष्य मेँ आप लोगों ने उनका ख़्याल भी रखना है। जब उन्होंने उनको क्षमा का पैग़ाम पहुंचाया तो उन्होंने उत्तर दिया कि हम जिस उद्देश्य के लिए आए थे वह हमने हासिल कर लिया। खाने का क्या है वह तो रोज़ खाते हैं। अब ये ग़रीब लोग बेचारे रोज़ भी क्या खाते होंगे। उन्होंने कहा जो खाना हम इस वक़्त खा रहे हैं, रुहानी फ़ायदा उठा रहे हैं वह रोज़-रोज़ कहाँ मिलता है।

बुर्कीना फासो की जमाअत अब भी इतनी पुरानी नहीं है। जब मैं दौरे पर गया हूँ तो उस वक़्त मेरा ख़्याल है दस पंद्रह साल पुरानी थी। अब तीस साल पुरानी हो गई होगी लेकिन ये लोग इख़लास-ओ-वफ़ा और मुहब्बत में तरक़्क़ी करते चले जा रहे हैं। ग़ुर्बत का यह हाल है कि कुछ लोग एक जोड़ा जो कपड़े पहन कर आए थे वही कपड़े उनके पास थे। इसी में तीन चार दिन या हफ़्ता गुज़ारा और फिर सफ़र भी किया। पैसे जोड़-जोड़ कर जलसे पर पहुंचे थे कि ख़िलाफ़त जुबली का जलसा है और ख़लीफ़ा वक़्त की मौजूदगी में हो रहा है इस लिए हमने इस में ज़रूर शामिल होना है। अतः ऐसी मुहब्बत ख़ुदा तआला के इलावा और कौन पैदा कर सकता है।

(ख़ुतबा जुमा फ़र्मूदा 29 मई 2020ई. अल्-फ़ज़ल इंटरनैशनल 19 जून 2020)

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष

अहाता में होगा। जब अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को यह महान भविष्यवाणी अता फ़रमाई थी अर्थात "मैं तेरी तब्लीग़ को ज़मीन के किनारों तक पहुंचाऊंगा" वह साल 1898 ई. का था जबकि जमाअत की संख्या केवल दस हज़ार थी। और आज करोड़ों में पहुंच चुकी है अल्हम्दो लिल्लाह। अंजुमन हिमायत इस्लाम लाहौर के इस इल्ज़ाम के उत्तर में कि जमाअत की संख्या केवल तीन सौ अठारह है हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी किताब "अल् बलाग़" जो 1898 ई. की लेखनी है में फ़रमाते हैं :

"यह कहना कि मिर्ज़ा साहिब अपने मानने वालों की संख्या तीन सौ अठारह से ज़्यादा नहीं बता सके यह किस क़दर हक़ पोशी है। यह संख्या तो केवल उन लोगों की लिखी गई थी जो सरसरी तौर पर उस वक़्त ख़्याल में आए न यह कि दरहक़ीक़त यही संख्या थी और इसी पर निर्भरता रखी गई थी बल्कि हमने अपने एक मज़मून में साफ़ तौर पर प्रकाशित भी कर दिया था कि अब संख्या हमारी जमाअत की आठ हज़ार से कम नहीं होगी। लेकिन यह एक मुद्दत की बात है और इस वक़्त तो बड़े यक़ीन से कह सकते हैं कि दो हज़ार और बढ़ गए हैं और हमारी जमाअत इस वक़्त दस हज़ार से कम नहीं है जो पेशावर से लेकर बंबई कलकत्ता कराची हैदराबाद दक्कन मद्रास मुल्क आसाम बुख़ारा गज़नी मक्का मदीना और बिलाद-ए-शाम तक फैली हुई है और प्रत्येक साल में कम से कम तीन चार-सौ आदमी हमारी जमाअत में प्रतिदिन बैअत कुनुन्दगान में दाख़िल होते हैं। अगर कोई दस दिन भी क़ादियान आकर ठहरे तो उसे मालूम हो जाएगा कि किस क़दर तेज़ी से ख़ुदा तआला का फ़ज़ल लोगों को हमारी तरफ़ खींच रहा है। अँधों और नाबीनाओं को क्या ख़बर है कि किस अज़मत की हद तक यह सिलसिला पहुंच गया है और कैसे तालिब हक़ लोग يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا के मिस्दाक़ हो रहे हैं।"

(अल् ब्लाग़ फ़रयाद-ए-दर्द, रूहानी ख़ज़ायन भाग 13, पृष्ठ : 422)

और आज अल्लाह के फ़ज़ल से प्रत्येक साल लाखों की संख्या में लोग जमाअत में दाख़िल हो चुके हैं इसलिए 2019 में बैअत करके जमाअत में शामिल होने वालों की संख्या 6 लाख 68 हज़ार 527 थी। सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने अंतिम ख़िताब जलसा सालाना जर्मनी 7 जून 2015 में फ़रमाते हैं :

अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से पिछले वर्षों की सम्बन्ध में यहां भी (अर्थात जर्मनी में -उद्धरित) और दुनिया के हर मुल्क में भी यह प्रचलन चला है कि परिचय बढ़े हैं और लोग अहमदियत के क़रीब हो रहे हैं। बड़े पैमाने पर अहमदियत को जाना जाता है। और मुल्कों के बड़े-बड़े शहरों में अहमदियत को अब लोग जानने लग गए हैं। और इस में मुस्लमान और ग़ैर मुस्लिम सब शामिल हैं।

(अंतिम ख़िताब जलसा सालाना जर्मनी 7 जून : 2015)

और आज जमाअत का परिचय दुनिया में निसंदेह इस से बहुत ज़्यादा बढ़ चुका है जो आठ साल पूर्व था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ को अब दुनिया के बड़े-बड़े तरक़्क़ी याफ़ताह मुल्कों में ज़बरदस्त प्रसिद्धि हासिल हो रही है।

कहाँ वह वक़्त कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आपका गाँव अप्रसिद्ध गुमनामी में था और कहाँ यह वक़्त कि पूरी दुनिया में आपकी शौहरत और आपका डंका है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने 1882 ई. के कुछ इल्हामात जिन में अल्लाह तआला की ताईद-ओ-नुसरत का वादा था, का वर्णन करने के बाद फ़रमाते हैं :

यह उस ज़माना की भविष्यवाणी है जबकि मैं अप्रसिद्ध गुमनामी में छिपा हुआ था ... केवल एक اَحَدٌ مِّنَ النَّاس था और महिज़ गुमनाम था और एक फ़र्द भी मेरे साथ संबंध नहीं रखता था ... बाद इसके ख़ुदा तआला ने इस भविष्यवाणी के पूरा करने के लिए अपने बंदों को मेरी तरफ़ ध्यान दिलाया और फ़ौज दर फ़ौज लोग क़ादियान में आए और आ रहे हैं और नक़द और जिन्स और प्रत्येक किस्म के भेंटे इस कसरत से लोगों ने दिए और दे रहे हैं जिनका मैं शुमार नहीं कर सकता। (रुहानी खज़ायन भाग 22, हकीकतुल वह्यी, पृष्ठ : 261)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने मंज़ूम कलाम में फ़रमाते हैं:

* एक ज़माना था कि मेरा नाम भी मस्तूर था
क़ादियां भी थी निहां ऐसी कि गोया ज़ेर ग़ार
*कोई भी वाक़िफ़ न था मुझसे न मेरा मोतक़िद
लेकिन अब देखो कि चर्चा किस क़दर है हर किनार
*उस ज़माना में ख़ुदा ने दी थी शौहरत की ख़बर
जो कि अब पूरी हुई बाद अज़ मरूरे-ए-रोज़गार
*कौन दरपर्दा मुझे देता है हर मैदाँ में फ़तह
कौन है जो तुमको हर-दम कर रहा है शर्मसार
*तुम तो कहते थे कि यह नाबूद हो जाएगा जल्द
यह हमारे हाथ के नीचे है एक अदना शिकार
*बात फिर यह क्या हुई किस ने मेरी ताईद की
ख़ाइब-ओ-ख़ासिर रहे तुम, हो गया मैं कामगार

आने वाले मसीह के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नुज़ूल का शब्द प्रयोग फ़रमाया है। सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम नुज़ूल की व्याख्या करते हुए फ़रमाते हैं :

"और दूसरी वजह, मसीह मौऊद की समस्त मुल्कों में शौहरत का जल्द से जल्द तर वक़्त और ज़माने में ज़ाहिर हो जाना है क्योंकि जो चीज़ आसमान से नाज़िल होती है उसे हर दूर-ओ-नज़दीक और विभिन्न इलाकों और क्षेत्रों वाले देख लेते हैं और मुंसिफ़ों की नज़र में इस पर कोई पर्दा नहीं रहता और इस बिजली की तरह उसका मुशाहिदा कर लिया जाता है जो एक तरफ़ से दूसरी तरफ़ कूदती है और समस्त स्थानों पर दायरे की तरह मुहीत हो जाती है।"

(ख़ुतबा इल्-हामिया उर्दू अनुवाद पृष्ठ : 3)

अतः वह दिन भी अब दूर नहीं जब जमाअत समस्त संसार पर दायरे की तरह मुहीत हो जाएगी। इन शा अल्लाह। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जमाअत के पूरी दुनिया में ग़लबा के लिए तीन सदी का अरसा निर्धारित फ़रमाया है।

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"अभी तीसरी सदी आज के दिन से पूरी नहीं होगी कि ईसा के इंतेज़ार करने वाले क्या मुस्लमान और क्या ईसाई सख़्त न उम्मीद और बदज़न हो कर इस झूठे अक़ीदा को छोड़ेंगे और दुनिया में एक ही मज़हब होगा और एक ही पेशवा। मैं तो एक बीज डालने आया हूँ सो मेरे हाथ से वह तुख़्म बोया गया और अब वह बढ़ेगा और फूलेगा और कोई नहीं जो इसको रोक सके।"

(तज़करह तुस-शहादतैन,रुहानी ख़ज़ायन, भाग 20 पृष्ठ : 67)

तज़करह तुस-शहादतैन 1903 की लेखनी है। आज इस भविष्य-वाणी को एक सौ अठारह वर्ष पूरे चुके हैं। तीन सदी मुकम्मल होने में एक सौ बयासी वर्ष बाक़ी रह गए हैं। एक सौ बयासी साल के बाद पूरी दुनिया में जमाअत अहमदिया का ग़लबा होगा। लेकिन जिस रफ़्तार से अहमदियत दुनिया में फैल रही है और जिस रफ़्तार से उसकी शौहरत और मक़बूलियत में बढ़ोतरी हो रहा है हमें यक़ीन है कि इस से बहुत कम अरसा में अहमदियत दुनिया में ग़ालिब आजाएगी। इन शा अल्लाह। हे अल्लाह तू ऐसा ही कर। आमीन। सुम्मा आमीन।

وآخر دعوانا ان الحمد للہ رب العالمین۔

(मंसूर अहमद मसरूर)

★ ★ ★

पृष्ठ 2 का शेष

यह बात ज़ाहिर है कि ज़िंदा मज़हब वही मज़हब है जो आसमानी निशान साथ रखता हो और कामिल इमतेयाज़ का नूर उसके सिर पर चमकता हो, अतः वह इस्लाम है। क्या ईसाइयों में या सिक्खों में या हिंदूओं में कोई ऐसा है कि इस में मेरा मुक़ाबला कर सके? अतः मेरी सच्चाई के लिए यह काफ़ी हुज्जत है कि मेरे मुक़ाबिल पर किसी क़दम को क़रार नहीं। अब जिस तरह चाहो अपनी तसल्ली कर लो कि मेरे ज़हूर से वह भविष्यवाणी पूरी हो गई जो बराहीन-ए-अहमदिया में क़ुरआन की मंशा के अनुसार थी और वह यह है هُوَ الَّذِیۡۤ اَرۡسَلَ رَسُوۡلَہٗ بِالۡہُدٰی وَدِیۡنِ الۡحَقِّ لِیُظۡہِرَہٗ عَلَی الدِّیۡنِ کُلِّہٖ۔ (तिर्याक़ुल क़ुलूब, पृष्ठ : 54)

(तफ़सीर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, भाग सात, पृष्ठ 117 ऐडीशन 2004 ई. क़ादियान)

★ ★ ★

पृष्ठ 3 का शेष

और जमाअत अहमदिया जो रुहानी जंग लड़ रही है वह शैतान के मुक़ाबला में ही लड़ी जा रही है। इस जिन को इलाही लेखों में सच्चाई और झूठ की अंतिम जंग क़रार दिया गया है और इस में फ़तह हासिल कर लेने के बाद इस्लाम सारी दुनिया पर ग़ालिब आ जाएगा और अल्लाह तआला की तौहीद तमाम बनीनौ इन्सान में फैल जाएगी और दुनिया के तमाम मुल्क और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मुहब्बत से सरशार हो जाएँगी।

(ख़ुतबात-ए-नासिर, भाग 1 पृष्ठ 82)

सारी दुनिया में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का झंडा गाढ़ा जाएगा और दुश्मन इस्लाम की सारी खवाबें काम हो जाएंगी (हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल्-राबे रहमहुल्लाह तआला)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल्-राबे रहमहुल्लाह तआला फ़रमाते हैं :

"अतः वह जो हमें मिटाने के ख़ाहां हैं। ये उन लोगों की ख़्वाबें हैं जो कभी पूरी नहीं होंगी। वही ख़ाब पूरी होगी जो मेरे आक़ा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमकी ख़ाब थी, जो आपके आशिक़ कामिल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ख़ाब थी। सारी दुनिया पर आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का झंडा गाढ़ा जाएगा और दुश्मन इस्लाम की सारी ख़्वाबें नाकाम हो जाएँगी, पूरी नहीं होंगी, और ना-मुराद निकलेंगी और हर जगह हर बस्ती, हर क़र्या में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का झंडा गाढ़ा जाएगा। अर्थात वही झंडा जो दरहक़ीक़त हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का झंडा है समस्त इस्लाम के दुश्मनों की हर ख़ाब ना-मुराद हो जाएगी। (अल्-फ़ज़ल 9 जून 1983 ई.)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का झंडा पूरी आब-ओ-ताब के साथ दुनिया में लहराएगा (हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस

अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं :

"अतः आज दीन को जीवित करने के लिए इस्लाम की खोई हुई शान-ओ-शौकत वापस लाने के लिए, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दिफ़ा में खड़े होने के लिए, अल्लाह तआला ने जिस बहादुर को खड़ा किया है उसके पीछे चलने से और उसके दिए हुए बराहीन और दलायल से जो अल्लाह तआला ने उसे बताए हैं और उसकी तालीम पर अमल करने से इस्लाम और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का झंडा पूरी आब-ओ-ताब और पूरी शान-ओ-शौकत के साथ दुनिया में लहराएगा। इन शा अल्लाह। और लहराता चला जाएगा।"

(अल्-फ़ज़ल इंटरनैशनल 17 मार्च 2006 ई)

★ ★ ★

जलसा सालाना यू. के. 2022 ई. के अवसर पर
तिथि 5 अगस्त को हुज़ूर अनवर अहमदियत का झण्डा लहराते हुए

जलसा सालाना यू. के. 2022 ई. के अवसर पर तिथि 6 अगस्त को
दोपहर के बाद के इजलास से हुज़ूर अनवर ख़िताब फ़रमाते हुए

तिथि 21 अगस्त 2022 ई. को इस्लामाबाद यू. के. से एम.टी.ए इंटरनैशनल के द्वारा हुज़ूर अनवर जलसा सालाना जर्मनी के अंतिम
इजलास से ख़िताब और दुआ फ़रमाते हुए

तिथि 13 मार्च 2022 ई. को सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मैंबरान मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया
टेक्सास (अमरीका) से ऑनलाइन ख़िताब फ़रमाते हुए

तिथि 22 मई 2022 ई. को मजलिस-ए-शूरा
लंदन से हुज़ूर अनवर ख़िताब फ़रमाते हुए

The God Summit 2022
के लिए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़
अपना विशेष संदेश पढ़ते हुए

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553

The Weekly **BADAR** *Qadian*

Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA

POSTAL REG. No. GDP 45/2020-2022 | Vol .7 22 - 29 December 2022 issue no 51-52

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 600/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

Humanity First
Serving Mankind

هوالشافى
We Treat Allah Heal
NOOR HOSPITAL
نور ہسپتال
QADIAN
1917 - 2017
100 Years Celebration
Serving Humanity Since Hundred Years

TAHIR HEART INSTITUTE

IAAAE
INTERNATIONAL ASSOCIATION OF AHMADI ARCHITECTS & ENGINEERS

FOOD SECURITY

GIFT SIGHT

ORPHAN CARE

WATER FOR LIFE

GLOBAL HEALTH

DISASTER RELIEF

COMMUNITY CARE

KNOWLEDGE FOR LIFE

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान